रांची एवं डालटनगंज (मेदिनीनगर) से एक साथ प्रकाशित | अश्विन कृष्ण पक्ष 15, संवत 2081 | रांची, बुधवार, 02 अक्टूबर 2024, वर्ष-25, अंक- 240, पृष्ठ-16 ₹3.00 रजिस्ट्रेशन नं: BIHHIN/1999/155 | www.rastriyanaveenmail.com

सत्यमेव जयते

झारखण्ड सरकार GOVERNMENT OF JHARKHAND

आजादी का बिगुल फूंकने वाले
अमर शहीदों के झारखण्ड में

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

जी का हार्दिक अभिनंदन और जोहार

2 अक्टूबर, 2024

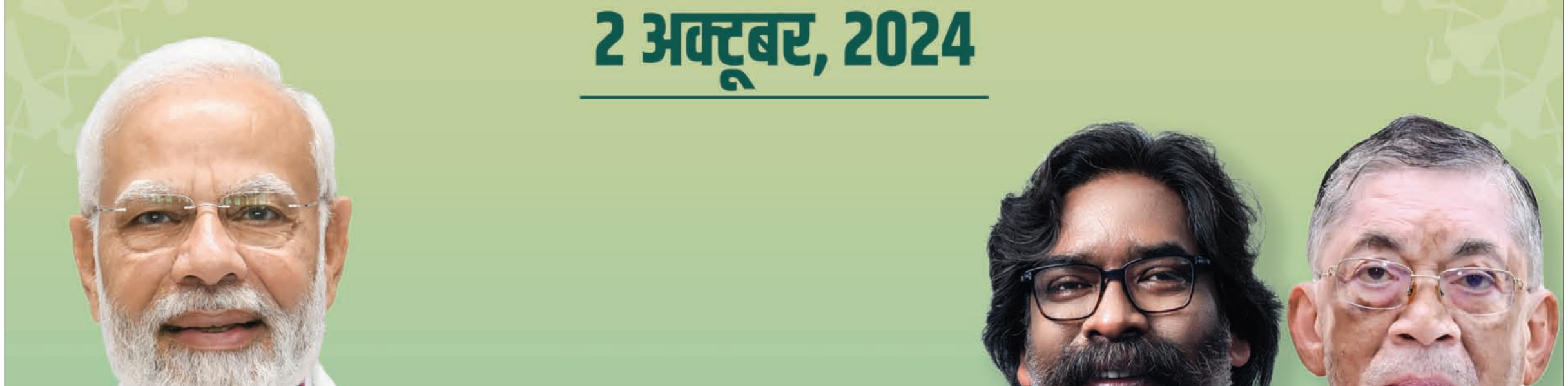

PR No. 337911 (IPRD) 2024-25

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, झारखण्ड सरकार

बुजुर्गों को पेंशन, महिलाओं को सम्मान और युवाओं को दे रहे हैं रोजगार : सीएम

हेमंत सोरेन ने 1240 करोड़ 57 लाख की लागत से 50 योजनाओं की दी सौगात

नवीन मेल संवाददाता

रांची/बोकारो। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने बोकारो जिले के चंदनक्यारी प्रखंड स्थित चंडीपुर में आयोजित कार्यक्रम में स्वास्थ्य, सड़क परिवहन और ऊर्जा के क्षेत्र में तीन बड़ी सौगात सहित 50 विकास योजनाओं का मंगलवार को ऑनलाइन उद्घाटन-शिलान्यास किया। मुख्यमंत्री ने यहां 500 बिस्तर की क्षमता वाले मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल की आधारशिला रखी। साथ ही तेनुघाट थर्मल पावर स्टेशन ललपनिया में 500 मेगावाट का सोलर पावर स्टेशन और रामगढ़ जिला के पतरातू में रेल ओवरब्रिज का ऑनलाइन शिलान्यास किया।

अपने हक और अधिकार के लिए विस्थापितों की पीढ़ी दर पीढ़ी करती है संघर्ष

गांवों को कर रहे समृद्ध, गरीबों को बढ़ा रहे आगे

लोगो को संबोधित करते हुए हेमंत ने कहा कि झारखंड अलग राज्य की लड़ाई इसलिए भी लड़ी गई थी कि यहां की आर्थिक गतिविधियों में आदिवासियों-मूलवासियों को रोजगार और अधिकार मिले लेकिन अलग राज्य गठन के 20 वर्षों तक यहां के आदिवासी-मूलवासियों को आर्थिक गतिविधियों से अलग रखने का कार्य किया जाता रहा। जब हमारी सरकार बनी तो हमने यहां के सभी सभी निजी संस्थानों में स्थानीय लोगों को रोजगार दिलाने के लिए नीति बनाई। इसी नीति का नतीजा है कि राज्य में संचालित कल-कारखानों और संस्थानों में स्थानियों को रोजगार मिल रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के हर वर्ग और तबके को आगे बढ़ाने के लिए सरकार की योजनाएं हैं। आज हर बुजुर्ग को पेंशन मिल रहा है। महिलाओं को सम्मान राशि देने का ऐतिहासिक निर्णय लिये हैं। किसानों के दो लाख रुपये तक का कर्ज माफ हो चुका है। 200 यूनिट बिजली फ्री देने के साथ बकाया बिजली बिल माफ का दिया गया है। इसके अलावा अनेकों और योजनाएं हैं, जिनके माध्यम से राज्य वासियों को सशक्त बना रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड में विस्थापन हमेशा से एक बड़ी समस्या रही है। यहां उद्योग-धंधे के लिए जमीन अधिग्रहण कर लिया जाता है लेकिन जो विस्थापित होते हैं, उन्हें वर्षों तक उनका हक-अधिकार नहीं मिल पाता है। विस्थापितों की पीढ़ी दर पीढ़ी अपने वाजिब हक के लिए लगातार संघर्ष करती रहती है। कई मामलों में तो ऐसा लगता है कि कल-कारखाने लगने के साथ विस्थापित ना जाने कहां गुम हो जाते हैं। हमारी सरकार विस्थापितों के दुःख-दर्द से भली-भांति वाकिफ है। ऐसे में उन्हें उनका हक अधिकार मिले, राज्य सरकार उनके साथ है।

बोकारो, रामगढ़ व हजारीबाग जिले को मिली कई सौगातें

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर बोकारो, रामगढ़ और हजारीबाग जिले को 1240 करोड़ 57 लाख रुपये की 50 योजनाओं की सौगात दी। इसमें 1204 करोड़ 11 लाख रुपये की 48 योजनाओं का शिलान्यास और 36 करोड़ 40 लाख रुपये की दो योजनाओं का उद्घाटन शामिल है। इसमें बोकारो जिले में 1081 करोड़ 61 लाख रुपये की लागत से 46 योजनाओं का शिलान्यास हुआ। रामगढ़ जिले में 108 करोड़ 53 लाख रुपये की लागत से एक योजना का शिलान्यास तथा हजारीबाग जिले में 36 करोड़ 46 लाख रुपये की दो योजनाओं का उद्घाटन एवं 13 करोड़ 97 लाख रुपये की एक योजना का ऑनलाइन शिलान्यास संपन्न हुआ। इनमें बोकारो जिले में मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, तेनुघाट थर्मल पावर स्टेशन ललपनिया में 50 मेगावाट का सोलर पावर स्टेशन, रामगढ़ के पतरातू में रेलवे ओवरब्रिज व हजारीबाग में झील का ब्यूटीफिकेशन शामिल है जबकि हजारीबाग नगर निगम के नए भवन को सीएम ने वहां की जनता को समर्पित किया।

पीएम के झारखंड आगमन पर पुलिस अलर्ट

रांची में रेड जोन और नो फ्लाइंग जोन घोषित

नवीन मेल संवाददाता

रांची। पीएम आज बुधवार को अपने एक दिवसीय दौरे पर झारखंड आ रहे हैं। 17 दिनों में पीएम मोदी का यह दूसरा झारखंड दौरा है। पीएम रांची एयरपोर्ट से हेलीकॉप्टर के द्वारा हजारीबाग जाने वाले हैं, ऐसे में रांची के कुछ इलाकों में नो फ्लाइंग जोन घोषित कर दिया गया है।

रांची एयरपोर्ट के 200 मीटर की परिधि में नो फ्लाइंग जोन

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के झारखंड दौरे को देखते हुए रांची के बिरसा मुंडा एयरपोर्ट की 200 मीटर की परिधि में नो फ्लाई जोन घोषित कर दिया गया है। बिरसा मुंडा एयरपोर्ट के 200 मीटर की परिधि में ड्रोन, पैराग्लाइडिंग के साथ-साथ हॉट बैलून्स के उड़ान पर पूर्णतः रोक रहेगी। अनुमंडल दंडाधिकारी सदर के द्वारा इस संबंध में आदेश भी जारी कर दिया गया है।

सुबह 5 से रात 11 बजे तक निषेधाज्ञा

प्रधानमंत्री के झारखंड दौरे को देखते हुए अनुमंडल दंडाधिकारी सदर के द्वारा 2 अक्टूबर 2024 की सुबह 05:00 बजे से रात्रि 11:00 बजे तक निषेधाज्ञा लागू कर दी गई है। जारी आदेश में यह लिखा गया है कि 2 अक्टूबर 2024 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का रांची में भ्रमण कार्यक्रम प्रस्तावित है। इस क्रम में पीएम बिरसा मुंडा एयरपोर्ट पधारेंगे। सुरक्षा के दृष्टिकोण से बिरसा मुंडा एयरपोर्ट के आसपास के क्षेत्रों में ड्रोन, पैराग्लाइडिंग और हॉट एयर बैलून पूरी तरह से वर्जित एवं अन्य संबंधित गतिविधियों पर रोक लगाते हुए अनुमंडल दंडाधिकारी सदर, रांची द्वारा नो ड्रोन जोन घोषित किया गया है। वहीं सुरक्षा के दृष्टिकोण से अनुमंडल दंडाधिकारी, सदर, रांची द्वारा बीएनएसएस की धारा-163 के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए निम्न प्रकार की निषेधाज्ञा जारी की गयी है।

02 अक्टूबर को बिरसा मुंडा एयरपोर्ट के 200 मीटर की परिधि को ड्रोन, पैराग्लाइडिंग और हॉट एयर बैलून के संदर्भ में नो फ्लाइ जोन घोषित किया गया है, साथ ही उक्त क्षेत्र में तथा उसके ऊपर ड्रोन, पैराग्लाइडिंग और हॉट एयर बैलून पूर्णतः वर्जित रहेंगे।

यह निषेधाज्ञा दिनांक 02 अक्टूबर 2024 के प्रातः 5:00 बजे से रात्रि 11:00 बजे तक के लिए लागू रहेगी।

पुलिस चौकस

वहीं दूसरी तरफ रांची एयरपोर्ट पर पुलिस की टीम भी पूरी तरह से अलर्ट मोड में है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आगमन से लेकर उनके प्रस्थान तक 200 से अधिक पुलिसकर्मी और अधिकारी एयरपोर्ट से लेकर उसके आसपास के क्षेत्र में तैनात रहेंगे।

आजसू पार्टी प्रदेशभर में करेगी झारखंड नवनिर्माण यात्रा

गोमिया विधानसभा से आज होगी शुरुआत

नवीन मेल संवाददाता

रांची। आजसू पार्टी राज्य के अलग अलग विस क्षेत्रों में झारखंड नवनिर्माण यात्रा का आयोजन करेगी। इसकी शुरूआत 2 अक्टूबर को गांधी जयंती के अवसर पर गोमिया विस से होगी। जिसके बाद यह यात्रा राज्य के विभिन्न विधानसभाओं में आयोजित होगी। गोमिया में यह यात्रा गोमिया हाई स्कूल से 1बी मार्केट होते हुए स्वांग डीएवी स्कूल तक जाएगी। इस यात्रा में पार्टी अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो मुख्य रूप से शामिल होंगे। उनके साथ पार्टी के अन्य पदाधिकारी और हजारों की संख्या में कार्यकर्ता भी उपस्थित रहेंगे।

अपना आजसू 24X7 सेवा केंद्र का शुभारंभ : पार्टी अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो कल डुमरी और गोमिया विस स्तरीय अपना आजसू 24X7 सेवा केंद्र का शुभारंभ करेंगे। झारखंड नवनिर्माण यात्रा से पहले सुदेश महतो डुमरी के इसरी बाजार स्थित अपना आजसू 24X7 सेवा केंद्र की शुरूआत करेंगे फिर गोमिया में आयोजित यात्रा में हिस्सा लेने के पश्चात गोमिया विस अंतर्गत पेटरवार में अपना आजसू 247 सेवा केंद्र का शुभारंभ करेंगे।

जमीन फर्जीवाड़े में संलिप्त चार्जशीटेड कांके सीओ ने किया सरेंडर

रांची। जमीन माफिया कमलेश सिंह उर्फ कमलेश शर्मा से जुड़े जमीन फर्जीवाड़े में चार्जशीटेड मनी लाउंड्रिंग के आरोपी कांके के अंचलाधिकारी(सीओ) जय कुमार राम ने मंगलवार को व्यक्तिगत रूप से पीएमएलए कोर्ट में उपस्थित होकर सरेंडर किया। साथ ही उन्होंने सीआरपीसी की धारा 88 के तहत एक लाख का पर्सनल बांड भरा। पर्सनल बांड भरने के बाद विशेष न्यायाधीश योगेश कुमार ने अग्रिम जमानत की सुविधा प्रदान की। इससे पूर्व वह अपने अधिवक्ता विद्युत चौरसिया और जमानतदार के साथ अदालत पहुंचे और सरेंडर किया।

राज्य में विकास व सुशासन के लिए भाजपा की सरकार जरूरी : मोहन चरण माझी

नवीन मेल संवाददाता

रांची/चाईबासा। कोल्हान प्रमंडल के चाईबासा में आयोजित भाजपा की परिवर्तन सभा के समापन के अवसर पर ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी शामिल हुए। इस दौरान सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि झारखंड प्रदेश में इस बार झामुमो-कांग्रेस-राजद की गठबंधन सरकार का सफाया होने वाला है और राज्य में डबल इंजन की भाजपा सरकार आने वाली है। मांझी ने आगे कहा कि केंद्र और राज्य में अगर भाजपा की सरकार रहेगी तो राज्य और राज्य के जनता का विकास होगा। उन्होंने कहा कि जनता का काम तीव्र गति से हो सकेगा और लोगों को लाभ होगा। उन्होंने कहा कि झारखंड में भाजपा की सरकार बनी तो 2 लाख 87 हजार सरकारी पद भरने के लिए निणर्य लिया जाएगा। भाजपा की सरकार बनते ही दिसंबर महीन से महिलाओं के खाते में डीबीटी के माध्यम से 2100 पैसा डालने का काम होगा। उन्होंने कहा ककि प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत गरीबों को पक्का घर दिया जाएगा। हर घर में टॉयलेट होगा। नल के जरिए हर घर में पानी पहुंचाया जाएगा।

भाजपा की सरकार बनते ही महिलाओं को मिलेंगे 2100 रुपये

दुर्गा पूजा को लेकर पुलिस मुख्यालय ने एसपी से मांगी रिपोर्ट

रांची। दुर्गा पूजा के मद्देनजर पुलिस मुख्यालय ने राज्य के सभी एसपी से रिपोर्ट मांगी है। मुख्यालय से मंगलवार को मिली जानकारी के अनुसार दुर्गा पूजा के दौरान झारखंड में किसी प्रकार की विधि व्यवस्था की समस्या उत्पन्न ना हो, इसको लेकर झारखंड पुलिस मुख्यालय ने जिले के एसपी से जबरन चंदा वसूली सहित कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर रिपोर्ट मांगी है। इसमें दुर्गा पूजा के अवसर पर पूजा-अर्चना और सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन कहां-कहां किये जायेंगे और कितनी भीड़ होने की संभावना है, इससे संबंधित विवरण। क्षेत्र में लाइसेंसी और गैर लाईसेंसी पूजा पंडालों की संख्या। दशहरा के नाम पर किन-किन स्थानों पर जबरन चंदा वसूली की जाती है और इसके रोकथाम के क्या उपाय हैं।

पीएम सौगात देने आ रहे, फिर भी झामुमो को लग रहा डर : प्रतुल

नवीन मेल संवाददाता

रांची। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रतुल शाह देव ने मंगलवार को झारखंड मुक्ति मोर्चा पर बड़ा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री का जब भी झारखंड में आगमन होता है तो झारखंड मुक्ति मोर्चा के खेमे में डर सा समा जाता है। प्रधानमंत्री खरबों रुपए की सौगात देने आ रहे हैं। लेकिन भ्रष्टाचार में लिप्त झारखंड मुक्ति मोर्चा को अब भी डर लग रहा है।ये डर स्वाभाविक भी है क्योंकि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भ्रष्टाचार के खिलाफ देशव्यापी अभियान चल रहा है और हेमंत सरकार तो पूरे तरीके से भ्रष्टाचार में डूबी हुई है। लोकतंत्र के लिए यह डर अच्छा भी है। प्रतुल ने कहा कि आदिवासियों और मूलवासियों की सबसे बड़ी दुश्मन झामुमो है। प्रतुल ने कहा कि जिन आदिवासी और मूलवासियों को हक देने और नौकरी देने के नाम पर झामुमो सरकार में आई थी, उन्हीं को सबसे ज्यादा इस सरकार में ठगा गया। 5 वर्षों में 25 लाख नौकरियां के जगह हक मांगने निकले आदिवासी मूलवासी छात्रों को लाठियां मिली और फर्जी मुकदमों में फंसाया गया। प्रतुल ने कहा कि खनन लीज की बात हो या जमीन लीज की बात हो सब पर सोरेन परिवार का कब्जा रहा। सब प्रतियोगी परीक्षाएं कदाचार के भेंट चढ़ गई।प्रतुल ने कहा कि हद तो तब हो गई जब मुख्यमंत्री ने माइनिंग मंत्री और मुख्यमंत्री रहते खुद के नाम पर माइनिंग लीज ले ली।

चुनाव आया तो पीएम को आदिवासी याद आने लगे : सुप्रियो

रांची। झारखंड मुक्ति मोर्चा के महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा कि प्रधानमंत्री बुधवार को 15 दिनों के बाद फिर झारखंड दौरे पर आ रहे हैं। प्रधानमंत्री का हजारीबाग में कार्यक्रम है। प्रधानमंत्री के कार्यालय के सूचना आयी है कि वे एकलव्य विद्यालय के संबंध में कुछ घोषणा करेंगे। साथ ही जनजाति ग्रामीण उन्नयन के लिए भी कुछ घोषणा करेंगे। उन्होंने कहा कि चुनाव जैसे ही सामने आ रहा है, ऐसे में प्रधानमंत्री को आदिवासी बहुत याद आ रही है। राष्ट्रपति को चुनाव का एक तंत्र बनाकर उनका भी नाम लिया जाता है।

बापू स्वराज्य के लिए स्वच्छता को अनिवार्य समझते थे : राज्यपाल

नवीन मेल संवाददाता

रांची। रांची विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) इकाई की ओर से आयोजित स्वच्छता पखवाड़ा (17 सितंबर से 1 अक्तूबर), का समापन मंगलवार को हुआ। समापन के मौके पर आर्यभट्ट सभागार में आयोजित राष्ट्रीय स्वच्छता दिवस, महात्मा गांधी जयंती सह सम्मान समारोह में बतौर मुख्य अतिथि राज्यपाल उपस्थित थे। राज्यपाल ने कहा कि बापू के लिए स्वच्छता व्यक्तित्व का एक अभिन्न अंग था और वे इसे स्वराज्य के लिए अनिवार्य समझते थे। बापू स्वच्छता को व्यक्तिगत के साथ-साथ सामाजिक दायित्व भी मानते थे। उनके अनुसार स्वच्छता का मतलब यह नहीं कि हम अपनी और अपने घरों की सफाई करें व कचरा दूसरों के लिए जमा कर दें या पड़ोसी के घर के बाहर फेंक दें। राज्यपाल ने रांची विवि के एनएसएस स्वयंसेवकों की प्रशंसा करते हुए कहा कि सत्य के अन्वेषक के रूप में महात्मा गांधी ने बहुत सतर्क जीवनशैली अपनाई और स्वच्छता को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की। राष्ट्रपिता होने के नाते, उन्होंने महसूस किया कि सफाई का राष्ट्र निर्माण में अपरिहार्य स्थान है और कहा कि स्वच्छता का स्थान ईश्वर के करीब है।

स्वच्छता को बरकरार रखना हमारी भी जिम्मेदारी : कुलपति

कुलपति डॉ अजीत कुमार सिन्हा ने कहा कि स्वच्छता को बरकरार रखना सरकार की नहीं, हमारी भी जिम्मेदारी बनती है। विडंबना यह है कि स्वच्छता का सीधा संबंध हमारी सेहत से होने के बाद भी हमारे समाज में चेतना नहीं आई। सरकार ने स्वच्छता पर फोकस करना शुरू तो किया है, पर अब भी यह सरकारीकरण से बाहर आकर लोगों के लिए जन अभियान का रूप नहीं ले पाया। उन्होंने कहा कि एक कदम स्वच्छता की ओर, यह पंक्ति सभी नागरिकों को स्वच्छ भारत के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपने तरीके से योगदान करने के लिए प्रेरित करती है। विश्वविद्यालय के एनएसएस कार्यक्रम समन्वयक डॉ ब्रजेश कुमार ने स्वच्छता ही सेवा के अंतर्गत संपन्न हुए कार्यक्रमों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि रांची विश्वविद्यालय के अंतर्गत विभिन्न विश्वविद्यालय विभागों व कॉलेजों में कई कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें सामुदायिक जगहों की साफ-सफाई, कॉलेज परिसरों की साफ-सफाई, जागरुकता रैली, निबंध लेखन, भाषण प्रतियोगिता, स्लोगन लेखन, पोस्टर निर्माण, वीडियो निर्माण, रील मेकिंग, नुक्कड़ नाटक, क्विज प्रतियोगिता जैसे कार्यक्रम शामिल थे।

स्वच्छता रिपोर्ट का विमोचन : कार्यक्रम में रांची विश्वविद्यालय के सभी विभागों व कॉलेजों की स्वच्छता रिपोर्ट का विमोचन किया गया। साथ ही, एक पुस्तक का विमोचन किया गया, जिसके लेखक जेएन कॉलेज धुर्वा के प्राध्यापक डॉ दीपक साहू हैं। पुस्तक का नाम- डिजिटल मार्केटिंग, है। राज्यपाल ने विश्वविद्यालय के बेसिक साइंस बिल्डिंग परिसर में गुब्बारे उड़ाकर स्वच्छता का संदेश दिया। इसके बाद विश्वविद्यालय परफॉर्मिंग एंड फाइन आर्ट्स विभाग के छात्र-छात्राओं ने बापू के प्रिय भजन-वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे पीर पराई जाने रे..., प्रस्तुत कर सबको भावविभोर कर दिया।

रांची एवं डालटनगंज (मेदिनीनगर) से एक साथ प्रकाशित | अश्विन कृष्ण पक्ष 30, संवत 2081 | रांची, बुधवार, 02 अक्टूबर 2024, वर्ष-25, अंक- 240, पृष्ठ-16 ₹3.00 रजिस्ट्रेशन नं: BIHHIN/1999/155 | www.rastriyanaveenmail.com

ईश्वर में हमारा विश्वास

राष्ट्रीय नवीन मेल

सत्यमेव जयते

हर पक्ष की खबर | हर पक्ष पर नजर

अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तनुमितासिरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनी रम्यकपर्दिनी शैलसुते।

महालया आज

रांची में **'जलसहिया क्षमतावर्द्धन सह स्वच्छता ही सेवा'** कार्यक्रम में बोले सीएम हेमंत सोरेन

योजनाओं को घर-घर तक पहुंचाने में जलसहियाओं की भूमिका महत्वपूर्ण

नवीन मेल संवाददाता

रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि जलसहिया दीदियों की समस्याओं को हमारी सरकार ने सुलझाने का कार्य किया है। पूर्व की सरकारों ने जलसहिया दीदियों को उनके हक-अधिकार से उन्हें वंचित रखने का काम किया था। हमारी सरकार आम नागरिक और सरकार के विभिन्न अंगों को अपने साथ खड़े होने के लिए उन्हें उनका हक और अधिकार दे रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जलसहिया दीदियों की समस्याओं पर राज्य सरकार का पूरा ध्यान है। हमारी सरकार एक-एक समस्याओं का निदान करने का काम कर रही है। हमारी सरकार ने ग्राम स्तर पर कार्यरत जलसहिया दीदियों की मानदेय राशि को बढ़ाकर दो हजार रुपये प्रतिमाह किया है। हमारी सरकार ने राज्य के वृद्धजन, महिलाएं, नौजवान युवक-युवतियां, स्कूलों में अध्यनरत बच्चियों के लिए विशेष कार्ययोजना के साथ उनके समग्र विकास की दिशा में एक लंबी लकीर खींचने का प्रयास किया है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन मंगलवार को रांची के धुर्वा स्थित प्रभात तारा मैदान में पेयजल एवं स्वच्छता विभाग द्वारा आयोजित 'राज्य स्तरीय जलसहिया क्षमतावर्द्धन सह स्वच्छता ही सेवा' कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान समय में आप सभी जलसहिया दीदियों के माध्यम से राज्य सरकार की कई महत्वाकांक्षी योजनाएं गांव-गांव तथा घर-घर तक पहुंचती हैं। आप याद कीजिए वह दिन जब पूर्व की सरकार में छोटे से कार्यकाल के भीतर **शेष पेज 13 पर**

मुख्यमंत्री ने कहा

यह सरकार इस राज्य के मूलवासियों-आदिवासियों की है

हमारी सरकार रांची हेडक्वार्टर से नहीं, बल्कि गांव से चलती है

स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना प्राथमिकता

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज गांव-गांव, जन-जन तक स्वच्छ पानी पहुंचाना बहुत बड़ी चुनौती है। स्वच्छ जल मिलेगा, तभी लोग बीमार नहीं होंगे। यदि हम सभी लोग मिलजुल कर गांव-गांव तक स्वच्छ पानी पहुंचाने में कामयाब होंगे, तो जिस तरह से हमारे पूर्वज मजबूत हुआ करते थे, वैसे ही गांव के लोग मजबूत होंगे। ग्रामीण स्तर तक स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना हम सभी की जिम्मेदारी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि विभागीय स्तर पर कई कार्य योजना तैयार की गई है। राज्य सरकार द्वारा कहीं टंकी, कहीं बोरिंग, कहीं पाइपलाइन के जरिए शुद्ध जल पहुंचाने का कार्य हो रहा है। कई जगहों पर शिकायत मिल रही है कि ठेकेदार गड़बड़ी कर रहे हैं, इस पर नजर रखने, इसकी चौकीदारी करने के लिए जलसहिया दीदियों को जिम्मा मिलेगा। यह काम मजबूती से आपके हाथ में रहेगा।

अब जो ठेकेदार गड़बड़ी करेगा, उसके खिलाफ आप शिकायत दर्ज करें, उस पर राज्य सरकार त्वरित कार्रवाई करने का काम करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारा यह मानना है कि जब गांव मजबूत होगा, तभी राज्य मजबूत होगा। जब राज्य मजबूत होगा, तभी देश मजबूत हो सकता है। बहुत सारे लोग आज देश को मजबूत करने की बात करते हैं, लेकिन गांव की स्थिति बदतर है। **शेष पेज 13 पर**

हेमंत सोरेन ने फिर उठाया बकाया का मुद्दा

रांची (आईएएनएस)। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 2 अक्टूबर को प्रस्तावित झारखंड दौरे के ठीक पहले केंद्र पर राज्य के 1.36 लाख करोड़ के बकाये का मुद्दा उठाया। सोरेन ने कहा है कि यह पैसा केंद्रीय कोल कंपनियों के पास है। यह राशि नहीं मिलने से झारखंड के विकास में बाधाएं उत्पन्न हो रही हैं। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लिखा, ये हक समस्त झारखंडियों का है। यह हमारी मेहनत, हमारी जमीन का पैसा है। इसे मांगने के कारण ही मुझे बिना किसी कारण जेल में डाला गया। कल जब प्रधानमंत्री झारखंड में होंगे, तो मुझे पूर्ण आशा है कि वे हमारा हक हमें लौटायेंगे। हेमंत सोरेन की ओर से इस मुद्दे पर मंगलवार को विभिन्न मीडिया माध्यमों में 'माननीय प्रधानमंत्री जी को खुला पत्र' शीर्षक से इश्तेहार भी जारी किया गया। सीएम ने कोयला कंपनियों पर बकाया राशि की दावेदारी का ब्रेकअप भी दिया है।

उन्होंने लिखा है कि वाश्ड कोल की रॉयल्टी के मद में 2,900 करोड़, पर्यावरण मंजूरी की सीमा के उल्लंघन के एवज में 32 हजार करोड़, भूमि अधिग्रहण के मुआवजे के रूप में 41,142 करोड़ और इस पर सूद की रकम के तौर पर 60 हजार करोड़ रुपये बकाया हैं।

शेष पेज 13 पर

प्रधानमंत्री मोदी आज आएंगे झारखंड

हजारीबाग में कई परियोजनाओं का करेंगे शिलान्यास व उद्घाटन

नवीन मेल संवाददाता

▸ भाजपा की परिवर्तन यात्रा महासभा को भी करेंगे संबोधित

रांची। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बुधवार (02 अक्टूबर) को झारखंड दौरे पर हजारीबाग आएंगे। वे दोपहर करीब 2 बजे हजारीबाग में 83,300 करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन करेंगे। वे हजारीबाग के मटवारी गांधी मैदान में भाजपा की परिवर्तन यात्रा महासभा को भी संबोधित करेंगे। इस दौरान वे 3 घंटे 25 मिनट तक प्रदेश में ही रहेंगे। उनके आगमन को लेकर प्रशासन ने पूरी तैयारी कर ली है।

देश भर में जनजातीय समुदायों के व्यापक और समग्र विकास को सुनिश्चित करने की अपनी प्रतिबद्धता के अनुरूप, प्रधानमंत्री 79,150 करोड़ रुपये से अधिक के कुल परिव्यय के साथ धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान का शुभारंभ करेंगे। यह अभियान 30 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 549 जिलों और 2,740 ब्लॉकों में 5 करोड़ से अधिक जनजातीय लोगों को लाभान्वित करते हुए लगभग 63,000 गांवों को शामिल करेगा। इसका उद्देश्य भारत सरकार के विभिन्न 17 मंत्रालयों और विभागों द्वारा कार्यान्वित 25 हस्तक्षेपों के माध्यम से सामाजिक बुनियादी ढांचे, स्वास्थ्य, शिक्षा, आजीविका में महत्वपूर्ण अंतराल को दूर करना है। जनजातीय समुदायों के लिए शैक्षिक बुनियादी ढांचे को बढ़ावा देने के लिए प्रधानमंत्री 40 एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों (ईएमआरएस) का उद्घाटन करेंगे और 2,800 करोड़ रुपये से अधिक लागत के 25 ईएमआरएस की आधारशिला रखेंगे। प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान (पीएम-जनमन) के तहत 1360 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली कई परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करेंगे। इसमें 1380 किलोमीटर से अधिक सड़कें, 120 आंगनवाड़ी, 250 बहुउद्देश्यीय केंद्र और 10 स्कूल छात्रावास शामिल हैं। इसके अलावा, वह पीएम जनमन के तहत कई ऐतिहासिक उपलब्धियों का भी अनावरण करेंगे। इसमें लगभग 3,000 गांवों में 75,800 से अधिक विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (पीवीटीजी) के घरों का विद्युतीकरण, 275 मोबाइल मेडिकल इकाइयों का संचालन, 500 आंगनवाड़ी केंद्रों का संचालन, 250 वन धन विकास केंद्रों की स्थापना और 5,550 से अधिक पीवीटीजी गांवों को 'नल से जल' का लाभ प्रदान करना शामिल है।

शेष पेज 13 पर

झारखंड कैबिनेट की बैठक आठ को

रांची (हि.स.)। झारखंड कैबिनेट की बैठक आठ अक्टूबर को होगी। इस संबंध में मंगलवार को मंत्रिमंडल सचिवालय एवं निगरानी विभाग (समन्वय) ने सूचित किया है कि मंत्रिपरिषद की बैठक अपराह्न 4:00 बजे से झारखंड मंत्रालय (प्रोजेक्ट भवन) स्थित मंत्रिपरिषद कक्ष में होगी।

आईपीएस मल्लिक व मुरारी लाल मीणा डीजी रैंक में प्रोन्नत

रांची (हि.स.)। आईपीएस मुरारी लाल मीणा और आरके मल्लिक को डीजी रैंक में मंगलवार को प्रोन्नति दी गई। मीणा को डीजी रेल बनाया गया, जबकि मल्लिक को डीजी हेडक्वार्टर के पद पर पदस्थापित किया गया है। उल्लेखनीय की है कि ये दोनों आईपीएस अधिकारी जनवरी 2025 में सेवानिवृत हो जाएंगे। मुरारी लाल मीणा 1993 बैच के आईपीएस हैं, जबकि आरके मल्लिक 1992 बैच के आईपीएस अधिकारी है।

भाजपा उम्मीदवारों की पहली सूची पर शिवराज सिंह चौहान की मुहर

नवीन मेल संवाददाता

रांची। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) विधानसभा चुनाव को लेकर उम्मीदवारों की पहली लिस्ट नवरात्र के दौरान जारी करेगी। अब इस खबर पर केंद्रीय कृषि मंत्री सह झारखंड भाजपा के चुनाव प्रभारी शिवराज सिंह चौहान ने मुहर लगा दी है। उन्होंने कहा है कि अक्टूबर के पहले सप्ताह में केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक होगी। इसमें उम्मीदवारों के नाम तय किए जाएंगे। पहले हफ्ते में पहली सूची आएगी। उन्होंने कहा है कि 4 अक्टूबर 2024 से नवरात्र शुरू हो रहा है। इसलिए भाजपा शुभ मुहूर्त में उम्मीदवारों की सूची जारी करेगी। जानकारी के अनुसार, पहली सूची में दो दर्जन के आसपास उम्मीदवारों के नाम हो सकते हैं। इसमें अधिसंख्य आदिवासियों के लिए आरक्षित सीटें शामिल होंगी। भाजपा जिन सीटों पर वर्ष 2019 के चुनाव में हार गई थी, उन सीटों पर उम्मीदवारों की घोषणा पहले होगी। ताकि, उम्मीदवारों को जनता के बीच जाने के लिए पर्याप्त समय मिल सके। पार्टी सभी प्रमुख चेहरों को चुनावी रण में उतरेगी।

इधर, हरियाणा और जम्मू कश्मीर विधानसभा चुनाव संपन्न होने के बाद चुनाव आयोग झारखंड और महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव की घोषणा कर सकता है।

खबर है कि भाजपा और आजसू के बीच सीटों को लेकर बातचीत अंतिम दौर में है। दिल्ली में कल रात पार्टी प्रमुख सुदेश महतो की गृहमंत्री अमित शाह, भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा, शिवराज सिंह चौहान सहित कई वरिष्ठ नेताओं के साथ सीटों पर बातचीत हुई है। **शेष पेज 13 पर**

इनका नाम लगभग तय है

राजघनवार या मनिका - बाबूलाल मरांडी, दुमका - लुईस मरांडी, शिकारीपाड़ा - परितोष सोरेन, जमताड़ा - दुगराज मंडल या सीता सोरेन, जामा- सीता सोरेन या सुनील सोरेन, बेरमो - योगेश्वर महतो या रवींद्र पांडेय, टुंडी - राजीव कुमार ओझा या विक्रम पांडेय, झरिया - रागिनी सिंह, बाघमारा - शेखर सिंह या शत्रुघ्नमहतो, खूंटी - नीलकंठ सिंह मुंडा, सरायकेला-चंपाई सोरेन, जगन्नाथपुर - गीता कोड़ा, सिसई - अरुण उरांव, घाटशिला - बाबूलाल सोरेन, गुमला - मिसिर कुजूर, राजमहल - अनंत ओझा, गोड्डा - अमित मंडल और भवनाथपुर - भानु प्रताप शाही।

लातेहार में एके-47 के साथ दो उग्रवादी गिरफ्तार

लातेहार (हि.स.)। उग्रवादी संगठन झारखंड जनमुक्ति परिषद (जेजेएमपी) के दो सब जोनल कमांडर को पुलिस ने अत्याधुनिक हथियार के साथ गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार उग्रवादियों में सब जोनल कमांडर खुर्शीद अंसारी, पोचरा, लातेहार और फेंकू भुईयां बालूमाथ शामिल हैं। उनके पास से पुलिस ने एक एके-47 स्वचालित राइफल और आठ कारतूस बरामद किए हैं। एसपी कुमार गौरव ने मंगलवार को पत्रकार वार्ता में बताया कि पुलिस को सूचना मिली थी कि सदर थाना क्षेत्र के नारायणपुर जंगल के पास दो उग्रवादी हथियार के साथ घूम रहे हैं। सूचना के बाद पुलिस की एक टीम बनाई गई और उग्रवादियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की गई। पुलिस जैसे ही जंगल में पहुंची तो पुलिस को देखकर नक्सली भागने लगे, लेकिन पुलिस ने घेराबंदी कर दोनों उग्रवादियों को पकड़ लिया। इनके पास से एक एके-47 राइफल और गोलियां भी बरामद हुईं।

हाई कोर्ट के अधिवक्ता पर चली गोली, पुलिस कर रही सघन जांच

जमीन या पैरवीकार से विवाद हो सकती है वजह : अधिवक्ता

नवीन मेल संवाददाता

रांची। राजधानी रांची के रातू थाना क्षेत्र के ब्रजपुर में मंगलवार की शाम को झारखंड हाई कोर्ट के अधिवक्ता बबन प्रसाद पर बाइक सवार हथियारबंद अपराधियों ने गोली चलाई, जिसमें वे घायल कर दिया। अधिवक्ता को पीठ में गोली लगी है। घायल अधिवक्ता को आनन-फानन में रांची के राजेंद्र आयुर्विज्ञान संसथान (रिम्स) भेजा गया। वहां डॉक्टरों ने उनका इलाज किया।

घायल अधिवक्ता की जानकारी मिलते ही कई अधिवक्ता रिम्स पहुंचे और अधिवक्ता बबन प्रसाद से पूरे मामले की जानकारी ली। हाई कोर्ट के अधिवक्ता बबन प्रसाद ने बताया कि जिस वक्त वे घर जा रहे थे, उसी दौरान बाइक सवार अपराधियों ने उन्हें गोली मारी। अधिवक्ता पर गोली चलाने की वजह फिलहाल स्पष्ट नहीं हो पाई है। इधर, घायल बबन प्रसाद ने पलामू में जमीन विवाद और किसी केस के पैरवीकार से विवाद के कारणों पर शक जताया है। हालांकि, पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।

अधिवक्ता मंच ने जताया दुख

झारखंड अधिवक्ता मंच के अध्यक्ष डॉ रवींद्र कुमार ने अधिवक्ता बबन प्रसाद पर जानलेवा हमले को लेकर कहा- यह काफी दुखद है। अधिवक्ता आमजनों के लिए काम करती है। उनके साथ ऐसी घटना होना दुखद है।

इंडिया

वक्फ बोर्ड की वकालत, विरोध और समर्थन की राजनीति

सुनील बादल
कार्यकारी संपादक

वक्फ मुस्लिम कानून द्वारा मान्यता प्राप्त धार्मिक, धार्मिक या धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए चल या अचल संपत्तियों का उद्देश्य है कि मुस्लिम द्वारा संपत्ति, चाहे वह चल हो या अचल, मूर्त हो या अमूर्त, ईश्वर को दान करना, इस आधार पर कि हस्तांतरण से जरूरतमंदों को लाभ होगा। एक केंद्रीय वक्फ बोर्ड और कई राज्य बोर्ड हैं।वक्फ अधिनियम को पहली बार 1954 में संसद द्वारा पारित किया गया और 1995 में एक नया वक्फ अधिनियम पारित किया गया, जिसने वक्फ बोर्डों को अधिक अधिकार दिए। 2013 में अधिनियम में और संशोधन किया गया ताकि वक्फ बोर्ड को संपत्ति को 'वक्फ संपत्ति' के रूप में नामित करने के लिए व्यापक अधिकार दिए जा सकें। सरकार वक्फ बोर्ड अधिनियम में 32-40 संशोधनों पर विचार कर रही है। प्रस्तावित संशोधनों के बाद वक्फ बोर्ड को मूल्यांकन के लिए जिला कलेक्टर के कार्यालय में अपनी संपत्तियों को पंजीकृत करना अनिवार्य होगा। संशोधनों का उद्देश्य केंद्रीय वक्फ परिषद और राज्य बोर्डों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करके समावेशिता को बढ़ाना भी है। इसके अतिरिक्त, प्रस्तावित परिवर्तनों में वक्फ संपत्तियों की न्यायिक जांच की अनुमति देना शामिल है ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि वे वक्फ संपत्ति के

रूप में योग्य हैं या नहीं। रेलवे और रक्षा विभाग के बाद वक्फ बोर्ड को भारत में तीसरा सबसे बड़ा भूमिधारक कहा जाता है। वर्तमान में 8 लाख एकड़ में फैली लगभग 8,72,292 पंजीकृत वक्फ संपत्तियां हैं। इन संपत्तियों से 200 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त होता है। लगभग 200 व्यक्ति राज्य वक्फ बोर्डों को नियंत्रित करते हैं। वक्फ को लेकर विवाद अंग्रेजों के जमाने से चला आ रहा है। वक्फ की संपत्ति पर कब्जे का विवाद लंदन स्थित प्रिवी काउंसिल तक पहुंचा था। अंग्रेजी हुकूमत के दौरान ब्रिटेन में जजों की एक पीठ बैठी और उन्होंने इसे अवैध करार दिया था लेकिन, ब्रिटिश भारत की सरकार ने इसे नहीं माना और इसे बचाने के लिए 1913 में एक नया एक्ट लाई। 8 दिसंबर 2023 को वक्फ बोर्ड (एक्ट) अधिनियम 1995 को निरस्त करने का प्राइवेट मेंबर बिल राज्यसभा में पेश किया गया था।यह बिल उत्तर प्रदेश से भाजपा सांसद हरनाथ सिंह यादव ने पेश किया था । राज्यसभा में इस बिल को लेकर विवाद भी हुआ था । भाजपा सांसद ने कहा था कि 'वक्फ बोर्ड अधिनियम 1995' समाज में द्वेष और नफरत पैदा करता है। वक्फ एक अरबी शब्द है। जिसका अर्थ होता है खुदा के नाम पर अर्पित वस्तु।वक्फ बोर्ड के अधिकार में चल और अचल संपत्तियां आती हैं। इन संपत्तियों के रखरखाव के लिए राष्ट्रीय से लेकर राज्य स्तर पर वक्फ बोर्ड होता है।वक्फ बोर्ड को जो संपत्ति दान दी जाती है, उससे गरीबों की मदद की जाती है.वक्फ के अधिकारों को लेकर है सबसे ज्यादा विवाद जिसमें दो सक्रिय पक्ष और एक तटस्थ है । सबसे अधिक विवाद वक्फ के अधिकारों को लेकर है। क्योंकि वक्फ एक्ट के सेक्शन 85 में इस बात पर जोर दिया गया है कि बोर्ड के फैसले को कोर्ट में चुनौती नहीं दी जा सकती है।वक्फ बोर्ड अपनी विशाल संपत्तियों पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रहा है। बढ़ती कानूनी लड़ाइयां, धाराओं की हार की जंग, आंतरिक अराजकता और राजनीतिक गर्माहट से घिरा हुआ है। अतिक्रमणकारियों और भ्रष्टाचारियों के कई आरोप लग चुके हैं। कानूनी मामलों, कर्मचारियों की भारी कमी, राजनीतिक नियुक्तियों, बड़े पैमाने पर अतिक्रमण और दुखद ध्वस्तीकरण से आंतरिक रूप से जूझ रहे। भूमि और सार्वजनिक स्थानों को वक्फ बनाकर अधिग्रहित करने का भी आरोप है। प्रस्तावित संशोधनों का उद्देश्य वक्फ संपत्तियों पर केंद्र के विनियामक प्राधिकरण को बढ़ाकर और पहली बार वक्फ बोर्डों में गैर-मुस्लिम सदस्यों को शामिल करने की अनुमति देकर कानून में महत्वपूर्ण सुधार नाम बदलकर एकीकृत वक्फ प्रबंधन, सशक्तीकरण, दक्षता और विकास अधिनियम, 2024 करने का प्रस्ताव है। कई विपक्षी दलों ने केंद्र पर हितधारकों के साथ पर्याप्त परामर्श किए बिना विधेयक पेश करने का आरोप लगाया है, उनका दावा है कि यह मुस्लिम समुदाय के धार्मिक अधिकारों का अतिक्रमण करता है। जबकि गृह मंत्री ने इसे शीतकालीन सत्र में पास कराने की घोषणा की है ।अखिलेश यादव, केसी वेणुगोपाल और असदुद्दीन ओवैसी समेत पूरे विपक्षी दलों ने इस बिल का विरोध किया था और सरकार की नीयत पर सवाल उठाए थे । जेडी यू और टीडीपी ने इसका समर्थन किया। बिल के बारे में बताते हुए संसदीय कार्य मंत्री किरण रिजिजू ने तिरुचिरापल्ली के तिरुचेंथुरई गांव की कहानी बताई। हिंदू आबादी वाले 1500 साल पुराने इस गांव को ही वक्फ संपत्ति घोषित कर दिया था। इसकी जानकारी जब ग्रामीणों को हुई तो वे हैरत में पड़ गए। उन्हें समझ में नहीं आया कि उनकी हजारों साल पुरानी पैतृक संपत्ति वक्फ की प्रॉपर्टी कैसे बन गई। वक्फ बोर्ड के पास जमीन से जुड़ा सबूत नहीं था मगर गांव पर उसका मालिकाना हक था।

बिना लाग लपेट बोले केंद्रीय मंत्री

सरकार 'विष कन्या' की तरह होती है : गडकरी

ब्यूरो

नई दिल्ली। बिना लाग लपेट बोलने के लिए मशहूर व पक्ष-विपक्ष सभी दल के सांसदों के प्रिय केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने अपने संसदीय क्षेत्र नागपुर में एक कार्यक्रम में कहा, यह अनिश्चित है कि क्या निवेशकों को उनकी सब्सिडी का भुगतान समय पर मिलेगा, क्योंकि सरकार को लाडली बहिन योजना के लिए भी निधि आवंटित करनी है। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री ने कहा कि महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में उद्यमियों को निवेश करने के लिए आगे आना चाहिए, क्योंकि सब कुछ सरकार पर नहीं छोड़ा जा सकता। उन्होंने हल्के-फुल्के अंदाज में कहा, मेरी राय है कि चाहे किसी भी पार्टी की सरकार हो, सरकार को दूर रखो। सरकार विष कन्या की

तरह होती है, जो जिसके साथ जाती है, उसे बर्बाद कर देती है। इसलिए उस मामले में मत पड़ो। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने उद्यमियों से कहा कि वे सरकारी सब्सिडी पर निर्भर न रहें। उन्होंने कहा कि सरकार के पास महिलाओं के लिए हाल ही में शुरू की गई कल्याणकारी लाडली बहन योजना जैसी अन्य प्रतिबद्धताएं भी हैं। गडकरी ने कहा, अगर आपको सब्सिडी मिल रही है तो ले लो, लेकिन फिर यह तय नहीं है कि सब्सिडी कब मिलेगी।

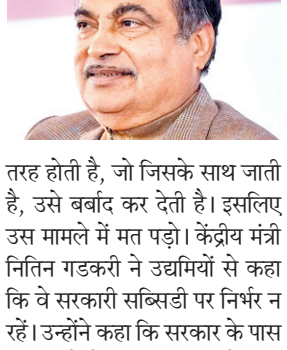

शेष पेज 13 पर

सदर अस्पताल के आउटसोर्सिंग कर्मी और कंपनी के बीच हंगामा

सिविल सर्जन का कार्यालय बना अखाड़ा, नहीं निकला हल

नवीन मेल संवाददाताष रांची

मंगलवार शाम चार बजे से रात आठ बजे तक रांची सदर अस्पताल में भारी हंगामा हुआ। यह हंगामा आउटसोर्सिंगकर्मियों ने किया। उनकी मांगों पर बात करने के लिए समानता कंपनी के सुपरवाइजर कपंनी का प्रतिनिधित्व करने आए थे। सीएस कार्यालय में दोनों पक्षों को अपनी बात रखनी थी। इसी बीच जयराम महतो की पार्टी के कुछ लोग मध्यस्थता करने आए थे। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, रांची जिला अध्यक्ष आलोक उरांव, युवा मोर्चा नगर अध्यक्ष शिवराज सिंह, महानगर अध्यक्ष संजय महतो आदि थे। सीएस प्रभात कुमार ने बारीकी से सभी पहलुओं पर बात करना शुरू किया। शुरूआती दौर में शांतिपूर्ण तरीके से एक- एक बिन्दु पर बात हो रही थी। आउटसोर्सिंगकर्मी अपनी बात एक एक कर बता रहे थे। कंपनी के प्रतिनिधि सुपरवाइजर उनका जवाब दे रहे थे। इसी बीच पार्टी के नेताओं ने कड़ा रूख कंपनी के प्रति अपनाया जिससे भीड़ अशांत हो गई। सीएस ने सबसे आग्रह किया कि शोर-शराबा ना करे, अस्पताल की गरिमा को बनाए रखे। लेकिन, उनकी बात कोई नहीं सुन रहा था। नेता और कंपनी के बीच विवाद का अखाड़ा सदर अस्पताल सीएस कायार्लय बना रहा। नेता के बौखलाहट कर्मी खुश थे, मगर समस्या का हल नहीं हो सका। इस बीच भीड़ सुपरवाइजर को घेरे रही। मांगों को पूरा करने के लिए कागज पर हस्ताक्षर कराया गया। हंगामा स्थल पर मौजूद नेताओं ने मामले को ऑनस्पॉट सुलझाने का प्रयास किया।

पहाड़ीटोला उर्दू स्कूल की स्थिति खराब

रांची। जिला शिक्षा अधीक्षक (डीएसई) बादल राज ने मंगलवार को बालिका मध्य विद्यालय पहाड़ी टोला उर्दू एवं बालिका मध्य विद्यालय पहाड़ी टोला हिंदी का औचक निरीक्षण किया। बालिका मध्य विद्यालय पहाड़ी टोला उर्दू में कुल 69 विद्यार्थियों का नामांकन है। लेकिन इसमें के केवल 21 विद्यार्थी ही उपस्थित पाए गए। हालांकि विद्यालय में चार शिक्षिकाएं कार्यरत हैं। विद्यालय में जो छात्र मौजूद भी थे तो वे मौलिक सवालों का जवाब तक नहीं दे सके। जिले भर में चलाए जा रहे पब्लिक स्पीकिंग कार्यक्रम का अनुपालन सही तरीके से होता नहीं पाया गया। विद्यालय में छात्राओं के लिए बने टॉयलेट इस स्थिति में पाए गए जैसे कई वर्षों से इस्तेमाल में नहीं किए गए हों। गंदगी और झाड़ियों का अंबार पाया गया। मध्याह्न भोजन तैयार किए जाने वाले कक्ष में भी गंदगी पाई गई। डीएसई ने प्रभारी प्रधानाध्यापक को सभी चीजों को व्यवस्थित करने के निर्देश देते हुए स्पष्टीकरण जारी किया।

मंजूनाथ भजंत्री ने किया रांची के उपायुक्त का पदभार ग्रहण

नवीन मेल संवाददाता। रांची

रांची के नये डीसी मंजूनाथ भजंत्री ने मंगलवार को पदभार ग्रहण किया। पूर्व डीसी राहुल कुमार सिन्हा ने बुके देकर उनका स्वागत किया। मौके पर जिला प्रशासन के तमाम अधिकारी मौजूद रहे। मंजूनाथ भजंत्री 2011 बैच के आईएएस अधिकारी हैं। बता दें कि पूर्व डीसी राहुल कुमार ने जुलाई 2022 में रांची डीसी का पदभार ग्रहण किया था। शांतिपूर्ण तरीके से त्योहार संपन्न कराना प्राथमिकता पदभार ग्रहण करने के बाद रांची डीसी मंजूनाथ भजंत्री ने कहा कि त्योहार के सीजन की शुरूआत हो रही है। जिला प्रशासन की प्राथमिकता शांतिपूर्ण तरीके से त्योहार संपन्न कराना है। साथ ही सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को पंचायत स्तर पर पहुंचने का प्रयास किया जायेगा। आगामी विधानसभा चुनाव से संबंधित तैयारी पर डीसी ने कहा कि पूर्व से ही तैयारियां की गयी हैं, उसे आगे बढ़ाया जायेगा। सभी पदाधिकारी अनुभवी हैं, हम टीमवर्क के साथ सभी चुनौतियों का सामना करेंगे। सोमवार को बदले गये थे चार जिलों के डीसी बता दें कि राज्य सरकार ने सोमवार को छह आइएएस अफसरों का तबादला किया था। इसमें चार जिलों के डीसी को भी बदला गया था। कार्मिक विभाग ने मंजूनाथ भजंत्री को रांची जिला का उपायुक्त बनाया। वहीं शशि प्रकाश सिंह को जामताड़ा, उत्कर्ष गुप्ता को लातेहार और मनीष कुमार को पाकुड़ जिले की जिम्मेवारी सौंपी गयी। इसके अलावा पवन कुमार को उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल का प्रमंडलीय आयुक्त और रंजीत कुमार लाल को उर्जा उत्पादन निगम का एमडी बनाया गया। है। कार्मिक ने इसका आदेश जारी कर दिया।

झारखंड में स्वास्थ्य सेवाएं चरमराने की स्थिति में : एएचपीआई

नवीन मेल संवाददाता। रांची

पीएमजेएवाई/ एमएमजेएवाई योजना के तहत झारखंड के 250 से अधिक अस्पतालों द्वारा दी गई सेवाओं का भुगतान पिछले 4 महीनों से बंद है। बार-बार संबंधित अधिकारियों से मिलने के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं हुई है। सरकार और अधिकारियों की उदासीनता के चलते ये अस्पताल अब पूरी तरह से अपनी सेवाएं देने में असमर्थ हैं। एएचपीआई के तत्वावधान में इस मुद्दे पर आयोजित बैठक में जानकारी दी गई। एनआरएचएम के कार्यकारी निदेशक ने इनका भुगतान रोक दिया है। केंद्र सरकार नियमित प्रतिक्रिया के तहत पीएमजेएवाई/ एमएमजेएवाई से अनुबंधित अस्पतालों को समय-समय पर फ़्लैग करती है, और यह सूचना राज्य सरकार को दी जाती है। इसके बाद राज्य सरकार इन फ़्लैग किए गए अस्पतालों का निरीक्षण और जांच करती है कि कहीं अनियमितता या धोखाधड़ी तो नहीं हुई। जिन अस्पतालों में गड़बड़ी पाई जाती है, उनके खिलाफ कार्रवाई की जाती है। प्रवर्तन निदेशालय ने राज्य सरकार से ऐसे अस्पतालों की सूची मांगी थी, और पिछले वर्षों में 3 अस्पतालों में धोखाधड़ी पाए जाने पर उनका अनुबंध रद्द कर दिया गया था। बावजूद इसके, बाकी सभी अस्पतालों का भुगतान पिछले 4 महीनों से रोक दिया गया है, जबकि इनमें कोई अनियमितता नहीं थी। ऐसी स्थिति में, बिना किसी दोष प्रमाण के बाकी अस्पतालों का भुगतान रोकना सर्वथा अनुचित है। ये सभी अस्पताल पाक साफ हैं- तभी तो राज्य सरकार इनमें लगातार अपनी सेवाएं देने और मरीजों का इलाज करने के लिए लगातार अनुमति भी दे रही है. ज्ञातव्य हो कि एमएमजेएवाई के तहत प्रत्येक मरीज के इलाज के पहले टीपीए और एनएचए अप्रूवल के बाद ही इलाज की अनुमति मिलती है. इन सभी मरीजों को सेवाएं एमएमजेएवाई के अनुसार देने के लिए बाध्य करना और फिर भुगतान ना करना- यह किस प्रकार का न्याय है? एएचपीआई मुख्यमंत्री से अपील करती है कि वे तुरंत हस्तक्षेप कर बिना उचित कारण के रोके गए भुगतान को बहाल करें, ताकि झारखंड के लोग स्वास्थ्य सेवाओं के लिए दर-दर न भटकें।

पीएलवी सम्पा दास व प्रीति पाल ने मानसिक रोगी को पहुंचाई मदद

रांची । जिला विधिक सेव प्राधिकार, रांची के सचिव के मार्गदर्शन में जिला विधिक सेवा प्राधिकार, रांची के पीएलवी अपने-अपने क्षेत्र में जागरूकता काम कर रहे हैं। पीएलवी की नियुक्ति ब्लॉक, अस्पताल, थाना एवं स्कूल-कॉलेज के लिगल-ऐड-क्लिनिक में की गयी है वे सभी पूरे निष्ठा और समर्पन भाव से काम कर रहें हैं तथा जरूरतमंदों को विधिक सेवा मुहैया कराकर सरकार के लाभकारी योजना का लाभ दिला रहे है।
इसी के मद्देनजर सीआईपी में कार्यरत पीएलवी शंपा दास ने रामगढ़ करमा से आए अपने पिता के मानसिक इलाज के लिए बुधन महतो को पहली बार सीआईपी लाया गया है। पीएलवी शम्पा दास ने पूरी तत्परता दिखाते हुए बुधन महतो का ओपीडी में रजिस्ट्रेशन कराया तथा काउंसलिंग कराकर मनोचिकित्सक से संपर्क कर रोगी का सीटी-स्कैन कराने में सहायता पहुंचायी हैं।

रांची में अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन की तैयारी

नवीन मेल संवाददाता। रांची

झारखंड भोजपुरी विकास केंद्र, राँची की काव्य गोष्ठी सह भोजपुरिया मिलन समारोह की अध्यक्षता करते हुए निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव ने अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन कराने का प्रस्ताव रखा जिसका समर्थन संस्था के संरक्षक रामजी यादव ने किया । विशिष्ट अतिथि राँची के प्रमुख समाजसेवी सूरजभान सिंह ने हर संभव सहायता करने की बात कही। ।आचार्य हरेराम त्रिपाठी चेतन जे भोजपुरी पुस्तकालय के लिए पांच सौ पुस्तक देने की घोषणा की। होटल सिटी पैलेस राँची के मालिक विजय राजगढिया ने भी हर संभव मदद करने की घोषणा की। मुख्य अतिथि सेवानिवृत कुलपति वीर कुंवर सिंह विश्वविधालय आरा सुरेश प्रसाद सिंह ने भोजपुरी भाषा के विशेषताओं पर प्रकाश डाला। वरीय सदस्या डा उर्मिला सिन्हा और सचिव बिनोद सिंह गहरवार द्वारा समारोह का शुभारंभ किया गया। समारोह में भोजपुरी भाषा के लेखक- लेखिका, कवि झ कवयित्रियों रश्मि सिन्हा, बिंदु प्रसाद रिद्धिमा, कामेश्वर कुमार कामेश, जितेंद्र तिवारी , नीता शेखर, सूरज श्रीवास्तव, ममता मनीष सिन्हा,रंजन वर्मा उन्मुक्त, मीरा सिंह, सविता गुप्ता, विभा वर्मा ,पूनम वर्मा, डॉक्टर उर्मिला सिन्हा, हिमकर श्याम, कुमार विजेंद्र, नवीन सिंह, मनीषा सहाय सुमन इत्यादि कवियों ने अपनी प्रस्तुति दी। सुनिता सिन्हा ने सरस्वती वंदना की और अर्पणा सिंह ने मुख्य अतिथियों का स्वागत किया । धन्यवाद ज्ञापन सुनीता श्रीवास्तव ने किया।

'हिंदी बोलिए, जिंदगी में अमृत घोलिए' कविता पाठ संपन्न

रांची। केंद्रीय भूमि जल बोर्ड प्रभाग-5 के हरमू स्थित कार्यालय में सोमवार को हिंदी पखवाड़ा का समापन हुआ। 17 से लेकर 30 सितंबर तक चले इस कार्यक्रम में कई प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। कविता पाठ में प्रथम सदानंद सिंह यादव, द्वितीय हसन इमाम अंसारी, तृतीय रविंद्र कुमार पाण्डेय। श्रुति लेख में प्रथम सदानंद सिंह यादव, विवेक कुमार, तृतीय निर्मला कुमारी ।अनुवाद में प्रथम निर्मला कुमारी, द्वितीय दीपक कुमार, तृतीय सदानंद सिंह यादव। निबंध में - प्रथम दीपक कुमार, द्वितीय विनय कुमार श्रीवास्तव, तृतीय रवि रंजन कुमार। सुलेख में- प्रथम बबीता कुमारी शर्मा, द्वितीय विनोद चौधरी, तृतीय ओम प्रकाश सिंह। टिप्पणी लेखन में- प्रथम निर्मला कुमारी,द्वितीय विवेक कुमार, तृतीय राजकिशोर वर्मा तथा टंकण में - प्रथम विवेक कुमार, द्वितीय रविंद्र कुमार पांडेय ,तृतीय गिरिजा शंकर सेनापति विजयी घोषित किए गए।

सिमडेगा की ऑगस्टिना को मिला मार्था फैरेल पुरस्कार

नवीन मेल संवाददाता। रांची

दिल्ली में आयोजित एक समारोह में मोस्ट प्रोमिसिंग इंडिविडियल फॉर जेंडर मैनस्ट्रीमिंग पुरस्कार झारखंड के सिमडेगा जिले की रहने वाली एक सामाजिक कार्यकर्ता ऑगस्टिना को दिया गया। सोरेंग भारत के संविधान के तहत गारंटीकृत अधिकारों के अनुसार आदिवासी महिलाओं और लड़कियों के उत्थान के लिए स्वतंत्र रूप से काम कर रही हैं। ऑगस्टिना का काम समाज के विभिन्न वर्गों तक फैला हुआ है, जिसका उद्देश्य विशेष रूप से आदिवासी महिलाओं को प्रभावित करने वाले मुद्दों, जैसे प्रवासन, मानव तस्करी, डायन-शिकार, घरेलू हिंसा, यौन हिंसा, वन अधिकार और भूमि अधिकार के बारे में जागरूकता बढ़ाना है।

सीसीएल में स्वच्छता ही सेवा के तहत मुख्यालय परिसर में साफ-सफाई

नवीन मेल संवाददाता। रांची

सीसीएल मुख्यालय परिसर में एक स्वच्छ और स्वस्थ पर्यावरण को बढ़ावा देने के लिए, स्वच्छता ही सेवा पहल के तहत एक व्यापक सफाई अभियान आयोजित किया गया। सीसीएल के सीएमडी निलेंदु कुमार सिंह ने इस अभियान का नेतृत्व किया। अवसर विशेष पर निदेशक (वित्त) पवन कुमार मिश्रा, निदेशक (तकनीकी) हरीश दुहान, मुख्य सतर्कता अधिकारी पंकज कुमार तथा अन्य वरीय अधिकारी उपस्थित थे। आज के इस अभियान में बड़ी संख्या में सीसीएल के स्वच्छता मित्र एवं विभिन्न विभागों के कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, साथ ही सभी को सफाई की भावना अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। ज्ञात हो कि सफाई अभियान में कचरा हटाना, सामान्य क्षेत्रों की सफाई करना और उचित अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाओं को सुनिश्चित करना शामिल है। उपस्थित सभी ने सीसीएल मुख्यालय को एक स्वच्छ और अधिक सुखद स्थान बनाने के लिए श्रम दान किया। श्री सिंह ने सभी स्वच्छता मित्रों का अभिनंदन करते हुए, सफाई को हर व्यक्ति के लिए एक मूलभूत जिम्मेदारी के रूप में बनाए रखने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि एक स्वच्छ वातावरण न केवल शारीरिक स्वास्थ्य में योगदान देता है बल्कि स्वच्छ परिवेश सामुदायिक गर्व की भावना को भी बढ़ाता है। सीएमडी सीसीएल ने कहा कि सबसे स्वच्छ विभाग को प्रत्येक महीने पुरस्कृत किया जाएगा।

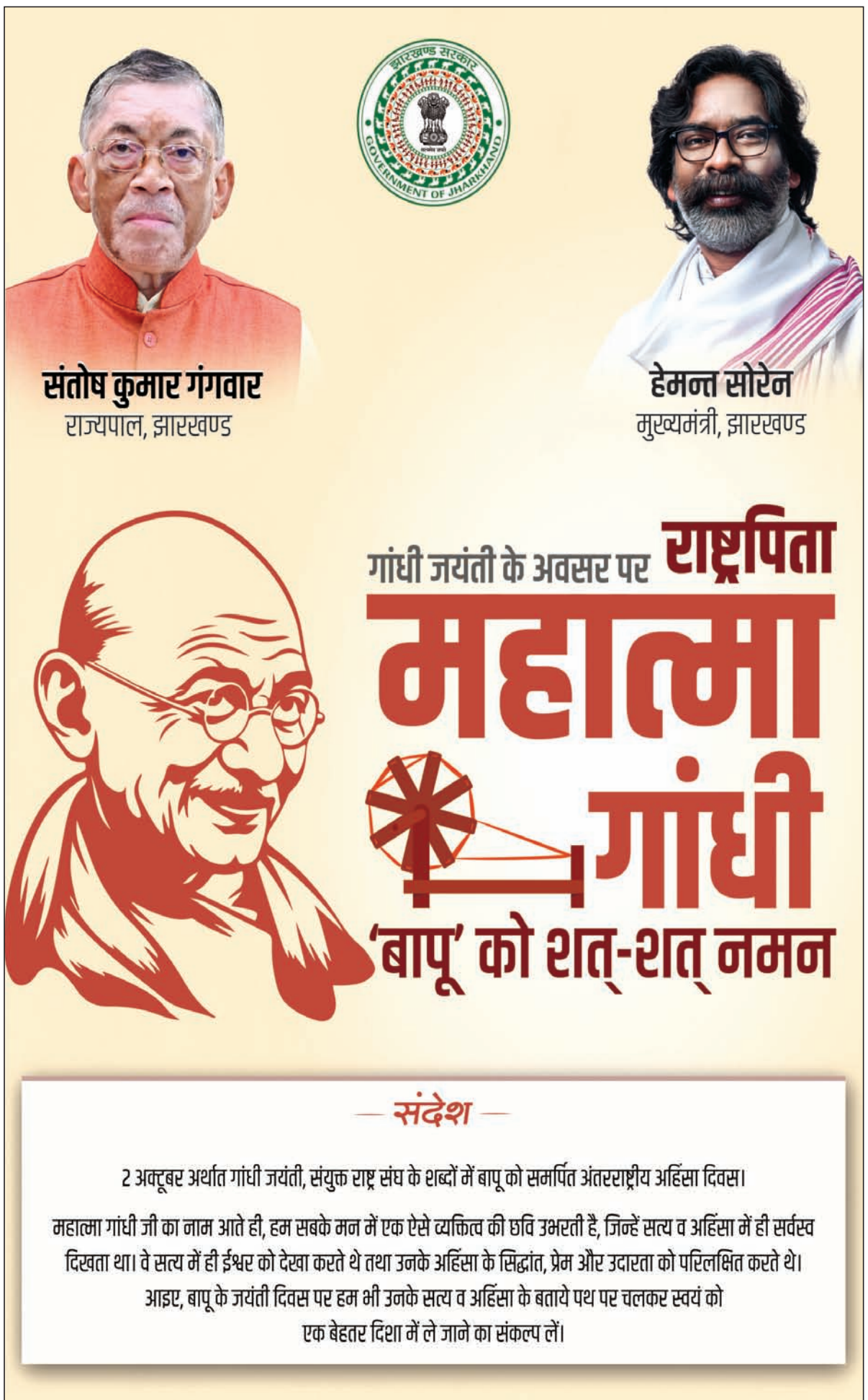

त्रिकोण हवन कुंड में जनसंख्या नियंत्रण थीम पर है पंडाल

नवीन मेल संवाददाता रांची। शारदीय नवरात्र शुरू होने में शेष कुछ दिन ही बच गए हैं। दुर्गा पूजा के वक्त राजधानी दुल्हन सी नजर आती है। दुर्गा पूजा समितियों द्वारा तरह तरह के आकर्षक पंडालों का निर्माण किया जाता है, जो की श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र साबित होता है। कई तरह के काल्पनिक और प्रेरणा दायक पंडालों का निर्माण राजधानी में किया जाता है। इसी क्रम में त्रिकोण हवन कुंड मंदिर समिति इस बार काल्पनिक और आकर्षक पंडाल का निर्माण कर रहा है।

प्रतिमा और पंडाल में क्या है विशेष

मां दुर्गा की प्रतिमा 15 फीट ऊंची होगी। बंगाल के मूर्तिकार पाणेश्वर पाल के द्वारा प्रतिमा का निर्माण किया जा रहा। वहीं पंडाल 110 फीट की लंबाई व 200 फीट की चौड़ाई होगा और 75 फीट ऊंचा होगा। पंडाल निर्माण कार्य रांची के अजय वर्मा के द्वारा करवाया जा रहा। रांची के कुल 15 कारीगर सहित बंगाल के 35 कारीगर कार्यरत है।

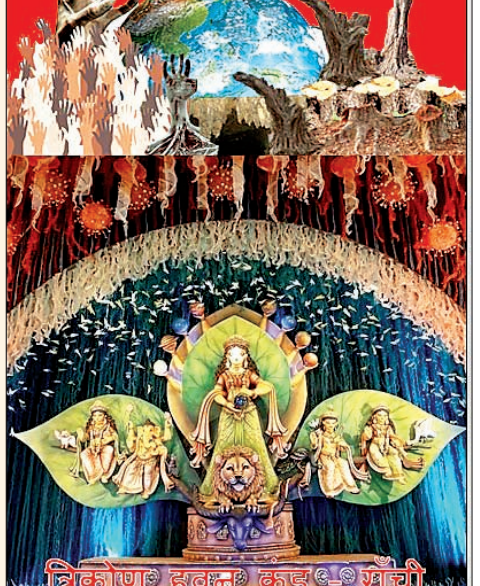

पंडाल और प्रतिमा में खास

समिति के कोषाध्यक्ष ने बताया पंडाल को पर्यावरण की सुरक्षा और जनसंख्या नियंत्रण के संदेश के साथ बनाया जा रहा है। पंडाल के बाहर काफी खूबसूरत नजारा देखने को मिलेगा। पंडाल के बारे में कोषाध्यक्ष राजेश ठाकुर ने बताया कि बढ़ती जनसंख्या को देखते हुए और पर्यावरण का नाश देखते हुए लोगों में यह संकेत फैलाने की कोशिश की जा रही के पर्यावरण की सुरक्षा किया जाए और जनसंख्या पर नियंत्रण किया जाना चाहिए। कितनी खूबसूरती से पंडाल के बाहर पर्यावरण को बचाने और जनसंख्या को नियंत्रित करने के थीम पर सजावट की गई है ठीक वैसे ही खूबसूरती के साथ पंडाल के अंदर जहां मां दुर्गा की प्रतिमा स्थापित होगी उसी जगह पर झारखंड के सांस्कृतिक और प्राचीन त्योहार का दृश्य दिखाया जाएगा।

सत्यमेव जयते
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
भारत सरकार

मेक इन इंडिया
इनोवेशन और विकास
के 10 साल

भारत में EASE OF DOING BUSINESS को बढ़ाने के लिए **42,000 अनुपालनों को कम किया गया और 3800 से अधिक कानूनी प्रावधानों का गैर-अपराधीकरण किया गया**

भारत एशिया में **सबसे कम टैक्स दरों** वाले देशों में से एक है, जो इसे वैश्विक स्तर पर आकर्षक बनाता है

2014-15 में 5,978 से बढ़कर 2023-24 में 1 लाख से अधिक पेटेंट जारी हुए, यह 17 गुना वृद्धि का एक उत्कृष्ट उदाहरण है

2014-15 की तुलना में खिलौनों के निर्यात में **227% की हुई वृद्धि**

राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा विकास कार्यक्रम के अंतर्गत **12 नई औद्योगिक स्मार्ट सिटी स्वीकृत जिनसे 10 लाख प्रत्यक्ष और 30 लाख तक अप्रत्यक्ष रोजगार उत्पन्न होने की संभावना**

वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट से सूक्ष्म-उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ावा

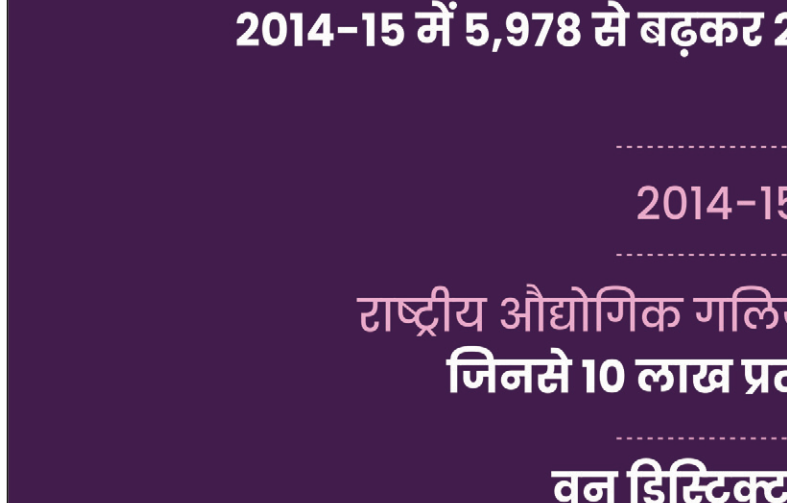

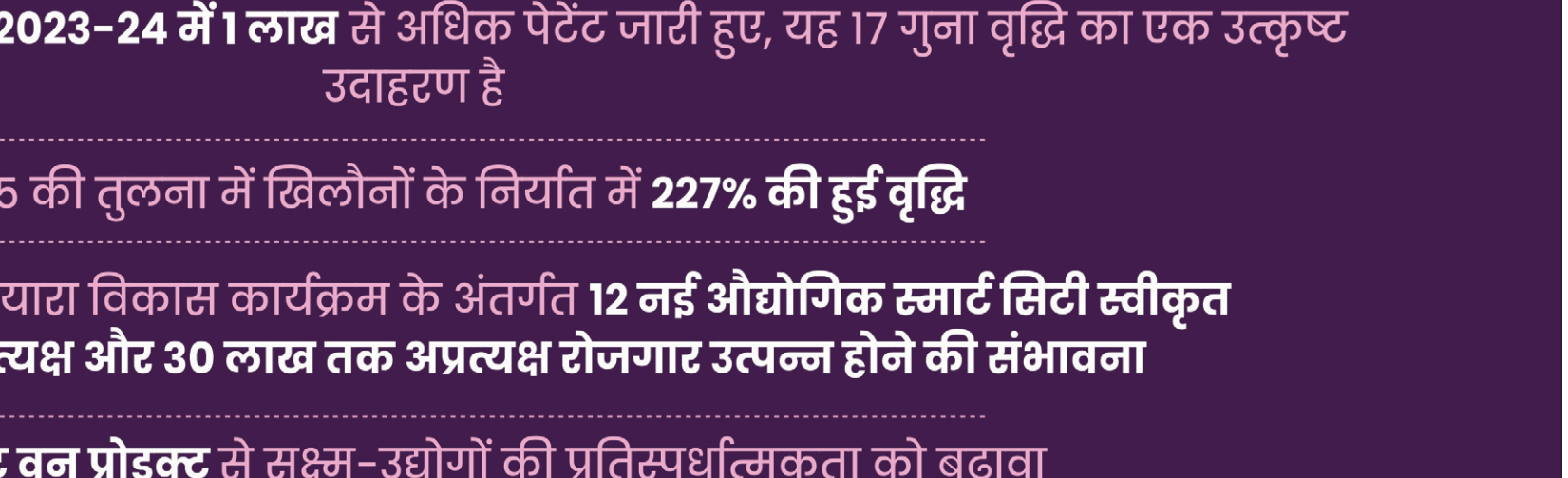

CBC 05201/13/0019/2425

एक नजर

सफाई अभियान चलाना महात्मा गांधी को सच्ची श्रद्धांजलि : उदयभान

रांची। भारतीय डाक विभाग के रांची डाक परिमंडल एवं रांची नगर निगम के संयुक्त सहयोग से 2 अक्टूबर को गांधी जयंती के दिन धुर्वा डैम के आस पास के इलाकों में सफाई अभियान चलाया जाएगा। सफाई अभियान कार्यक्रम के पश्चात इंडिया पोस्ट के वरीय अधिकारियों द्वारा रांची नगर निगम के सफाई कर्मियों को उनके निःस्वार्थ सेवा के लिए उपहार देकर सम्मानित किया जाएगा। पूरे कार्यक्रम का आयोजन रांची परिमंडल के वरिष्ठ डाक अधीक्षक उदयभान सिंह के नेतृत्व में किया जाएगा। धुर्वा की नगर निगम पार्षद प्रतिनिधि भी सफाई कर्मियों का हौसला बढ़ाने विशेष रूप से मौजूद रहेंगी। वरीय डाक अधीक्षक उदयभान सिंह ने बताया कि गांधी जयंती के दिन किसी पिछड़े इलाके में सफाई अभियान आयोजित करना एवं सफाई कर्मियों को उनकी सेवा के लिए सम्मानित करना ही महात्मा गांधी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

भवनाथपुर प्रतिनिधि की मान्यता रद्द

रांची। गढ़वा के भवनाथपुर प्रखंड के राष्ट्रीय नवीन मेल प्रतिनिधि किशन श्याम विमल का नवीन मेल से कोई संबंध नहीं है । संस्थान द्वारा जारी पहचान पत्र का दुरुपयोग करने जैसे गंभीर आरोपों के कारण समाचार संकलन के लिए जारी उनका पहचान पत्र रद्द कर दिया गया है । इसकी लिखित सूचना राज्य के सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के अलावा गढ़वा जिला प्रशासन को दे दी गई है।

रेलवे मार्केट की दुकान में हुई चोरी

मुरी। राजकीय रेल थाना क्षेत्र अंतर्गत सोमवार की रात्रि में रेलवे मार्केट के एक दुकान में एस्बेस्टस तोड़कर चोरी करने का मामला प्रकाश में आया है। दुकान के मालिक अजीत कुमार ने बताया कि प्रतिदिन की भांति सोमवार को रात्रि में दुकान बंद कर अपने घर चले गए परंतु मंगलवार को प्रातः जैसे ही उन्होंने अपने दुकान को खोला तो देखा कि छत का एस्बेस्टस तोड़कर उनके दुकान में चोरी हो गई है।

आओ गांधी को जानें विषय पर कार्यक्रम आयोजित

चान्हो। मंगलवार को आदर्श ग्रामीण पब्लिक स्कूल टांगर में आओ गांधी को जाने के विषय में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रधानाध्यापक अमीन अंसारी ने बच्चों को महात्मा गांधी के जीवन, उपलब्धियों और नैतिक मूल्यों के बारे में बताया। उन्होंने गाँधी जी के बारे में बताते हुए कहा कि उनका जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। उन्होंने यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन में कानून की पढ़ाई करने से पहले दक्षिण अफ्रीका में अपना करियर शुरू किया, जहां उन्होंने नस्लीय अन्याय के खिलाफ अभियान चलाया। गांधी के अहिंसक प्रतिरोध सिद्धांत, नमक मार्च और अंग्रेजों के साथ असहयोग की मांग ने लाखों लोगों को हिंसा का सहारा लिए बिना स्वतंत्रता की लड़ाई में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।

प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम को लेकर कार्यशाला का आयोजन

स्वावलंबी भारत बनाने में प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम निभा रहा मुख्य भूमिका

नवीन मेल संवाददाता। रांची

खादी और ग्रामोद्योग आयोग, भारत सरकार के खादी और ग्रामोद्योगी कार्यक्रमों का संचालन करने के साथ ही साथ प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी) का राष्ट्रीय नोडल अभिकरण के रूप में संचालन करता है। जिसका लक्ष्य ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बेरोजगार जो स्वयं से उद्योग लगाना चाहते हैं, को सहायता प्रदान करना है। वर्तमान में इस योजना के अन्तर्गत बैंक से ऋण के रूप राशि 50 लाख तक विनिर्माण क्षेत्र में तथा 20 लाख तक की राशि सेवा क्षेत्र में दिए जाने का प्रावधान है। उक्त ऋण राशि में 15 से 35 प्रतिशत तक की राशि भारत सरकार से मार्जिन मनी सब्सिडी के रूप में सहायतार्थ प्रदान की जाती है। प्रधानमंत्री की आत्मनिर्भर भारत एवं स्वावलंबी भारत बनाने की दिशा में प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम मुख्य भूमिका निभा रही है। विदित हो कि प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम भारत सरकार की एक महत्वाकांक्षी योजना है, जिसपर एमएसएमई मंत्रालय के साथ प्रधानमंत्री के कार्यालय से निगरानी की जाती है। प्रधानमंत्री का देश को स्वावलंबी बनाने की दिशा में जो प्रयास है, उसमें इस योजना की महत्ती भूमिका रही है। पिछले छह वर्षों 2018-19 से 2023-24 तक पीएमईजीपी योजना के तहत झारखण्ड प्रदेश में कुल 10498 नई इकाइयों की स्थापना हेतु कुल मार्जिन मनी सब्सिडी रु. 262.16 करोड़ के रूप में वितरित की जा चुकी है, जिससे लगभग 84984 बेरोजगारों को नये रोजगार के अवसर प्रदान किए गए। वर्तमान वित्तीय वर्ष 2024-25 में मार्जिन मनी राशि का लक्ष्य 1540 परियोजनाओं की स्थापना हेतु रु. 4364.22 करोड़ निर्धारित किया गया है। इस वित्तीय वर्ष में लगभग 36.45 प्रतिशत आबंटित लक्ष्य को प्राप्त कर लिया गया है। हालांकि अभी भी 1549 परियोजनाओं की

सविमं करकट्टा में स्वदेशी सप्ताह का समापन

स्वदेशी अपनाने से देश के युवाओं को मिलेगा रोजगार

खलारी। सरस्वती विद्या मंदिर करकट्टा में स्वदेशी सप्ताह मनाया गया। विगत 25 सितंबर से 01 अक्टूबर तक विद्यालय में स्वदेशी सप्ताह मनाया गया। इसी क्रम में मंगलवार को विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने स्वदेशी के बारे में अपना-अपना विचार व्यक्त किया। छात्राओं ने कहा कि स्वदेशी वस्तु का उपयोग करेंगे और विदेशी वस्तु का बहिष्कार करना है। केवल स्वदेशी वस्तु नहीं, स्वदेशी भाषा, वेश, विचार, आचरण आदि सभी का प्रयोग करना है। इस दौरान बहिष्कार के रूप में विदेशी वस्तुओं को जलाया गया। प्रधानाचार्य शालिग्राम सिंह ने बताया कि स्वदेशी अपनाना चाहिए, जिससे देश का पैसा अपने देश में रहेगा और युवकों को रोजगार का अवसर मिलेगा। सभी को स्वदेषी अपनाने का शपथ दिलाया गया। स्वदेशी नारा लगाकर कार्यक्रम का समापन किया गया। धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। इस मौके पर संजीवकुमार सिंह, गौरीशंकर कामिला, पूनम पाठक, नूतन सिंह, सूरज कुमार, बसंती कुमारी, रीमा कुमारी आदि उपस्थित थे।

न्यूज बॉक्स

गुलाम अहमद मीर से मिले पूर्व डीडीसी डॉ परमेश्वर भगत

रांची। मंगलवार को पूर्व डीडीसी सह मांडर विधानसभा क्षेत्र के भावी विधायक प्रत्याशी डॉ परमेश्वर भगत ने कांग्रेस के झारखंड विधानसभा चुनाव प्रभारी गुलाम अहमद मीर से किए मुलाकात। इस दौरान डॉ परमेश्वर भगत ने आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर अपनी प्रबल दावेदारी के साथ टिकेट के लिए अनुरोध किया। डॉ परमेश्वर भगत ने जनाब गुलाम अहमद मीर को अवगत कराया की मेरे 30 वर्ष के प्रशासनिक कार्यकाल में हमेशा असहाय और गरीबो के लिए सेवा किया हूं । उप विकास आयुक्त के पद पर रहते हुए उत्कृष्ट कार्य हेतु ग्रामीण विकास मंत्रालय के द्वारा मुझे सम्मानित किया गया है साथ ही कोरोना काल में उत्कृष्ट कार्य के लिए भी वर्तमान राष्ट्रपति एवं तत्कालीन राज्यपाल झारखंड, श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने भी मुझे सम्मानित किया है। एक अवसर ऐसा भी मिला है जब जनरल लोकसभा चुनाव में ऑब्जर्वर के तौर पर तमिलनाडु साथ ही जतरा जिला के नगरपालिका चुनाव में ऑब्जर्वेर के रूप भी ग्रामीणों एवं जिला प्रशासन के सहयोग से शांति पूर्ण, निष्पक्ष तरीके से चुनाव कराया हूं।

15 दिनों से जला है ट्रांसफार्मर, लोग परेशान

चान्हो। प्रखंड के बलसोकरा गुलजार रोड़ में 200 केवी ट्रांसफार्मर पिछले 15 दिनों से जला हुआ है जो अभी तक नहीं लगा है। मंगलवार को ग्रामीणों ने बताया कि जले हुए ट्रांसफार्मर को 13 दिन पहले ही टीआरडब्ल्यू इटकी भेज दिया गया, मगर अभी तक ट्रांसफार्मर को नहीं लगा है। ट्रांसफार्मर के नही लगने से ग्रामीण बहुत परेशान हैं। लोगों को मोबाइल चार्ज करने के लिए भी दूसरे जगह जाना पड़ रहा है।

रोस्पा टावर में सभी तरह के वाद्य यंत्र हैं उपलब्ध

रांची। वाद्यंत्र के शौकीन लोग आज के समय में काफी परेशान नजर आते है, क्योंकि उन्हें सही कीमत पर सही वाद्यंत्र नहीं मिल पता है। लेकिन आज हम आपको बताएंगे बॉम्बे म्युस्जिकल स्टोर की जहां भक्ति वाद्ययंत्र से लेकर इन्डियन, वेस्टर्न और क्लासिकल वाद्यंत्र सबसे कम कीमतों पर उपलब्ध है।

तनिष्क की ट्रेडिशनल और लाइट वेट ज्वेलरी खरीदारों की पसंद

रांची। त्योहारों का सीजन आ चुका है। साजो-श्रृंगार के समान से बाजार भी जगमगा रहा है। वहीं ज्वेलरी दुकान में भी खरीदारों के मन को छू लेने वाले आभूषण भी आ चुके हैं। तनिष्क मैनेजर स्वरूप कुंडू ने बताया त्योहारों के समय में खरीदारों को सबसे अलग और आकर्षक आभूषण चाहिए जो तनिष्क में आसानी से सही कीमतों पर ग्राहकों के लिए उपलब्ध कराया जाता है। ट्रेंड के अनुसार कलेक्शन भी उपलब्ध है। सोना चांदी दुकानों में बढ़ते चोरी और लूट पर तनिष्क के मैनेजर स्वरुप कुंडू ने कहा ज्वेलरी दुकान संचालकों को अपनी सुरक्षा का विशेष ध्यान रखना चाहिए। वहीं प्रशासन की मजबूती और तैनाती भी होनी चाहिए ताकि चोरी की घटनाओं से बचा जा सके।

श्री श्याम मंदिर में श्री सुंदरकांड पाठ का आयोजन

नवीन मेल संवाददाता। रांची

श्री श्याम मित्र मंडल द्वारा हरमू रोड के श्री श्याम मंदिर में आज 121 वां श्री सुंदरकांड श्री हनुमान चालीसा का पाठ का आयोजन किया गया। राम दूत अतुलित बल धामा अंजनि पुत्र पवनसुत नामा के गायन व बजरंग बली की जय जयकारों से हरमू रोड का श्री श्याम मंदिर गूंज रहा था। मंडल के उपमंत्री अनिल नारनोली ने महाबली बजरंगबली की ज्योति प्रज्वलित कर केसरिया पेड़ा गुड़ चना फल का भोग अर्पित कर श्रीरामचरितमानस ग्रंथ की पूजा करके पाठ वाचकों का चंदन वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। पाठ वाचक मनीष सारस्वत ओम शर्मा ने अपने सहयोगियों के साथ ढोलक ढपली के स्वर के साथ श्री गणेश वंदना कर श्री हनुमान चालीसा का पाठ किया ।सुंदरकांड का संगीतमय पाठ उपस्थित जनों से करवाया। भक्तजन श्री हनुमान जी की आराधना में लीन थे। पाठ के मध्य में भजनों का गायन भी किया गया। श्री सुंदरकांड के पाठ के उपरांत पुनः श्री हनुमान चालीसा का पाठ करके महाआरती करके भक्तजनों को प्रसाद वितरित किया गया। पुष्पा देवी पोद्दार ने केसरिया पेड़ा सेवा श्रवण ढानढनिया ने चना प्रसाद सेवा मुकेश मित्तल ने गिरिगोला सेवा एवम राजेश जयसवाल ने फल प्रसाद सेवा निवेदित की। इस अवसर पर मंडल के अध्यक्ष सुरेश सरावगी प्रथम महामंत्री विश्वनाथ नारसरिया श्रवन ढानढनिया अनिल नारनोली स्नेह पोद्दार सहित बड़ी संख्या में भक्तजन उपस्थित थे।

दुर्गा पूजा के दौरान असामाजिक तत्वों से निपटा जाएगा : संतोष

लापुंग। लापुंग थाना परिसर में प्रखंड विकास पदाधिकारी उषा मिंज की अध्यक्षता में दुर्गा पूजा को लेकर शांति समिति की बैठक हुई। मौके पर ऊषा मिंज ने कहा कि दुर्गा पूजा मनाने वाले पूजा समिति पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता शांति व्यवस्था के लिए अपनी कमिटी बनाए और पूजा शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराना सुनिश्चित करेंगे। थाना प्रभारी संतोष कुमार यादव ने कहा कि पूजा में शरारती तत्वों को चिन्हित कर ग्रामीण उसकी सूचना थाना को दें ताकि समय रहते उस पर कड़ी कारवाई किया जा सके। शांति समिति के सदस्यों ने बताया कि लापुंग प्रखंड में लापुंग, दानेकेरा, ककरिया और दोलैचा में दुर्गा पूजा मनाया जाता है। सभी पूजा पंडालों में शांति व भाई चारगी से पूजा पाठ मनाने का संकल्प लिया गया। बीडीओ ऊषा मिंज ने कहा कि दुर्गा पूजा बुराई पर अच्छाई का त्योहार है। उन्होंने इसे मिल जुल कर मनाने की बात कही। कमिटी मेंबर के लोगो ने सादगी से दुर्गा पूजा मनाने पर सहमति बनी।

परेश गट्टानी का देवघर में हुआ स्वागत

रांची। गोड्डा चैंबर ऑफ कॉमर्स के शपथ ग्रहण समारोह में गोड्डा जाने के क्रम में फेडरेशन ऑफ झारखंड चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज, रांची के 25 सितंबर को नवनिर्वाचित अध्यक्ष परेश गट्टानी और सह सचिव विकास विजयवर्गीय देवघर गए । स्थानीय चैंबर अध्यक्ष आलोक मल्लिक के साथ बाबा बैद्यनाथ का दर्शन किया गया। बाबा से राज्य में उद्योग और व्यापार की प्रगति और खुशहाली की कामना की। संताल परगना चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज, देवघर ने चैम्बर अध्यक्ष और सह सचिव का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया तथा एक संक्षिप्त अनौपचारिक बैठक की। बैठक में संथाल परगना चेंबर के अध्यक्ष आलोक मल्लिक, सचिव रितेश टिबरेवाल, पूर्व अध्यक्ष गोपाल कृष्ण शर्मा और संजीत कुमार सिंह उपस्थित थे। फेडरेशन के अध्यक्ष परेश गट्टानी ने कहा कि निर्वाचित होने के एक सप्ताह के अंदर बाबा के दर्शन करने का सौभाग्य मिला।

भाजपा नेताओं पर पीड़क कार्रवाई नहीं करने का आदेश बरकार

नवीन मेल संवाददाता। रांची

रांची में 23 अगस्त को भाजयुमो की 'युवा आक्रोश रैली' के दौरान बवाल को लेकर पुलिस की ओर से दर्ज कराए गए केस में पूर्व केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा, केंद्रीय राज्य मंत्री संजय सेठ, पलामू के भाजपा सांसद बीडी राम सहित 21 भाजपा नेताओं को झारखंड हाईकोर्ट से राहत मिली है। कोर्ट ने इनके खिलाफ पुलिस की ओर से किसी भी तरह की पीड़क कार्रवाई पर रोक लगा दी है। कोर्ट ने इस मामले में राज्य सरकार को जवाब दाखिल करने का भी निर्देश दिया है। रांची के मोरहाबादी मैदान में भाजपा और भारतीय जनता युवा मोर्चा ने झारखंड में बेरोजगारी, सरकारी नौकरी की परीक्षाओं में धांधली, रिजल्ट में देरी, अनुबंध कर्मियों के स्थायीकरण जैसे सवालों को लेकर युवा आक्रोश रैली का आयोजन किया था। इस दौरान जमकर बवाल हुआ था। रैली के बाद पुलिस की लगाई बैरिकेडिंग को लांघकर सीएम आवास की ओर से बढ़ने की कोशिश कर रहे प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच जमकर संघर्ष हुआ था। दोनों पक्ष से कई लोग घायल हो गए थे। इस मामले में रांची पुलिस ने लालपुर थाने में 51 भाजपा नेताओं के खिलाफ नामजद और 12 हजार अज्ञात लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई थी। इन सभी पर साजिश के तहत पुलिस पर हमला करने, निषेधाज्ञा भंग करने और बिना इजाजत सीएम आवास की ओर मार्च करने का आरोप लगाया गया है। इस मामले में प्रदेश भाजपा अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी, झारखंड विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष अमर बाउरी सहित 18 नेताओं पर किसी तरह की कार्रवाई पर हाईकोर्ट ने पहले ही रोक लगाई थी।

महाराजा अग्रसेन जी की जयंती कल

महाराजा अग्रसेन का जन्म द्वापर युग के अंत में हुआ था : संजय सर्राफ

नवीन मेल संवाददाता। रांची

जिला मारवाड़ी सम्मेलन के संयुक्त महामंत्री सह प्रवक्ता एवं अग्रवाल सभा के पूर्व प्रवक्ता संजय सर्राफ ने कहा है कि इस वर्ष महाराजा अग्रसेन जयंती 3 अक्टूबर दिन गुरुवार को मनाई जाएगी। अश्विन शुक्ल प्रतिपदा अर्थात नवरात्रि के प्रथम दिवस को महाराज अग्रसेन के जन्म दिवस के रूप में अग्रसेन जयंती मनाई जाती है। महाराज अग्रसेन का जन्म द्वापर युग के अंत मे भगवान श्री कृष्ण के समकालीन हुआ था। महाराजा अग्रसेन अग्रवाल अर्थात वैश्य समाज के जनक कहे जाते है। विश्व समाज धार्मिक मान्यतानुसार इनका जन्म सूर्यवंशीय महाराजा वल्लभ सेन के अन्तिमकाल और कलियुग के प्रारम्भ में आज से 5187 वर्ष पूर्व हुआ था। उनके राज में कोई दुखी या लाचार नहीं था। बचपन से ही वे अपनी प्रजा

में बहुत लोकप्रिय थे। वे एक धार्मिक, शांति दूत, प्रजा वत्सल, हिंसा विरोधी, बली प्रथा को बंद करवाने वाले, करुणानिधि, सब जीवों से प्रेम, स्नेह रखने वाले दयालु राजा थे। ये बल्लभ गढ़ और आगरा के राजा बल्लभ के ज्येष्ठ पुत्र, शूरसेन के बड़े भाई थे ।महाराजा अग्रसेन भगवान राम के पुत्र कुश के 34 वीं पीढ़ी के हैं । 15 वर्ष की आयु में, अग्रसेन जी ने पांडवों के पक्ष से महाभारत युद्ध लड़ा था । भगवान कृष्ण ने टिप्पणी की है कि अग्रसेनजी कलयुग में एक युग पुरुष और अवतार होंगे जो जल्द ही द्वापर युग की समाप्ति के बाद आने वाले हैं ।

पैनल व मोटर जलने से पांच पंचायतों का जलापूर्ति ठप

खलारी। खलारी के पांच पंचायतों में विगत एक सप्ताह से जलापूर्ति बाधित है। बहुग्रामीण जलापूर्ति योजना के तहत प्रखंड के बुकबुका, खलारी, चुरी दक्षिणी, हुटाप व चुरी मध्य पंचायत में बुकबुका महावीरनगर स्थित पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के वाटर फिल्टर प्लांट से पानी सप्लाई किया जाता है। चुरी दक्षिणी पंचायत के करंज तोरा से गुजरी सपही नदी में स्थित इंटेक-वेल से फिल्टर प्लांट तक पानी लाया जाता है। बताया जा रहा है कि इंटेक-वेल का इलेक्ट्रिक पैनल एवं मोटर पंप जल गया है। पैनल व मोटर जल जाने के कारण फिल्टर प्लांट को पानी सप्लाई नहीं हो पा रहा है। बहुग्रामीण जलापूर्ति योजना संचालन समिति के सदस्य सह चुरी दक्षिणी पंचायत मुखिया मलका मुंडा ने बताया कि 26 सितंबर को इंटेक-वेल में लगा इलेक्ट्रिक पैनल एवं मोटर पंप शार्ट सर्किट होने के कारण जल गया है।

महाराजा अग्रसेन जी की निकाली गई भव्य शोभायात्रा

नवीन मेल संवाददाता। रांची

अग्रवाल सभा के तत्वाधान में अग्रसेन जयंती महोत्सव सह 48 वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर भव्य शोभायात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा महाराजा अग्रसेन भवन से प्रारंभ हुई जो की रांची नगर के प्रमुख मार्गों अपर बाजार, बंशीधर अड़ूकिया रोड, साबू रिक्शा रोड, कोतवाली शहीद चौक, पुस्तक पथ, गांधी चौक, मारवाड़ी टोला, नॉर्थ मार्केट रोड, ईस्ट मार्केट रोड, कोर्ट सराय रोड, होते हुए पुनः अग्रसेन भवन में समापन हुई। अपराह्न 3 बजे महाराजा अग्रसेन जी की पूजा अर्चना एवं प्रसाद वितरण के साथ भव्य शोभा यात्रा मे महाराजा अग्रसेनजी की मनमोहक आकर्षक झांकी निकाली गई। शोभायात्रा रांची के प्रमुख मार्ग से गुजरी। जगह-जगह सामाजिक संगठनों माहेश्वरी सभा, मारवाड़ी युवा मंच, मारवाड़ी सहायक समिति, मारवाड़ी ब्राह्मण सभा, डॉ लालचंद बगड़िया समिति, श्री जीण माता सेवा

समिति, दिगंबर जैन मंदिर समिति, सहित अन्य संस्थाओं के लोगों ने अग्रसेन जी को पुष्प की वर्षा, आरती एवं प्रसाद वितरण किया। पूरा नगर अग्रसेन जी के जयकारा से गुंजमान रहा। शोभा यात्रा में शामिल भजन गायकों में सुमधुर मनमोहक भजनों से पूरे माहौल को अग्रसेनमय बना दिया। तथा भजनों पर भक्तों को खूब झुमाया। शोभा यात्रा में पुरुष एवं महिलाएं पारंपारिक वेशभूषा में अग्रध्वज लेकर शामिल हुए। शोभा यात्रा का संचालन अग्रवाल युवा सभा ने किया। शोभा यात्रा मे प्रमोद कुमार अग्रवाल, अनिल अग्रवाल, मनोज चौधरी, सुरेश चंद्र अग्रवाल, ललित कुमार पोद्दार, विनोद कुमार जैन, सज्जन पाड़िया, पवन पोद्दार, कौशल राजगढ़िया, चंडी प्रसाद डालमिया, निर्मल बुधिया, अमर अग्रवाल, संजय सर्राफ, विजय कुमार खोवाल, अजय डीडवानिया, कमल खेतावत, मंजीत जाजोदिया, विनोद टिबडेवाल, सुनील केडिया, सुनील पोद्दार, रौनक झुनझुनवाला, विशाल पाड़िया, विनीता सिंघानिया, रीना सुलेखा, सहित बड़ी संख्या मे महिलाएं पुरुष शामिल थे।

दो सड़क दुर्घटना में युवक और बच्चा घायल

अड़की। खुंटी तमांड़ रोड पर दो अलग-अलग सड़क दुर्घटनाओं में एक युवक और एक बच्चा गंभीर रूप से घायल हो गए। पहली घटना हुंठ आवासीय विद्यालय के पास घटित हुई । जहां 12 वर्षीय दानियल हेमरोम अपने दोस्तों के साथ नहाने के बाद वापस जाते समय अज्ञात वाहन की टक्कर से गंभीर रूप से घायल हो गया। दोस्तों ने तुरंत कल्याण अस्पताल पहुंचाया, जहां से उसे खुंटी सदर अस्पताल रेफर कर दिया गया। दूसरी घटना आड़ा घाटी में हुई, जहां स्कूटी सवार बिरबांकी निवासी सानिका मुंडा को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी, जिससे स्कूटी भी क्षतिग्रस्त हो गई। युवक बुरी तरह से घायल हो गया । और कुछ देर तक सड़क पर पड़ा रहा इसी दौरान अड़की थाना के पुलिस कर्मी तमाड़ खूंटी सड़क से गुजर रहे थे, जिन्होंने घायल युवक को 108 एम्बुलेंस बुलाकर सदर अस्पताल खुंटी भेज दिया।

बच्चों का सर्वांगीण विकास ही हम सभी का लक्ष्य : लीलावती

नवीन मेल संवाददाता। लापुंगलापुंग प्रखंड संसाधन केंद्र में मंगलवार को प्रखंड के सभी सरकारी एवं अल्पसंख्यक विद्यालयों के प्रधान शिक्षकों की गुरुगोष्ठी आयोजित की गई। गुरुगोष्ठी के दौरान सभी विद्यालयों के प्रधान शिक्षकों को प्रोजेक्ट इंपैक्ट कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत्त रहने का निर्देश दिया गया। इस मौके पर प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी लीलावती तिर्की ने कहा कि विभाग के निदेर्शों का त्वरित गति से अनुपालन करना, विद्यालय के माहौल को शैक्षणिक दृष्टिकोण से सुदृढ़ करना, पाठ योजना बनाकर स्कूलों में पढ़ाना एवं बच्चों का सर्वांगीण विकास ही हम सभी का लक्ष्य होना चाहिए। उन्होंने शिक्षक शिक्षिकाओं को ई विद्यावाहिनी में स्कूल प्रोफाइल को अपडेट करने तथा टीचर प्रोफाइल को भी कंप्लीट कर लिंक भरने का निर्देश दिया। इस मौके पर सभी विद्यालयों के प्रधान शिक्षकों ने अपने अपने विद्यालयों की समस्यायों को रखा और समस्याओं का समाधान करने का आग्रह किया। शिक्षकों ने कहा कि पीटीएम एवं स्कूल रुआर कार्यक्रम का लिंक पहले ही भरा जा चूका है। इसके बावजूद दुबारा विद्यालयों का नाम आना दुर्भाग्यपूर्ण है। गुरुगोष्ठी के दौरान प्रयास कार्यक्रम, प्रोजेक्ट रेल की साप्ताहिक परीक्षा का रिपोर्ट सहित मिड डे मील का रिपोर्ट सभी प्रधान शिक्षकों ने जमा किया। इस मौके पर बीआरपी रेशम शाहदेव, लालकेश्वर यादव, सीआरपी सुनील कुमार गुप्ता, चंद्रमोहन ठाकुर, मनोज कुमार साहु, अजीत कुमार सिंह, मंटु कुमार साहु लाल मिथिलेश कुमार सिंह, विद्यालय के प्रधान शिक्षकों में यू धनेश्वर राव, उपेंद्र सिंह, जीवेश्वर साय, प्रकाश उरांव, राणा जितेन्द्र, सुनील नायक, संजय कुमार सिंह, जुबैर अंसारी, चारो उरांव, हफिंन्द्र प्रधान, विनोद लकड़ा, देवराम भगत, सागेन होरो, अमर पहान, सुखलाल मुंडा, संजय कुमार महतो, नूतन कुमारी, इभांजालिस्ता टोप्पनो, सुरेंद्र गोप, सुशीला देवी, उषा सरोजिनी मिंज, वीणा केरकेट्टा सहित दर्जनों शिक्षक शिक्षकों में मौके पर मौजूद थे।

एक नजर

शिक्षित महिलाओं का परिवार के विकास में अहम योगदान: गौतम

कोडरमा। राष्ट्रीय महिला आयोग के सहयोग से जिला विधिक सेवा प्राधिकार के तत्वावधान में मंगलवार को महिलाओं के लिए विधिक जागरुकता शिविर सह कार्यशाला का आयोजन पथलडीहा पंचायत भवन के सभागार में किया गया। उदघाटन बतौर मुख्य अतिथि प्राधिकार के सचिव गौतम कुमार ने किया। उन्होंने कहा कि शिक्षित महिलाओं का परिवार के विकास में अहम योगदान होता है। उन्होंने कहा कि महिलाओं के हितों की रक्षा के लिए प्राधिकार कृत संकल्प है। उन्होंने महिलाओं के लिए बनाए गए कई कानूनों पर विस्तृत चर्चा की और कहा कि जब भी किसी महिला को किसी भी प्रकार की निःशुल्क विधिक सहायता की जरूरत हो, तो प्राधिकार में आकर जानकारी ले सकती हैं।

डीसी ने दुर्गापूजा को लेकर जिलास्तरीय शांति समिति की बैठक आयोजित

कोडरमा । बिरसा सांस्कृति भवन में जिला दंडाधिकारी सह डीसी मेघा भारद्वाज और एसपी अनुदीप सिंह ने शांतिपूर्ण और सौहार्द्रपूर्ण माहौल में दुर्गापूजा के आयोजन को लेकर जिलास्तरीय शांति समिति की बैठक की। डीसी मेघा भारद्वाज ने कहा कि सोशल मीडिया को लेकर उन्होंने कहा कि असामाजिक तत्व सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने के उद्देश्य से गलत तथ्यों को फारवर्ड,शेयर करते हैं। सभी लोगों को इसको लेकर सतर्क रहने की जरूरत है। किसी भी तरह के फेक वायरल न्यूज को फॉरवर्ड नहीं करें। उन्होंने लोगों से शांति ओर विधि- व्यवस्था को बरकरार रखते हुए पूजा करेंगे। जिला प्रशासन द्वारा त्योहार में सभी जरूरी सुविधाएं सुचारू रूप से संचालित हो, इसकी लगातार समीक्षा की जा रही है। सुरक्षा व्यवस्था, विधि-व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए कार्य किए जा रहे हैं।

डॉक्टर और स्वास्थ्यकर्मियों ने तंबाकू का सेवन नहीं करने की ली शपथ

कोडरमा। गांधी जयंती के पूर्व मंगलवार को राष्ट्रीय तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम द्वारा सदर हॉस्पिटल परिसर में तंबाकू निषेध के लिए सामूहिक शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान सिविल सर्जन डॉ अनिल कुमार ने बताया तंबाकू के दुष्परिणाम दूरगामी होगा। इसलिए खासकर युवाओं को इससे दूर रहने की जरूरत है। गांधी जी के समर्पण और त्याग से हम युवाओं को सिख लेना चाहिए और तंबाकू और इसके उत्पाद का त्याग करना चाहिए। जिला कुष्ठ निवारण पदाधिकारी डॉ रमण कुमार ने बताया कि तंबाकू जानलेवा है। इसके सेवन से शरीर के प्रतिरोधक क्षमता घटने लगती है। इससे शरीर में कई तरह के बीमारियां उत्पन्न होती है। जिला मलेरिया पदाधिकारी डॉ मनोज कुमार ने बताया कि तंबाकू सेवन से कई जानलेवा बीमारियां उत्पन्न होती है।

सड़क दुर्घटना में महिला की मौत के 21 घंटे के बाद भी जाम नहीं हटा

जाम में फंसे स्कूली बच्चे और यात्री काफी परेशान देखे गये

पीड़ित परिवारों को सीओ व थाना प्रभारी ने कहा कि सरकार के प्रावधान के अनुसार जो भी मुआवजा होगा सभी प्रकार की राशि प्राप्त जल्द दी जायेगी

नवीन मेल संवाददाता। बरकट्ठा सीएचसी के समीप सोमवार को देर शाम सड़क दुर्घटना में महिला की दर्दनाक मौत हो गई। वहीं 21 घंटे बीत जाने के बाद भी सड़क से जाम नहीं हट पाया। ज्ञात हो की सोमवार देर शाम साप्ताहिक बाजार बरकट्ठा से बाइक से लौट रहे पति पत्नी की सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बरकट्ठा के समीप अज्ञात वाहन की चपेट में आने से पत्नी लीला देवी की दर्दनाक मौत हो गई थी और पति सूरज बास्के गंभीर रूप से घायल हो गया था। जिसके बाद आक्रोशित लोगों ने सड़क को दोनों और से जाम कर दिया। जिससे स्कूली बच्चे और यात्री फंसने के कारण काफी परेशान देखे गये। घटना की सूचना प्राप्त होते ही अंचल अधिकारी श्रवण कुमार झा, थाना प्रभारी राजेश कुमार भोक्ता पहुंचे। जिसके बाद अधिकारियों द्वारा काफी समझाने बुझाने के बाद सड़क जाम करीब मंगलवार दोपहर में समाप्त किया गया। अंचल अधिकारी और थाना प्रभारी के द्वारा पीड़ित परिवारों को कहा कि सरकार के प्रावधान के अनुसार जो भी मुआवजा होगा सभी प्रकार की राशि प्राप्त जल्द दी जायेगी। साथ ही थाना प्रभारी राजेश कुमार भोक्ता के द्वारा पीड़ित परिवार को आर्थिक सहयोग किया गया। लंबे समय तक जाम रहने के कारण राहगीरों को मंगलवार को करीब दोपहर 3 बजे के बाद तक इसकी परेशानी हुई। इस जाम में कई स्कूली बच्चे भी फंसे रहे, साथ ही इस दौरान स्कूल लेट से पहुंचे। विदित हो कि राज केशरी प्राईवेट लिमिटेड सड़क निर्माण एंजेसी बीते पांच वर्ष से सड़क का निर्माण कर रही है। इस दौरान बरकट्ठा बाजार में फ्लाई ओवर निर्माण का कार्य जारी है। साथ ही कई जगहों पर वन वे कर दी गई है। दुर्घटना होने के बाद सड़क जाम हो जाती है। जिससे वाहनों की लंबी कतारें लग जाती है।

खोज परीक्षा का उद्देश्य प्रतिभावान छात्र-छात्राओं की खोज करना : प्राचार्य

नवीन मेल संवाददाता। रामगढ़ कोयलांचल स्थित सरस्वती विद्या मंदिर, रजरप्पा में मंगलवार को विद्या विकास समिति , झारखंड द्वारा आयोजित विद्या भारती प्रतिभा चयन एवं विद्या भारती प्रतिभा खोज परीक्षा का आयोजन हुआ। इस परीक्षा में विद्यालय में पढ़ने वाले कक्षा तृतीय से लेकर दशम के भैया बहन सम्मिलित हुए। भैया बहनों ने ओएमआर शीट के माध्यम से परीक्षा दी। परीक्षा के विषय में प्राचार्य उमेश प्रसाद ने बतलाया कि विद्या भारती प्रतिभावान छात्र-छात्राओं की खोज के लिए प्रत्येक वर्ष यह परीक्षा आयोजित करती है। इसकी प्रारंभिक परीक्षा विद्यालय स्तर पर कक्षा तृतीय से दशम तक के छात्र-छात्राओं के लिए आयोजित की जाती है। इस परीक्षा में चयनित भैया बहन दूसरी परीक्षा यानि प्रतिभा खोज एवं प्रतिभा चयन की मुख्य परीक्षा में सम्मिलित होते हैं।इस परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले को 5000, द्वितीय 4000, तृतीय 3000 एवं प्रोत्साहन के रूप में 11 भैया बहनों को 1000 नगद राशि दी जाती हैं। परीक्षा के संचालन में प्रभारी मिथिलेश कुमार खन्ना, प्रतिभा चयन प्रमुख अमित झा, प्रतिभा खोज प्रमुख अनूप झा,सेखर कुमार, दुर्गा प्रसाद महतो, डॉ गायत्री पाठक, ज्योति राजहंस आदि की प्रमुख भूमिका रही।

न्यूज बॉक्स

उमरा पर जानेवाले हाजियों का विनोद प्रगति शील फाउंडेशन ने किया स्वागत

बरही । कोनरा पंचायत से 23 हजयात्रियों ने मंगलवार को उमरा के लिए मक्का मदीना प्रस्थान किया. यह यात्रा पूरे 20 दिन की है. इस दौरान सभी हज यात्री आका से नेकी और बरकत की दुआं मांगेंगे. सभी हजयात्रियों का विनोद प्रगतिशील फाउंडेशन के सदस्यों ने माला पहनाकर विदा किया व सुरक्षित यात्रा के लिए हजयात्रियों जो शुभकामनाएं दी . साथ ही लोगों से देश सहित पूरे क्षेत्र में अमन और शांति की दुआ मांगने की अपील किया. शुभकामनाएं देते हुए फाउंडेशन के अध्यक्ष मंजीत यादव ने कहा कि हज या उमरा पर जानेवाले भाग्यशाली होते है, जिनका समाज में एक अलग पहचान होती है. ऐसे लोग नेक दिल वाले होते हैं. इस अवसर पर फाउंडेशन के वरिष्ठ सदस्य कुणाल कटरियार, शरीफुल हक, मनोहर यादव, यमुना यादव, नुनु केसरी इत्यादि मौजौद थे. इस अवसर पर डीवीसी तार बंगला, आजाद मोहल्ला, मो कयूम इत्यादि कई लोगों ने सलामती की के साथ सभी को मक्का के लिए रवाना किया.

आचार्य राकेश कुमार सिंह की सेवानिवृत्ति पर कार्यक्रम आयोजित

आचार्य राकेश कुमार व्यक्तित्व के धनी व विषय ज्ञाता हैं : प्राचार्य

नवीन मेल संवाददाता। हजारीबाग सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, कुम्हार टोली सेवानिवृत हो रहे आचार्य राकेश कुमार सिंह के सेवानिवृत्ति पर स्नेह मिलन कार्यक्रम एवं सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। गौरतलब है कि आचार्य राकेश कुमार सिंह विद्यालय में भैया- बहनों को शारीरिक शिक्षा एवं संस्कृत विषय की गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहे थे' स्नेह मिलन कार्यक्रम में विद्यालय प्रबंधकारिणी समिति के अध्यक्ष डॉ प्रदीप कुमार सिंह, सचिव डॉ जयप्रकाश रविदास, कोषाध्यक्ष डॉ दिलीप साहू एवं विद्यालय के प्राचार्य ब्रजेश कुमार सिंह ने पुष्पगुच्छ,सम्मान पत्र, साल, वस्त्र एवं अन्य उपहार भेंट कर सम्मानित किया। मौके पर सम्मान समारोह में सेवानिवृत हो रहे आचार्य राकेश कुमार सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस विद्यालय में पूरी लगन एवं निष्ठा के साथ भैया- बहनों को पढ़ाया।

उपायुक्त ने दुर्गापूजा शांतिपूर्वक मनाने को लेकर शांति समिति के साथ की बैठक

भड़काऊ व अश्लील गाने न बजाने का सख्त निर्देश दिया

नवीन मेल संवाददाता। रामगढ़ आगामी दुर्गा पूजा पर्व के शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण आयोजन को लेकर मंगलवार को उपायुक्त रामगढ़ चंदन कुमार की अध्यक्षता में पुलिस अधीक्षक अजय कुमार की उपस्थिति में जिला समाहरणालय सभाकक्ष में जिला स्तरीय शांति समिति की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के दौरान सर्वप्रथम उपायुक्त ने प्रखंडवार पूजा समिति के सदस्यों से उनके क्षेत्र की समस्याओं का जायजा लिया एवं संबंधित अधिकारियों को समस्याओं का निराकरण करने के संबंध में महत्वपूर्ण निर्देश दिए। साथ ही उपायुक्त ने सभी समिति के सदस्यों को रोड से जगह छोड़कर पंडाल बनाने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने हाई कोर्ट के निर्देश पर डीजे बैन के संबंध में विस्तार पूर्वक जानकारी देते हुए कहा कि किसी भी परिस्थिति में भड़काऊ अथवा अश्लील गाने न बजाने के लिए शख्त निर्देश दिए। सुरक्षा दृष्टि के मद्देनजर उपायुक्त ने सभी पूजा समिति सदस्यों से पंडालों में सीसीटीवी की व्यवस्था सुनिश्चित करने का निर्देश दिया एवं किसी भी समय अनियमितता या परेशानी आने के क्रम में यथाशीघ्र जिला कंट्रोल रूम फोन संख्या - 06553 222005 में अथवा नजदीकी पुलिस प्रशासन को सूचित करने का निर्देश दिया। बैठक के दौरान पुलिस अधीक्षक अजय कुमार ने पर्व को शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण तरीके से मनाये जाने की बात कही। वहीं, उन्होंने सभी पूजा समितियों को अपने अपने वोलेंटियर चिन्हित कर अपने थाना को सूचित करने का निर्देश दिया।

निः शुल्क डांडिया कार्यशाला कल से

डॉ मुनीष गोविंद, कुलसचिव

हजारीबाग। आईसेक्ट विश्वविद्यालय, हजारीबाग के मटवारी स्थित सिटी कैंपस में छः दिवसीय निःशुल्क डांडिया कार्यशाला का आयोजन 03 अक्टूबर से किया जाएगा। उक्त जानकारी देते हुए आईसेक्ट विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ मुनीष गोविंद ने बताया कि दूर्गापूजा के मौके पर डांडिया देश भर में खेला जाता है और यह खेल बेहद लोकप्रिय भी है। ऐसे में निः शुल्क कार्यशाला के माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों को डांडिया के बारीकियों को समझने का मौका मिलेगा। उन्होंने बताया कि 03 अक्टूबर से हर शाम 5:00 बजे से लेकर शाम 6:30 बजे तक कार्यशाला चलेगा। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय की पीएफए की प्राध्यापिका कुमारी सीमा के द्वारा कार्यशाला में प्रशिक्षण पाने वालों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। डॉ गोविंद ने आगे बताया कि दरअसल इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्तित्व का विकास करना है। ऐसा माना जाता है कि नृत्य भावनाओं को व्यक्त करने का एक सुंदर तरीका है जो शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से लोगों को अद्भुत और ऊजार्वान बनाता है। वहीं कुमारी सीमा ने बताया कि बीते वर्ष भी आईसेक्ट विश्वविद्यालय की ओर से निः शुल्क कार्यशाला का आयोजन किया गया था, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों को प्रशिक्षित किया गया था। बताते चलें कि इस निः शुल्क कार्यशाला में छात्र-छात्राएं, महिलाष-पुरूष सभी इच्छुक लोग शामिल हो सकते हैं। पंजीकरण के लिए मटवारी स्थित सिटी कैंपस से आवेदन प्राप्त कर सकते हैं।

मोदी के आगमन पर होगा गांधी मैदान में भव्य कार्यक्रम

79 करोड़ रुपये से अधिक की योजनाओं का करेंगे उद्घाटन व शिलान्यास : टोनी जैन

नवीन मेल संवाददाता। हजारीबाग गांधी मैदान में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उपस्थिति में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इस कार्यक्रम में प्रधानमंत्री 79,000 करोड़ रुपये से अधिक की योजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करेंगे। भाजपा के वरिष्ठ नेता और प्रदेश कोषाध्यक्ष किसान मोर्चा, टोनी जैन ने इस कार्यक्रम को झारखंड के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कदम बताया और लोगों से इसमें अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने का आह्वान किया। टोनी जैन ने बताया कि इस कार्यक्रम के अंतर्गत 'आबा जनजातीय ग्राम उत्कृष्ट अभियान' की भी शुरूआत की जाएगी, जो लगभग 63,000 गांवों को कवर करेगा और इससे करोड़ों आदिवासी समुदायों को सीधा लाभ मिलेगा। इसके साथ ही कई एकलव्य मॉडल विद्यालयों का उद्घाटन और शिलान्यास भी किया जाएगा, जिससे झारखंड के आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा के स्तर में सुधार आएगा। टोनी जैन ने कहा, यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 17 दिनों के भीतर झारखंड का दूसरा दौरा है और हजारीबाग में यह उनका चौथा दौरा होगा। कल का दिन हजारीबाग के लिए ऐतिहासिक होने जा रहा है, जब मोदी का संबोधन सुनने के लिए हजारों लोग इकट्ठा होंगे। टोनी जैन ने विभिन्न क्षेत्रों का दौरा करते हुए जनसंपर्क अभियान चलाया और लोगों को व्यक्तिगत रूप से कार्यक्रम में शामिल होने का निमंत्रण दिया। उन्होंने जनता से अपील की कि वे अपने परिवार और सगे-संबंधियों के साथ इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में हिस्सा लें और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में झारखंड को भ्रष्टाचार मुक्त करने और सुशासन की सरकार बनाने का संकल्प लें। जैन ने कहा, अब वक्त आ गया है कि झारखंड से इस भ्रष्टाचारी सरकार को हटाया जाए और भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में राज्य में सुशासन की सरकार बनाई जाए।

राज्य में ठगबंधन की सरकार को झारखंड की जनता उखाड़ फेंकेगी : दर्शना सिंह

हजारीबाग। सदर विधानसभा क्षेत्र के कटकमदाग प्रखंड के बानादाग स्थित आदर्श उच्च विद्यालय में स्थानीय मंडल का बैठक नगर महामंत्री अरुण राणा के अध्यक्षता में दिन मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विशाल जनसभा को लेकर बैठक आयोजित हुआ। मुख्य रूप से राष्ट्रीय महिला उपाध्यक्ष सह राज्यसभा सांसद दर्शना सिंह, हजारीबाग जिला की चुनाव प्रभारी सह महिला मोर्चा उपाध्यक्ष आरती कुजूर एवं भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता शामिल हुई। बैठक में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के परिवर्तन महारैली सभा को ऐतिहासिक बनाने के लिए संकल्प लिया गया। मौके पर राष्ट्रीय महिला उपाध्यक्ष सह राज्यसभा सांसद दर्शना सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि झारखंड में सिर्फ लुट, झुट एवं ठगबंधन की सरकार हेमंत सरकार है। जनता को विश्वासघात करने कार्य किया है। राज्य में स्थापित कांग्रेस एवं जेएमएम के ठगबंधन के सरकार को झारखंड की जनता उखाड़ फेंकेगी। मौके पर भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता ने अपने संबोधन में कहा कि हजारीबाग में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कदम पड़ते ही हेमंत सरकार का परिवर्तन बयार चहुंओर बहेगी।

उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडलीय आयुक्त के रूप में पवन कुमार ने किया प्रभार ग्रहण

हजारीबाग। उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल, हजारीबाग के नए प्रभारी प्रमंडलीय आयुक्त के रूप में पवन कुमार ने पदभार ग्रहण किया। भारतीय प्रशासनिक सेवा (झा.2011) बैच के पवन कुमार ने मंगलवार, 01 अक्टूबर 2024 को निवर्तमान प्रमंडलीय आयुक्त सुमन कैथरीन किस्पोट्टा से पदभार ग्रहण किया। पदभार ग्रहण करने के बाद नये आयुक्त ने अपने कार्यालय कक्ष में सभी अधिकारियों व कर्मचारियों का परिचय प्राप्त किया। आयुक्त के सचिव बासुदेव प्रसाद ने सम्मान स्वरूप पुष्पगुच्छ देकर आयुक्त का स्वागत किया। इससे पूर्व पवन कुमार परियोजना निदेशक, झारखंड एड्स कंट्रोल सोसायटी रांची, के पद पर पदस्थापित थे। झारखंड सरकार के अगले आदेश तक पवन कुमार प्रभारी प्रमंडलीय आयुक्त उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल के पद पर रहकर अपने कार्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करेंगे। मौके पर उप निदेशक आनन्द, अवर सचिव रास बिहारी संग सभी अधिकारीगण एवं कार्यालय कर्मीगण मौजूद रहे।

इचाक स्वस्थ रहेगा तभी इचाक आगे बढ़ेगा

जिस कार्यक्रम में मुख्य रूप से बबलू राम, पवन पांडे, सुबोध पांडे , अशोक राम , ज्ञानी साव, बबलू साहू, राजू पाठक, सोनू गोप, सोनू कुमार, सीमा देवी, कुंती देवी, शोभा देवी , रूपा कुमारी , बबीता देवी, विमला देवी , सुषमा देवी , रूबी देवी , रानी देवी, पारसी पंचायत के सैकड़ो की संख्या में ग्रामीण उपस्थित हुए।

इचाक बुढ़िया माता मंदिर को राजकीय पर्यटक स्थल घोषित करें राज्य सरकार : अनूप भाई

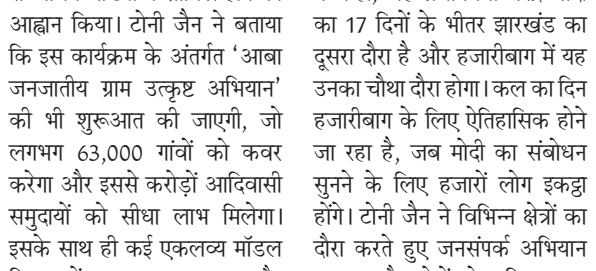

नवीन मेल संवाददाता। हजारीबाग बरकट्ठा विधानसभा क्षेत्र के इचाक प्रखंड के पंचायत पारसी में भाजपा नेता सह अनूप भाई ने जनसंपर्क अभियान चलाया वहीं पारसी रानी पोखर के समक्ष देवी मंदिर के पास सभा का आयोजन किया गया। ग्रामीणों ने जन समस्याओं से अवगत कर कहा कि भगवती मठ मंदिर की चर्चा स्थिति एवं रानी पोखर का साफ सफाई समेत अन्य समस्या की जानकारी दिया। वहीं सभा को भाजपा नेता अनूप भाई ने संबोधित करते हुए कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हजारीबाग आगमन पर कल गांधी मैदान हजारीबाग हो रहा है। आप लोग पहुंचकर उनके संबोधन को सुनने के लिए लोगों से आग्रह किया । अनूप भाई ने कहा कि इचाक प्रखंड में सबसे अधिक मंदिर एवं तालाब का होना गौरव प्राप्त है । इचाक सबसे प्रसिद्ध बुढ़िया माता मंदिर है, जिसमें पूरे भारत से प्रत्येक दिन हजारों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। वही दुर्गा पूजा नवरात्र एवं चैत्र नवरात्र में लाखों लाख की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। इतनी भीड़ होने के बावजूद भी राज सरकार के द्वारा विधि व्यवस्था को लेकर किसी तरह का कोई व्यवस्था प्रशासन के द्वारा नहीं किया जाता है, जो बहुत ही निंदनीय है। राज्य सरकार से मांग करता हूं की बुढ़िया माता मंदिर को राजकीय पर्यटक के रूप में विकसित किया जाए और इसे राजकीय पर्यटक स्थल घोषित करें राज्य सरकार। वही ग्रामीणों के बीच भाजपा नेता ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आवाहन पर मां के नाम पौधा लगाने को लेकर हर घर फलदार एवं औषधि पौधे का वितरण कर रहा हूं ।

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने किया नये नगर निगम भवन का ऑनलाइन उद्घाटन

नवीन मेल संवाददाता। हजारीबाग मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने मंगलवार को नगर निगम के नए प्रशासनिक भवन का चंदनकियारी से ऑनलाइन उदघाटन किया । साथ ही 13.97 करोड़ की लागत से हजारीबाग झील में सौंदर्यीकरण कार्य का ऑनलाइन शिलान्यास भी किया।इस दौरान झील से संबधित एक लघु फिल्म भी दिखायी गयी। ज्ञात हो कि नगर विकास विभाग अंतर्गत जुडको ने इस भवन को बनाने में सहयोग किया है । इस भवन का पूरा परिसर 60, 912 वर्गफुट में फैला हुआ है, जिसे 24.95 करोड़ की लागत से तैयार किया गया है। इसमें महापौर, उप महापौर और नगर आयुक्त के कार्यालय है, इसके अलावा स्थाई समितियों की बैठकों के लिए स्थान, और अधिकारियों के लिए कार्यालय भी बनाये गये हैं। इस भवन में जनसुविधा केंद्र एवं विभिन्न कार्यों संबंधित काउंटर बनाये गये हैं। जिसमें नागरिक सुविधाओं का लाभ दिया जायेगा। मिली जानकारी के अनुसार इसके अलावा 1000 क्षमता वाला बोर्ड रूम, 35 लोगों की क्षमता का कोर्ट रूम, 21 सदस्यों के लिए स्टैडिंग कमेटी का कक्ष, कैफैटेरिया उपलब्ध है। प्रत्येक मंजिल में शौचालय बनाया गया है। बेसमेंट में 30 चार पहिया और 36 दो पहिया वाहनों की पर्किंग की व्यवस्था की गयी है। सभागार व सम्मेलन कक्ष भी बनाया गया है। इसके बनने से नागरिक सुविधा भी बढ़ जायेगी। इस कार्यक्रम में नगर विकास मंत्री हफीजुल हसन, उपायुक्त न नगर आयुक्त योगेंद्र प्रसाद, सहित निगम के कर्मी मौजूद थे।

केरेडारी टंडवा मुख्य मार्ग पर अपराधियों ने फूंके 5 हाईवा

बीकेएस तिवारी ग्रुप ने घटना की जिम्मेवारी ली

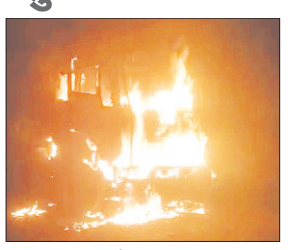

सूचना मिलते ही एसडीपीओ पुलिस इंस्पेक्टर अनिल कुमार थाना प्रभारी एवं पुलिस बल के जवान पहुंचे और घटना का जायजा लिया

नवीन मेल संवाददाता। हजारीबाग केरेडारी कोयला खनन परियोजना में कोयला ढुलाई का कार्य कर रही पांच हाइवा वाहन को बीते रात्रि आग के हवाले झोंक दिया गया। जिससे सभी गाडियां धू धू कर जल गई। जिन पांच हाईवा में आगजनी की गयी है उनमें तीन ओडिशा और दो हजारीबाग का वाहन है। इस आगजनी की घटना में पांचों वाहनों की केबिन और इंजन जलकर राख हो गया। घटना तकरीबन 2 बजे सोमवार की रात्रि में घटित होने की जानकारी दी जा रही है। घटना को अंजाम बी. के. एस. तिवारी ग्रुप ने दिया है। जिसकी जिम्मेवारी बी. के. एस. तिवारी ग्रुप के विपिन पांडे ने पर्चा छोड़कर लिया है। इस संदर्भ में जैसे ही पुलिस को घटना की सूचना मिली तुरंत घटना स्थल पर बड़कागांव एसडीपीओ कुलदीप कुमार पुलिस इंस्पेक्टर अनिल कुमार थाना प्रभारी अजित कुमार एवं पुलिस बल के जवान पहुंचे और घटना का जायजा लिया। एनटीपीसी के अधिकारी रोहित पाल भी घटना स्थल पर पहुंच चुके थे। यह घटना केरेडारी टंडवा मुख्य मार्ग में स्टॉफ होटल के थोड़ी दूरी पर टंडवा मार्ग में अंजाम दी गई है। जहां बताया जा रहा है की बी. के. एस. तिवारी ग्रुप के तकरीबन 12 से 15 की संख्या में लोग पहुंचे थे। उन लोगों ने रात्रि में हाईवा में आग लगाने के अलावा वाहन चालकों के साथ दरिंदगी से पिटाई किया और कई राउंड हवा में हथियार से फायरिंग भी किया। मौके पर अग्निशामक यंत्र को बुलाया गया है और आग पर काबू पाने की कोशिश की गई है लेकिन कोई भी हाईवा वाहन सही सलामत नही बच पाया है। इधर अपुष्ट सूत्रों की मानें तो यह घटना किसी प्रतिशोध का नतीजा बताया जा रहा है। केरेडारी थाना प्रभारी अजीत कुमार और पुलिस इंस्पेक्टर अनिल कुमार सिंह ने आगजनी की इस घटना के एक दिन पूर्व पहाड़ी जी उर्फ रामेश्वर महतो के घर में कुर्की जब्ती किया था। पहाड़ी जी उर्फ रामेश्वर महतो पहले बी. के. एस. तिवारी ग्रुप में शामिल हुआ था और इस पर केरेडारी थाना में मामला भी दर्ज किया गया है।

सिमडेगा उपायुक्त ने विधानसभा चुनाव की तैयारी को लेकर की समीक्षा बैठक

नवीन मेल संवाददाता

सिमडेगा। उपायुक्त सिमडेगा अजय कुमार सिंह की अध्यक्षता में आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियों को लेकर पदाधिकारी संग बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के दौरान उपायुक्त ने उपस्थित सभी पदाधिकारियों से कहा कि विधानसभा चुनाव हेतु तिथि की घोषणा कभी भी हो सकती हैं। उन्होंने चुनाव की तैयारियों के मद्देनजर जिले के कर्मीयों का दो से तीन दिन में डेटाबेस सभी कार्यालय प्रधान से ससमय पत्राचार करते मांगने का निर्देश दिया। उन्होंने ने प्रशिक्षण हेतु मास्टर ट्रेनर चयन करने की बात कहीं। साथ ही उपायुक्त महोदय ने जिले सभी मतदाताओं को जागरूक करने हेतु स्वीप कार्यक्रम के तहत स्वीप अखाड़ा, स्वीप जतरा एवं धुमकुडिया का आयोजन करने की दिशा में आवश्यक निर्देश दिया। इसके अलावा चुनाव से संबंधित कई महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिये। मौके पर उप विकास आयुक्त संदीप कुमार दोराईबुरु, अपर समाहर्ता ज्ञानेन्द्र, उप निर्वाचन पदाधिकारी पवन कुमार महतो, एलआरडीसी अरुणा कुमारी, जिला पंचायती राज पदाधिकारी, जिला शिक्षा पदाधिकारी सहित अन्य पदाधिकारी एवं निर्वाचन शाखा के कर्मी गण उपस्थित थे।

बानो में नए एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय का प्रधानमंत्री करेंगे ऑनलाइन शिलान्यास

सिमडेगा। उपायुक्त सिमडेगा अजय कुमार सिंह एवं पुलिस अधीक्षक सौरभ कुमार ने बानो प्रखंड का भ्रमण किया इस दौरान उपायुक्त एवं पुलिस अधीक्षक महोदय ने बानो प्रखंड में बनने वाले एकलव्य आवासीय विद्यालय स्थल पहुंचे। बता दें कि बानो एकलव्य आवासीय विद्यालय का देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा आज 2 अक्टूबर 2024 को झारखंड से ऑनलाइन शिलान्यास करेंगे। उपायुक्त द्वारा शिलान्यास कार्यक्रम की तैयारियों से संबंधित जानकारी ले हुए परियोजना निदेशक आईटीडीए सरोज तिर्की को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। उन्होंने सभी आवश्यक विधि-व्यवस्था की समय से पूर्ण कर लेने का निर्देश दिया। इस दौरान उन्होंने चारदीवारी निर्माण कार्य का भी जायजा लिया। इसके अलावा उपायुक्त बानो एस एस प्लस उच्च विद्यालय के सामने बनाये जा रहे स्टेडियम एवं रेलवे स्टेशन बानो का निरीक्षण किया।

पुलिस अधीक्षक महोदय ने सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेते हुए थाना प्रभारी, बानो को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये।

रांची से लापता चार बच्चे पांच दिन बाद सिमडेगा से बरामद

सिमडेगा। रांची रेलवे स्टेशन से पांच दिन पहले लापता चार बच्चों को सिमडेगा से बरामद कर लिया गया है। बरामद बच्चों को रांची पुलिस सिमडेगा से रांची लेकर आ रही है। जानकारी के मुताबिक, चारों बच्चे रेलवे स्टेशन से ट्रेन पकड़कर सिमडेगा चले गये थे। बानो स्टेशन पर आरपीएफ के जवानों ने चारों बच्चों देखा तो उनसे पूछा कि कहा जा रहे हो। बच्चों ने कुछ जवाब नहीं दिया। आशंका होने पर आरपीएफ के जवानों ने चारों बच्चों को ट्रेन से उतारा और आरपीएफ पोस्ट में रखा। इसके बाद सिमडेगा सीडब्ल्यूसी से संपर्क किया और बच्चों को सौंप दिया। चार बच्चों के लापता होने की शिकायत की गयी थी दर्ज चारों बच्चों के परिजनों ने सोमवार को चुटिया थाना में बच्चों के लापता होने की शिकायत दर्ज करायी थी। चुटिया थाना पुलिस ने इसकी जानकारी वरीय पुलिस अधिकारी को दी। मामले की जानकारी मिलते ही सिटी एसपी राज कुमार मेहता ने डीएसपी केवी रमन को त्वरित टीम बनाकर कार्रवाई करने का निर्देश दिया। देर रात पुलिस को सभी बच्चों को सिमडेगा में होने की जानकारी मिली।

न्यूज बॉक्स

रामगिरी महाराज की गिरफ्तारी की मांग को ले मुसलमानों ने निकाली आक्रोश रैली, एसडीओ को सौंपा ज्ञापन

सिमडेगा। महाराष्ट्र के रामगिरी महाराज पर पैगंबर मुहम्मद की शान में अमर्यादित बयानबाजी करने का आरोप लगाते हुए सिमडेगा के मुस्लिम समाज के लोगों ने उनकी गिरफ्तारी की मांग को लेकर विशाल आक्रोश रैली निकाली।साथ ही अनुमंडल पदाधिकारी को मांग से संबंधित ज्ञापन भी सौंपा।रैली की शुरूआत हारूण रशीद चौक इस्लामपुर भट्टीटोली से की गयी। रैली में हजारों की संख्या में मुस्लिम समुदाय के लोग शामिल हुए। रैली में शामिल लोग अपने हाथों में बैनर व पोस्टर लिए हुए थे। रामगिरी महाराज की गिरफ्तारी की मांग कर रहे थे, साथ ही मुफ्ती अजहरी को रिहा करने की भी मांग कर रहे थे। रैली में शामिल लोग मुख्य पथ, महावीर चौक , झूलन सिंह चौक होते हुए अनुमंडल पदाधिकारी सुमंत तिर्की को ज्ञापन सौंपा। इस दौरान वक्ताओं ने कहा कि पैगंबर मुहम्मद की शान में गुस्ताखी कतई बर्दाश्त नहीं की जायेगी,यदि शीघ्र ही उनकी गिरफ्तारी नहीं होती तो आंदोलन तेज किया जायेगा,वक्ताओं ने कहा कि सभी को एक दूसरे के धर्म का सम्मान करना चाहिए लेकिन रामगिरी महाराज ने पैगंबर मुहम्मद की शान अमर्यादित बयान देकर हिंदुस्तान के तमाम मुस्लामानों को अपमानित करने का काम किया है जो बर्दाश्त के काबिल नहीं है।कहा कि पूरे देश में विरोध प्रदर्शन के बाद भी रामगिरी महाराज को गिरफ्तार नहीं किया जा रहा है। उन्हें सत्ता का संरक्षण प्राप्त हो रहा है।अनुमंडल पदाधिकारी को ज्ञापन सौंपने के बाद रैली को समाप्त किया गया।रैली का नेतृत्व शरीफ खान, इबरार रजा, रफीक कादरी, मआज आलम, मो अजीमुल्लाह अंसारी आदि कर रहे थे।

भाजपा नेता श्रद्धानंद ने नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी से की मुलाकात, सौंपा ज्ञापन

सिमडेगा। भाजपा नेता श्रध्दानंद बेसरा ने मंगलवार को नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी से मुलाकात किए एवं शहरी क्षेत्र में व्याप्त समस्याओं के विषय में चर्चा करते हुए उन्हें समाधान करने के लिए आग्रह किया।दुर्गा पूजा महोत्सव को देखते हुए श्री बेसरा ने कार्यपालक पदाधिकारी से बिजली व्यवस्था, शहर की साफ-सफाई व्यवस्था, स्ट्रीट लाइट व्यवस्था,जल व्यवस्था , पेड़ों की छंटाई, रोड किनारे के प्लैंक की भराई करने इत्यादि जैसे महत्वपूर्ण समस्याओं पर चर्चा किए, एवं प्रशासनिक व्यवस्था को दुरुस्त रखने में पुर्ण योगदान देने के लिए आग्रह किया ताकि दुर्गा पूजा महोत्सव त्योहार धूमधाम से संपन्न हो सके। साथ में वरिष्ठ भाजपा कार्यकर्ता दीप नारायण दास उपस्थित थे।

सिकोरदा में रौतिया समाज का तीन दिवसीय जन जागृति कार्यक्रम आज से

बानो। प्रखण्ड के सिकोरदा में अखिल भारतीय रौतिया समाज के तत्वावधान में तीन दिवसीय जन जागृति कार्यक्रम का आयोजन गांधी जयंती के अवसर पर दो अक्टूबर से आयोजित की गई हैं। कार्यक्रम में दो अक्टूबर को सामाजिक उत्थान व स्वरोजगार पर चर्चा, तीन ऑक्टोबर को वर्तमान सामाजिक स्थिति पर चर्चा व रात्रि में धार्मिक जागरण का आयोजन किया गया है।चार ऑक्टोबर को सामाजिक युवक युवतीयों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।कार्यक्रम में समाज के अधिकारियों को आमंत्रित किया गया है।उक्त जानकारी प्रखण्ड अध्यक्ष महेश सिंह ने दी ।

बांसजोर प्रखंड में पथ मजबूतीकरण का कोलेबिरा विधायक ने किया शिलान्यास

बांसजोर। प्रखंड क्षेत्र में मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजनान्तर्गत राज्य सरकार के मद से विधायक नमन विक्सल कोंगाड़ी के अनुशंसा पर बनने वाले पथ का मजबूतीकरण कार्य का मंगलवार को कोलेबिरा विधायक ने शिलान्यास शिलापट्ट का अनावरण फीता काटकर किया। मौके पर विधायक नमन विक्सल कोंगाड़ी ने कहा कि क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण विकास के लिए उनकी सरकार प्रतिबद्ध है और इसके लिए हर सम्भव कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि मजबूतीकरण कार्य की जिम्मेवार कंपनी गुणवत्ता पर ध्यान देते हुए तय समय अवधि के अंदर सड़क की मजबूतीकरण कार्य को पूर्ण करें ताकि ग्रामीणों को ज्यादा लंबा समय तक समस्या न हों। विधायक ने कहा कि ग्रामीणों की समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर दूर किया जा रहा है। ग्रामीणों के द्वारा इन सड़कों के बारे में बताया गया था कि इन सड़को की स्थिति बहुत ही खराब है, किसी के बीमार हो जाने की हालत में उन्हें ले जाने में काफी असुविधा का सामना करना पड़ता है।इसको देखते हुए अविलम्ब इन सभी पथों को निर्माण कराने के लिए इसकी अनुशंसा राज्य सरकार को किया। झारखंड में आपके द्वारा चुनी गई सरकार है झारखंड अलग राज्य बनने के बाद पहली बार झारखंडी भावना के अनुरूप सरकार बनी है।

नगर परिषद ने लोगों के साथ चलाया स्वच्छता अभियान

नवीन मेल संवाददाता

सिमडेगा। स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम 2024 के तहत सिमडेगा नगर परिषद की ओर से मंगलवार की सुबह सिमडेगा शहर के विभिन्न जगहों पर महात्मा गांधी के अनुयाई जतरा टाना भगत लोगों के साथ स्वच्छता अभियान चलाया। इस दौरान सिमडेगा जिला के सुधारवर्ती क्षेत्र में रह रहे सभी टाना भगत के परिवार वाले उपस्थित रहे, जहां पर सभी लोगों ने सामूहिक रूप से स्वच्छता अभियान चलाकर आसपास की । इस दौरान काफी संख्या में लोग उपस्थित रहे जहां पर जतरा टाना भगत हरिश्चंद्र भगत ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का सच था कि इस देश को स्वच्छ भारत बनाया जाए और इस सोच को पूरा करने के लिए देश के प्रधानमंत्री स्वच्छ भारत मिशन के तहत लगातार कई अभियान चला रहे हैं और इसी कड़ी में सभी लोग मिलकर सामूहिक रूप से साफ सफाई कर अपने आसपास समाज और सभी लोगों को जागरूक करने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने सभी लोगों को इस अभियान में शामिल होकर अपने आसपास फैली करने की को सफाई करते हुए स्वच्छ भारत अभियान में सहयोग करने की अपील की।

नशे में धुत पति ने पत्नी की मारकर की हत्या गिरफ्तार

सिमडेगा। सदर थाना क्षेत्र के कुडरूम महतोटोली गांव में मंगलवार की सुबह एक युवक ने शराब के नशे में धूत होकर अपनी पत्नी की हत्या कर दी। बताया गया कि उक्त गांव निवासी उमेश सिंह शराब के नशे में धूत होकर आया और अपनी पत्नी से विवाद करने लगा। इसी क्रम में गुस्से में आकर उमेश ने अपनी पत्नी शांति देवी को लोहे के रॉड से मारकर हत्या कर दिया। घटना की जानकारी मिलने के बाद सदर थाने की पुलिस मौके पर पहुंची और शव को अपने कब्जे में कर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया। वहीं आरोपी पति को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। इस मामले में सदर थाना में प्राथमिकी दर्ज की गई है। बताया गया कि मृतक के तीन बच्चे हैं। इधर घटना के बाद तीनों बच्चों का रो-रो कर बुरा हाल।

अंतरराष्ट्रीय वृद्ध दिवस पर डीसी ने गांव के वृद्ध को किया सम्मानित

नवीन मेल संवाददाता

सिमडेगा। अंतर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस पर निर्वाचन आयोग द्वारा 100 वर्ष से अधिक आयु के मतदाताओं को सम्मानित करने का निश्चय किया है। इसी क्रम में मंगलवार को उपायुक्त अजय कुमार सिंह ने शहरी क्षेत्र के खिजरी गांव पहुंच 100 वर्ष के अधिक आयु के बुजुर्ग मतदाता रतनू साव से मिलकर उन्हें पुष्प गुच्छ भेंट देकर एवं शोल ओढ़कर सम्मानित किया। इस दौरान उपायुक्त ने उन्हें फल से भरा टोकरी भी दी। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आप वोट के समय अपना अधिकार का प्रयोग अवश्य करें। उन्होंने कहा कि निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार बुजुर्ग मतदाताओं को सम्मानित किया जा रहा है। लोकतंत्र में मतदाताओं की अहम भूमिका होती है। खासकर बुजुर्ग मतदाताओं की भूमिका ही सराहनीय होती है। अपनी कीमती वोट को उम्र के इस पड़ाव देने के लिए मतदान केंद्र पहुंचते हैं। उन्होंने कहा कि आप सभी लोग आज के नई पीढ़ी के युवाओं को मतदान करने के लिए प्रेरित भी करें। जिससे देश का लोकतंत्र और अधिक मजबूत हो। उपायुक्त ने रतनू साव से इस विधानसभा चुनाव-2024 में अवश्य ही मतदान करने को कहां, जिसपर 100 वर्ष के बुजुर्ग रतनू साव ने उपायुक्त को बताया कि वह हर चुनाव में मतदान करने के लिए बूथ पर जाते हैं। और वोट देते हैं।रतनू साव ने उपायुक्त को अपने गिरे हुए घर से भी अवगत कराया, जिस पर उपायुक्त ने घर का जायजा लेते हुए आवास योजना का लाभ मुहैया कराने की बात कहीं।मौके पर उप निर्वाचन पदाधिकारी पवन कुमार महतो, बीएलओ एवं बीएलओ सुपरवाइजर सहित अन्य उपस्थित थे।

जतरा टाना भगत परिवार के लोगों को समाजसेवी भारत प्रसाद ने किया सम्मानित

सिमडेगाः राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जयंती से पूर्व यात्रा ताना भगत परिवार के सदस्यों को समाज सेवी भारत प्रसाद के द्वारा मंगलवार को कार्यक्रम आयोजित करते हुए सिमडेगा डेली मार्केट में अंगवस्त्र तथा फल एवं मिठाई देकर सम्मानित किया ।इस मौके पर उन्होंने कहा कि समाज के लिए जिस प्रकार आजादी की लड़ाई में टाना भगत के लोगों ने महात्मा गांधी के साथ शामिल हुआ था और इस देश को आजादी दिलाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। ऐसे महान लोगों के वंशजों को हमें सम्मानित करने का मौका मिला है ।उन्होंने सभी टाना भगत के सुख-दुख में हमेशा साथ देने की बात करते हुए सम्मानित किया। इस मौके पर जिला के विभिन्न क्षेत्र से आए हुए महिला एवं पुरुष ताना भगत शामिल रहे।

विश्व बुजुर्ग दिवस पर सदर अस्पताल में कार्यक्रम आयोजित

नवीन मेल संवाददाता

सिमडेगा। विश्व बुजुर्ग दिवस के मौके पर मंगलवार को सिमडेगा सदर अस्पताल स्थित सभागार में स्वास्थ्य विभाग की ओर से कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से सिमडेगा सिविल सर्जन डॉक्टर रामदेव पासवान स्वास्थ्य विभाग के नोडल पदाधिकारी डॉक्टर ख्रीस्त आनंद खाखा एवं बुजुर्गों के द्वारा दीप जलाकर कार्यक्रम की शुरुआत। अपने संबोधन में सबसे पहले सदस्य अस्पताल के फिजियोथेरेपी के डॉक्टर संजय ने सभी लोगों को बुजुर्ग अवस्था में फिट रखने के लिए किन व्यायाम और किन सावधानियां का प्रयोग करना है, इन सभी चीजों के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दिया। वहीं इस मौके पर नोडल पदाधिकारी डॉक्टर ख्रीस्त आनंद खाखा ने भी सभी लोगों को बुजुर्ग दिवस की शुभकामना देते हुए उनके स्वास्थ्य संबंधित कई चीजों की जानकारी दी। मौके पर सिविल सर्जन डॉक्टर रामदेव पासवान ने संबोधित करते हुए कहा कि बुजुर्ग समाज क्या वह बरगद पेड़ है जिसके छाव पर सभी लोगों को संरक्षण मिलता है और हमें इनका सम्मान हमेशा करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि जब आप परेशान रहेंगे तो बुजुर्गों से मार्गदर्शन लेने पर आपके जीवन में आई हुई परेशानी दूर हो सकती है, इसीलिए अपने माता-पिता को जब बुजुर्ग हो जाए तो उन्हें वृद्ध आश्रम के भरोसे ना छोड़े बल्कि उनका जिस प्रकार आपका परवरिश कर उन्होंने बड़ा किया है उसी प्रकार आप उनका सहयोग करें ।इसके अलावा उन्होंने स्वास्थ्य विभाग द्वारा बुजुर्गों को मिलने वाली सुविधाओं के बारे में भी विस्तार पूर्वक जानकारी दी। मौके पर कई बुजुर्गों ने अपना अनुभव साझा करते हुए कार्यक्रम को लेकर स्वास्थ्य विभाग का आभार व्यक्त किया।

झापा नेत्री आईरीन ने कुरडेग में किया जनसंपर्क

सिमडेगा। झापा नेत्री आईरीन एक्का ने सोमवार को कुरडेग प्रखंड के कुटमाकछार, डूमरडीह आदि गांव का भ्रमण किया। मौके पर आईरीन ने ग्रामीणों के साथ बैठक करते हुए उनकी समस्या सुनी। आईरीन ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि सिमडेगा विस क्षेत्र में अब तक भाजपा और कांग्रेस ने ही शासन किया है, लेकिन दोनों ही पार्टी जनता की समस्या को दूर करने में नाकाम साबित हुए हैं। उन्होंने कहा कि झारखंड पार्टी माटी की पार्टी है और लोगों के दुख दर्द को समझती है। उन्होंने कहा कि झारखंड पार्टी हर लोगों के सुख-दुख में भागीदार बनना चाहती है, और लोगों के समर्थन से क्षेत्र की सभी समस्या को भी दूर करना चाहती है। मौके पर सभी लोगों ने इस बार झारखंड पार्टी को समर्थन देने की बात कही। ग्रामीणों ने कहा कि इस बार उन्हें धर्म के नाम पर कोई नहीं ठग सकता है, जो जनता का काम करेगा उसी को वोट दिया जाएगा। मौके पर विनोद बरला, अमन खेस,आनंद एंड्रयुस, नंदू, पवन साय, अनीता बिलुंग, अनुपमा मिंज,रंजिता खेस, विनीता,विमल, सुनील, नंदकिशोर साय, सावित्री देवी सहित कई लोग उपस्थित थे।

झारखंड पार्टी के बूथ कार्यकर्ता सम्मेलन का हुआ आयोजन

नवीन मेल संवाददाता

कोलेबिरा। प्रखंड स्थित नगर भवन में झारखंड पार्टी के द्वारा बूथ स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया,कार्यक्रम में मुख्य रूप से झारखंड पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष एनोस एक्का शामिल हुए।कार्यकर्ता सम्मेलन में भारी संख्या में भीड़ उमड़ी झारखंड पार्टी के नीति और सिद्धांतों से प्रभावित होकर अन्य पार्टी के कार्यकर्ताओं ने झारखंड पार्टी का दामन थामा।आयोजन में केंद्रीय अध्यक्ष झारखंड पार्टी जनता पार्टी और कांग्रेस पर जमकर वार किया।उन्होंने भाजपा और कांग्रेस पर आरोप लगाते हुए कहा कि बीजेपी और कांग्रेस पार्टी धर्म के नाम पर वोट मांगती है लोगों को गुमराह कर बरगलाती है।उन्होंने यह भी कहा कि भाजपा और कांग्रेस पार्टी ने क्षेत्र में कई वर्षों तक शासन किया परंतु आज भी क्षेत्र में कोई भी विकास का कार्य नहीं हुआ और ना ही लोगों के मूलभूत समस्या दूर कर सका, दोनों ही पार्टी सिर्फ और सिर्फ जनता को लूटने का काम किया है।यहां का स्थानीय विधायक सिर्फ धर्म का नाम पर लोगों को भड़काने का काम कर रही है फिर भी लोगों को धर्म पर कोई काम नहीं कर रही है सिर्फ स्थानीय विधायक ने लोगों को धर्म के नाम पर बरगलाने का काम किया।साथ ही उन्होंने कहा की स्थानीय विधायक कई योजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन कर रहे हैं और उसमें इंजीनियर के साथ मिलकर सिर्फ घोटाला कर रही है।उन्होंने यह भी कहा कि बोंगराम में 2 लाख का योजना देने के पश्चात भी लाभुक को 130000 देकर बाकी रकम घोटाला का नाम कर दी गई।

एनडब्ल्यू जीईएल चर्च के छह पेरिस के एकदिवसीय सेमिनार का आयोजन

नवीन मेल संवाददाता

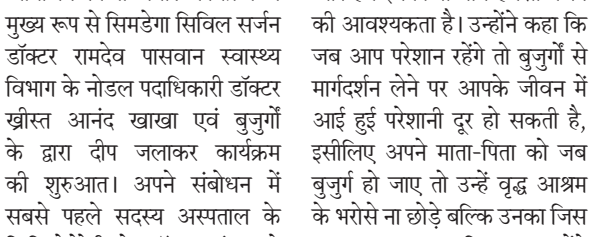

सिमडेगा। कोचेडेगा में मंगलवार को एनडब्ल्यू जीईएल चर्च के छह पेरिसर का एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार में आर्च बिशप सतीष टोप्पो, सेंटर डायोसिस के बिशप निस्तोर कुजूर, विधायक भूषण बाड़ा आदि उपस्थित थे। मौके पर वक्ताओं ने पलायन पर अंकुश लगाने को लेकर अपने अपने विचार रखे। विधायक भूषण बाड़ा ने पलायन के अलावे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विषय पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि पलायन पर अंकुश लगाने के लिए लोगों को घर बैठे रोजगार उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है। क्षेत्र में लगातार विकास योजनाओं को धरातल में उतारा जा रहा है। ताकि लोगों को घर बैठे ही रोजगार मिले। उन्होंने कहा कि सरकारी कार्य करा रहे सभी संवेदकों को स्थायनीय मजदूरों को काम पर रखने का निर्देश दिया गया है। इसके अलावे मनरेगा योजना के माध्यम से भी लोगों को रोजगार से जोड़ा जा रहा है। हमारे आदिवासी समाज सहित सभी गरीबों की आय बढ़ाने के लिए एवं स्वरोजगार से जोड़ने के लिए सरकार द्वारा अनुदान पर लोन मुहैया कराई जा रही है। युवा वर्ग महानगरों में रोजगार की तलाश के लिए जाने के बजाय घर बैठे ही इंडिया गठबंधन की सरकार की योजना से जुड़ें और अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करें। उन्होंने समाज के लोगों को राजनीतिक दृष्टिकोण से एकजूट रहने एवं राजनीतिक में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाने की अपील की। कार्यक्रम में सेंट्रल डायोसिस के सचिव एलाम बेक, सिनोड एवं सेंट्रल डायोसिस युवा संघ के सलाहकार सुजीत कुजूर, कोचेडेगा पेरिस चेयरमेन पादरी सुरजनमानी केरकेट्टा, सेमडेगा पेरिस चेयरमेन सभी मंडली के सदस्य, युवा संघ के सदस्य एवं भारी संख्या में जीईएल मतावलंबी उपस्थित थे।

दुर्गा मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव को लेकर तैयारी जारी

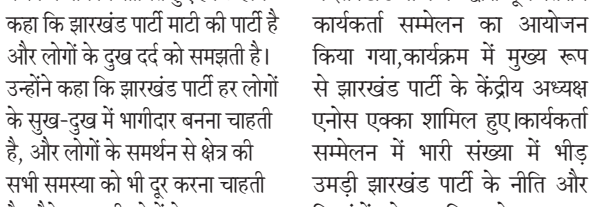

नवीन मेल संवाददाता

कुरडेग । प्रखंड के कदमटोली दुर्गा मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव को लेकर तैयारी जोरों पर है। पूरे गांव के ग्रामीणों द्वारा मंदिर एवं परिसर को सजाने संवारे में लगे हैं। मालूम हो कि कदमटोली दुर्गा मंदिर में माँ दुर्गा की अष्ठ धातु प्रतिमा के प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम निर्धारित किया गया है।कार्यक्रम की जानकारी देते हुए मंदिर समिति के संरक्षक विद्याधर प्रधान ने बताया कि 3 अक्टूबर से प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम प्रारंभ किया जाएगा और 4 अक्टूबर को सम्पन्न होगा।दो दिवसीय कार्यक्रम में पुरी के प्रतिष्ठित पंडितों द्वारा विधि विधान के साथ प्राण प्रतिष्ठा का कार्य संपादित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि माँ की अष्ठधातु की प्रतिमा पुरी जगन्नाथ धाम से मंगायी गयी है।ज्ञात हो कि दुर्गा मंदिर से प्राचीनतम अष्ठधातु मूर्ति की चोरी 25 अप्रैल 2024 को अज्ञात चोरों द्वारा चोरी कर ली गई थी। जिसे अभीतक पुलिस प्रशासन मामले की उदभेदन करने में असफल रही।मूर्ति चोरी का मामला ठंडा बस्ता में चला गया। निराशा में गांव के लोगों ने बैठक कर मंदिर में मां दुर्गा की नई प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा कराने का निर्णय लिया।

सरकार की लाभकारी योजनाओं से आज भी वंचित हैं बुजुर्ग

नवीन मेल संवाददाता

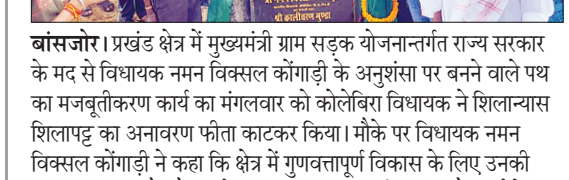

जलडेगा। जलडेगा भले ही मंगलवार को हम बुजुर्ग दिवस मना कर एक दो चिन्हित बुजुर्गों को सम्मान किया ।पर वाकई में बुजुर्ग दिवस मनाना तभी सार्थक माना जा सकता है जब हर एक बुजुर्ग को उसके हक का पेंशन, राशन मिले। झारखंड अलग राज्य बने 24 साल हो गए। कई सरकारें बनी और बड़े-बड़े वादे कर लोगों को सपने दिखाते रहे। आदिवासी व मूलवासियों के समग्र विकास के लिए अलग राज्य गठन की चिर प्रतीक्षित मांग 24 साल पहले पूरी हो चुकी है, लेकिन क्या अबतक आदिवासी व मूलवासियों की समस्याओं का समाधान हो पाया है? अब भी लोगों को अब भी राशन व पेंशन जैसे सरकारी लाभकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए संघर्ष क्यू करना पड़ रहा है? विकास को गति देने के लिए कराए गए पंचायत चुनाव के बाद भी अंतिम पंक्ति के लोगों की समस्याओं का समाधान नहीं हो पाना सरकार के प्रखंड स्तर के सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ पंचायत प्रतिनिधियों की कार्यशैली पर प्रश्नचिह्न लगाता है।

पेंशन योजना से वंचित है वृद्धा

जलडेगा प्रखंड के सिलास मुंडा नामक वृद्ध ने बताया की उनका उम्र 67 वर्ष हो चुका है फिर भी उन्हें पेंशन नही मिलता है। फुलमईत देवी ने बताया कि उन्हें मात्र दो बार पेंशन मिला था, उसके बाद पांच साल से नहीं मिला है। रंथु बड़ाईक और पुष्पा देवी ने बताया कि उन्होंने पेंशन के लिए सारा कागजात जमा किया लेकिन अभी तक पेंशन स्वीकृत नही हुआ। इसी तरह आज भी कई ऐसे जरूरतमंद वृद्ध हैं जो सरकार की लाभकारी योजनाओं के वंचित हैं।

एक नजर

वन अधिकार पट्टा की मांग को लेकर धरना में शामिल हुए बरही विधायक

बरही। वन अधिकार पट्टा की मांग को लेकर अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित जाति के लोगों द्वारा एक दिवसीय धरना आयोजित किया गया. जिसमे बरही विधायक उम्रकंचन ग्राउंड से हजारों की संख्या में लोगों ने जुलूस के रूप में समाहरणालय परिसर की ओर मार्च किया। इस जुलूस का नेतृत्व राजेश मेहता, सुंदर मुंडा, मनोहर मुंडा, मन्नू भगत, और टुन्नू बर्णवाल ने किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि उमाशंकर अकेला ने उपस्थित लोगों को आश्वासन दिया कि उनकी मांगों को मुख्यमंत्री तक पहुंचाया जाएगा।

लखनऊ में अखिल भारतीय बढ़ई समाज के कार्यक्रम में शामिल हुए समाजसेवी

तिसरी गिरिडीह। विश्वकर्मा राणा समाज के प्रधान समाजसेवी उमेश प्रसाद राणा मंगलवार को विशिष्ट अतिथि के रूप में सहकारिता भवन हजरतगंज लखनऊ, उत्तर प्रदेश में अखिल भारतीय बढ़ई समाज के कार्यक्रम में शामिल हुए। इस समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष विश्राम शर्मा , पूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय ज्ञानी जैल सिंह के पौत्र इंद्रजीत सिंह के साथ मंच शेयर करते हुए अपना विचार उन्होंने रखा। अपने विचार को रखते हुए उमेश प्रसाद राणा ने कहा कि हमारा समाज राजनीतिक क्षेत्र में उपेक्षित हो रहा है। हमारे समाज से कम आबादी होने के बावजूद अन्य समाज राजनीतिक भागीदारी में आगे बढ़ रहे हैं। इसलिए हम लोग को निरंतर सामाजिक कार्यक्रम कर सरकार तक अपने संदेश को पहुंचाना है।

आरोह फाउंडेशन ने आयोजित किया प्रमाण पत्र वितरण समारोह

बरही । मंगलवार को विजैया पंचायत भवन में सत्र 2023-24 में सफल कौशल प्रशिक्षणार्थियों के बीच प्रमाण पत्र वितरित किए गए. कार्यक्रम का आयोजन आरोह फाउंडेशन के तत्वाधान में किया गया था, जिसका संचालन जिला समन्वयक अजय रंजन मेहता ने किया. कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि एआईसीएल की आशा प्रसाद, हुसना प्रवीण और फाउंडेशन के स्टेट हेड संतोष आनंद शामिल हुए. श्री प्रसाद ने बताया कि कौशल प्रशिक्षण युवाओं के लिए वरदान है. जिला समन्वयक ने बताया कि बीते सत्र में 1900 प्रशिक्षणार्थियों को सिलाई, कढ़ाई आदि विभिन्न ट्रेडों में प्रशिक्षण दिया गया है. अतिथियों ने कौशल कोर्स की विशेषताओं की चर्चा करते हुए बताया कि यह बेरोजगारों के लिए तकनीकी हुनर है।

ग्रामीणों के हर सुख-दुख में मैं और मेरे कार्यकर्ता 24 घंटे हैं तैयार : रोशन लाल

नवीन मेल संवाददाता। बड़कागांव प्रखंड के गोंदलपूरा पंचायत के ग्राम जोराकाठ में कई दिनों से विद्युत ट्रांसफार्मर खराब हो गया था, जिसके वजह से पूरा गांव अंधेरे में था, जिसको लेकर इसकी सूचना पार्टी के केंद्रीय महासचिव सह विधानसभा प्रभारी रौशन लाल चौधरी को दिया गया। जिसमें आजसू नेता रौशन लाल ने त्वरित कार्रवाई करते हुए अपने नेतृत्व में जोराकाठ के ग्रामीणों को 200 केवी का ट्रांसफर उपलब्ध कराया। जिसका उद्घाटन मंगलवार को फीता काटकर किया। मौके पर जोड़ा काट के ग्रामीणों ने आजसू नेता रौशन लाल चौधरी का गाजे बाजे ढोल नगाड़े के साथ स्वागत किया।लोगों को संबोधित करते हुए आजसू नेता रौशन लाल चौधरी ने कहा कि में मैं और मेरे कार्यकर्ता 24 घंटे तैयार हैं ।हमारा एक ही उद्देश्य है, बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र का समुचित विकास साथ ही उन्होंने कहा कि यहां के जनप्रतिनिधि ट्रांसफार्मर के नाम पर राजनीति करते हैं । ट्रांसफार्मर हम सभी ग्रामीणों का अधिकार है ,क्योंकि हम सभी ग्रामीण बिजली बिल देते हैं ।ना कि फ्री में बिजली का उपयोग करते हैं। मौके पर मुख्य रूप से कारू महतो, सुकुल महतो सहित सैकड़ों ग्रामीण महिला-पुरुष उपस्थित थे।

स्वच्छता पखवाड़ा 2024 के तहत सफाई अभियान का हुआ आयोजन

बड़कागांव। स्वच्छता पखवाड़ा 2024 के अवसर पर एनएमएल बादम कोल माइनिंग प्रोजेक्ट द्वारा बडकागांव के ढेंगा में आर एंड आर कॉलोनी में स्थित आईआरबी बल आवास में एक महत्वपूर्ण सफाई अभियान का आयोजन किया गया। इस पहल का नेतृत्व बादम सीएमपी के परियोजना प्रमुख अरुण कुमार सक्सेना ने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ किया। अभियान का लक्ष्य समुदाय में सफाई और स्वच्छता को बढ़ावा देना था। प्रतिभागियों ने सार्वजनिक क्षेत्रों की सफाई, कचरा एकत्र करने और पर्यावरण को स्वच्छ रखने के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए मिलकर काम किया। अरुण कुमार सक्सेना ने इस बात पर प्रकाश डाला कि रहने की स्थिति में सुधार के लिए सभी का मिलकर काम करना कितना महत्वपूर्ण है। उन्होंने प्रतिभागियों को कार्यक्रम के बाद भी स्वच्छता का अभ्यास जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। अभियान में अधिकारियों और आईआरबी बल के सदस्यों की उत्साह पूर्वक भागीदारी देखी गई।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने बीडीओ का फूंका पुतला

तिसरी (गिरिडीह)। तिसरी प्रखंड कार्यालय में बीते दिनों बीडीओ मनीष कुमार द्वारा उनके दफ्तर में आई एक दलित महिला से दुर्व्यवहार और जाती सूचक शब्द का करने प्रयोग करने का मामला बढ़ता ही जा रहा है। मंगलवार की शाम इसको लेकर भारतीय जनता पार्टी के तिसरी व चंदौरी मंडल द्वारा संयुक्त रूप से जुलुस निकालकर बीडीओ मनीष कुमार का पुतला दहन किया है। प्रखंड मुख्यालय स्थित गांधी मैदान में भाजपाई जुटे और हाथों में पार्टी का झंडा लिए बीडीओ मनीष कुमार हाय- हाय, तिसरी बीडीओ होश में आओ,तिसरी बीडीओ की गुंडागर्दी नहीं चलेगी, तिसरी बीडीओ को बर्खास्त करो आदि नारे लगाते हुए प्रखंड मुख्यालय का भ्रमण किया। जिसके बाद चौक पर बीडीओ मनीष कुमार का पुतला दहन किया गया। इस दौरान भाजपा के जिला मंत्री मनोज यादव ने कहा कि रेखा देवी द्वारा नामक अशिक्षित दलित महिला को एससी से बदलकर ओबीसी श्रेणी में कर दिया गया था जिसे सुधरवाने के लिए वह महिला गयी थी। महिला ने अज्ञानता के कारण बीडीओ को चाय- पानी के लिए 100 रुपय देने का प्रयास किया लेकिन तिसरी बीडीओ मनीष कुमार द्वारा उक्त महिला के साथ अभद्र व्यवहार, जाती सूचक शब्द का प्रयोग और उसे एक घंटे तक बंधक बनाया गया जो निंदनीय है।

दो दिन पूर्व ढलाई के बाद फटने लगी सड़क जेई ने सड़क पुनः बनाने का दिया आदेश

बरकट्ठा। प्रखंड क्षेत्र के बड़ासिंगा से जमुआ तक सड़क का निर्माण की जा रही है। सड़क निर्माण आरईओ हजारीबाग के द्वारा की जा रही है। जहां ग्रामीणों ने सड़क निर्माण में घोर अनियमितता का आरोप लगाया है। लोगों के मुताबिक संवेदक द्वारा सड़क निर्माण में अधिक मात्रा में मिट्टी व मिक्स बालू का उपयोग और कम मात्रा में सीमेंट डालकर कार्य किया जा रहा है। पीसीसी सड़क दो दिन पूर्व ढाली गई लेकिन उक्त सड़क में कई जगह पर दरारें पड़ गई। जिसकी वीडियो शोशल मीडिया पर डालकर लोगों ने विरोध किया। इस दौरान लोगों ने जनप्रतिनिधि और अधिकारियों से जांच की गुहार लगाई है। जिसके बाद अधिकारियों ने मामले को संज्ञान में लिया।वहीं जेई रत्नेश कुमार ने संवेदक को निर्माण किए गए सड़क को तोड़ कर पुनः बनाने का आदेश दिया।

वरीय पुलिस अधीक्षक का कार्यालय, रॉची।

सर्वसाधारण के लिए सूचना।

अज्ञात पुरूष का शव उम्र करीब–50 वर्ष

उपरोक्त अज्ञात पुरूष का शव बरियातु थाना अन्तर्गत रिम्स ट्रामा सेंटर के बाहर अचेत अवस्था में पाया गया था, चिकित्सक के द्वारा मृत घोषित किये जाने के पश्चात अज्ञात मृतक का शव रिम्स रॉची के शीतगृह में सुरक्षार्थ रखा गया है। जिसके संबंध में बरियातु थाना यू0डी0 काण्ड सं0–10/2024, दिनांक–03.07.2024 दर्ज किया गया है। इनकी पहचान हेतु जनता का सहयोग अपेक्षित है।

अतः सभी जनसाधारण से अनुरोध है कि यदि आपको इस अज्ञात पुरूष के शव के बारे में जानकारी हो तो वरीय पुलिस अधीक्षक के कार्यालय रॉची में या संबंधित थाना या निम्नांकित फोन नम्बर पर संपर्क कर इसकी सूचना दें।

पुलिस उपाधीक्षक, सदर, रॉची। –9431102090
थाना प्रभारी बरियातु, रॉची। –9431706161

वरीय पुलिस अधीक्षक, रॉची।

PR 337761 (Police) 24-25 (D)

ई० प्रोक्यूरमेंट सेल, कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमण्डल संख्या–02, रॉची

अति अल्पकालिन ई–प्रोक्योरमेन्ट नोटिस
ई–टेन्डर रेफरेन्स नं0–11/2024-25/EE/BCD/DIV-2,RANCHI.
दिनांक–01.10.2024

1.	कार्य का नाम	Infrastructure Up gradation Work at JAP-IT Engineering Hostel No-01, HEC, Dhurwa, Ranchi.
2.	प्राक्कलित राशि (रू0)	राशि रू0 2,65,95000.00/– (दो करोड़ पैसठ लाख पंचानबे हजार) रूपये मात्र।
3.	कार्य पूर्ण की अवधि	4 (चार) माह
4.	वेबसाईट पर निविदा प्रकाशन की तिथि	08.10.2024 को 11:00 बजे
5.	बिड प्राप्ति के लिए अन्तिम तिथि/समय	14.10.2024 को 11:00 बजे तक
6.	निविदा प्रकाशित करने वाले कार्यालय का नाम एवं पता	कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमण्डल संख्या–02, रॉची।
7.	निविदा खोलने की तिथि/समय एवं स्थान	15.10.2024 को 11:30 बजे नोडल पदाधिकारी, ई0 प्रोक्यूरमेंट सेल, मुख्य अभियंता का कार्यालय, भवन निर्माण विभाग, लाईन टैंक रोड, झारखण्ड, रॉची
7.	प्रोक्योरमेन्ट पदाधिकारी का सम्पर्क संख्या	6203309676
8.	ई–प्रोक्योरमेन्ट सेल का हेल्पलाईन संख्या	7992430721

9. परिमाण विपत्र की राशि घट–बढ़ सकती है तदनुसार अग्रधन की राशि देय होगी।
10. सूचना प्रौद्योगिकी एवं ई–गवर्नेस विभाग, झारखण्ड, सरकार के आदेश ज्ञापांक 120 दिनांक 03.10.2023 के द्वारा निर्गत SOP (मानक संचालन प्रकिया) एवं भवन निर्माण विभाग, झारखण्ड, सरकार के पत्रांक 2229 दिनांक 06.10.2023 के आलोक में निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि केवल **Online Mode** द्वारा स्वीकार्य होगी।
11. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि का ई–भुगतान जिस खाता से किया जायेगा, SOP के तहत अग्रधन की राशि उसी खाते में वापस होगी। अगर खाता को बंद कर दिया जाता है तो उसकी संपूर्ण जवाबदेही निविदादाता की होगी।

- अन्य किसी भी प्रकार के बदलाव की सूचना http://jharkhandtenders.gov.in पर देखा जा सकता है।

Note:- UCAN Registration is mandatory for the Bidders

कार्यपालक अभियंता
भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमण्डल संख्या–02, रॉची।

PR.NO.337851 Building(24-25):D

नापोखुर्द में सड़क निर्माण का विधायक ने किया उद्घाटन

विद्यालय चारदीवारी व तालाब गहरीकरण की भी रखी आधारशिला

नवीन मेल संवाददाता। बड़कागांव विधायक अंबा प्रसाद ने नापोखुर्द में विभिन्न योजनाओं का शिलान्यास व उद्घाटन किया। इस दौरान विधायक ने ग्राम नागपुर खुर्द में रोहन साव के घर से शमशान घाट होते हुए हाई स्कूल जाने की ओर पथ एवं पुलिया निर्माण कार्य पूर्ण होने पर क्षेत्र वासियों की सुविधा हेतु उद्घाटन किया। वहीं लघु शिक्षा प्रमंडल द्वारा धुरधुरवा आहर मध्यम सिंचाई योजना जीणोधार कार्य व उत्क्रमित उच्च विद्यालय नापोखुर्द की आधारशिला रखी। शिलान्यास व उद्घाटन कार्यक्रम में पहुंचने पर गांववासियो में काफी खुशी देखी गई। महिलाएं भारी संख्या में विधायक अंबा प्रसाद के साथ शिलान्यास व उद्घाटन कार्यक्रम में शामिल हुई व उक्त विकास कार्यों पर खुशी जाहिर करते हुए आभार व्यक्त किया। मौके पर मुख्य रूप से पंचायत समिति सदस्य गणेश साव, विधायक प्रतिनिधि जगत नंदन प्रसाद गुप्ता सहित भारी संख्या में महिला पुरुष मौजूद थे।

खनन के दौरान अवैध चाल के धंसने से एक नाबालिग की मौत, एक गंभीर

नवीन मेल संवाददाता। गावां / गिरिडीह गावां थाना क्षेत्र के बेलाखुट्टा गांव से सटे पहाड़ी में ढिबरा उत्खनन के दौरान दो नाबालिग की मौत हो गई। हालांकि पुलिस ने अब तक एक शव को ही बरामद किया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार बेलाखुट्टा के पास खदान में मंगलवार को ढिबरा उत्खनन के दौरान अचानक चाल धंस गया। घटना में एक किशोर और किशोरी मलबे में दब गये। आनन फानन में उन्हें मलबे से निकाल कर इलाज के लिए सीएचसी गावां लाया गया। जहां चिकित्सकों ने एक को मृत घोषित कर दिया। जबकि दूसरे को बेहतर इलाज के लिए गंभीर स्थिति में गिरिडीह रेफर कर दिया। जहां उसकी स्थिति नाजुक बताई जा रही है। बताया जा रहा है कि इस दौरान एक किशोर की मौत घटना स्थल पर ही हो गई थी। जिसके शव को छुपा दिया गया। हालांकि उक्त शव को ढूंढने के लिए गावां थाना पुलिस ने घटना स्थल समेत अन्य स्थानों में काफी खोजबीन की लेकिन शव का पता नहीं चल पाया। घटनास्थल अत्यंत दुर्गम स्थल में है। उक्त स्थल में जाने के लिए तीन किलोमीटर पहले ही वाहन रोककर नदी को पार करते हुए पुलिस पहाड़ी तक पहुंची जहां रास्ते में खनन स्थल तक जेसीबी के पहिए के निशान स्पष्ट दिखाई पड़ रहे थे। अनुमान लगाया जा रहा है कि जेसीबी के द्वारा उत्खनन किए जाने के दौरान ऊपर के चाल गिरने से मौत हुई है। हालांकि मृतका के भाई अभिषेक कुमार ने गावां थाना में आवेदन देकर कहा है कि मेरी बहन बकरी चराने गई थी। इस बीच ओ माइका चुनने लगी तभी चाल धंस गया जिसमें दबने से उसकी मौत हो गई। घटनास्थल पर पुलिस की मौजूदगी में दूर के जंगल से बिस्फोट की आवाज सुनाई पड़ रही थी। जिससे साफ जाहिर होता है कि इन क्षेत्रों में व्यापक पैमाने पर माइका व ढिबरा का उत्खनन लगातार जारी है। अक्सर बरसात के समय मे लगभग हर वर्ष क्षेत्र में इस प्रकार की घटना होती रहती है।

थाना प्रभारी हुए लाइन हाजिर

एएसआई पांच हवलदार को किया गया सस्पेंड

नवीन मेल संवाददाता। पीरटांड़ गिरिडीह एसपी डॉ विमल कुमार ने पीरटांड़ थाना के थाना प्रभारी गौतम कुमार को लाइन हाजिर कर दिया है।इसके साथ ही पांच सिपाही,एक हवलदार और एक एएसआई को सस्पेंड कर दिया है।बताया जाता है कि कुछ दिन पूर्व पीरटांड़ के थाना प्रभारी समेत अन्य पुलिसकर्मियों पर बालू का एक ट्रैक्टर पकड़ने के बाद अवैध रुपये की मांग करने के साथ साथ ग्रामीणों से मारपीट करने का आरोप लगा था। इसके बाद कुछ राजनीतिक दलों ने दोषी पुलिस अधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई करते हुए अवैध रकम वापस करने की भी मांग की थी।जिसके बाद एसपी के निर्देश पर एक जांच टीम का गठन किया गया।जिसके बाद डुमरी एसडीपीओ सुमित कुमार के द्वारा जांच करायी गया। जांच में रकम वसूलने व मारपीट के मामले में ग्रामीणों का आरोप सही साबित हुआ। इसी आधार पर गिरिडीह एसपी ने तड़ित कार्रवाई करते हुए थाना प्रभारी को लाइन हाजिर एवं एक एएसआई सहित पांच हवलदार को सस्पेंड कर दिया गया।गिरिडीह एसपी ने बताया की जांच के बाद इस लोगो पर करवाई की गई है। पीरटांड़ थाना प्रभारी गौतम कुमार को लाइन हाजिर किया गया है,इसके अलावे सअनि कुशल सिंह, हवलदार शिवनंदन सिंह, आरक्षी पंकज कुमार राणा, प्रदीप मंडल, कैलाश प्रसाद वर्मा व संदीप कुमार को सस्पेंड कर दिया गया है।वही अब पीरटांड़ के नए थाना प्रभारी के रूप में दीपेश कुमार को थाना प्रभारी बनाया गया है।जबकि राजीव कुमार को पचंबा थाना प्रभारी बनाया गया है।

यादव समाज की बैठक में लिए गए कई निर्णय, हर प्रखंड में बनेगा यादव छात्रावास

नवीन मेल संवाददाता। गिरिडीह राष्ट्रीय यादव सेना के द्वारा यादव छात्रावास गिरिडीह में यादव समाज का जिला स्तरीय बैठक आयोजित किया गया। सर्वप्रथम श्री कृष्ण के प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। अध्यक्षता जिला सचिव इंद्रदेव यादव और संचालन जिला अध्यक्ष धर्मेंद्र यादव ने किया। बैठक में राष्ट्रीय यादव सेना गिरिडीह जिले के सभी प्रखंडों के पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित हुए। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में सांसद प्रतिनिधि सह नगर परिषद के पूर्व अध्यक्ष दिनेश प्रसाद यादव और सांसद प्रतिनिधि गुड्डू यादव उपस्थित हुए। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार से यादव समाज को संगठित करने के लिए राष्ट्रीय यादव सेना के द्वारा कार्य किया जा रहा है वह काफी सराहनीय है और समाज के हर एक व्यक्ति के सुख दुख में सेना के पदाधिकारी और सदस्य जिस प्रकार से खड़े रहते हैं वह काबिले तारीफ है। समाज में व्याप्त कुरीतियों और अंधविश्वास को दूर करने के लिए जागरूकता अभियान चलाने का निर्णय लिया गया। सभी प्रखंडों में प्रखंड कमेटी के पुनर्गठन के लिए 25 सदस्यीय कोर कमेटी का गठन किया गया और सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि सभी प्रखंडों में राष्ट्रीय यादव सेना प्रखंड कमेटी का पुनर्गठन किया जाएगा और उसके बाद जिले में एक भव्य यदुवंशी मिलन समारोह का आयोजन आयोजित किया जाएगा।

अबुआ आवास में अयोग्य लाभुकों के चयन पर डीसी को किया जाएगा पत्राचार

आंगनबाड़ी पर्यवेक्षिका क्षेत्र का भ्रमण नहीं करतीं : पंसस

नवीन मेल संवाददाता। गांडेय / गिरिडीह गांडेय प्रखंड परिसर के सभाकक्ष में मंगलवार को प्रमुख राजकुमार पाठक की अध्यक्षता में पंचायत समिति की मासिक बैठक का आयोजन किया गया। उक्त बैठक में अंचल, प्रखंड, आपूर्ति, समाज कल्याण, शिक्षा, बिजली विभाग अबुआ आवास, स्वास्थ्य सहित अन्य विभागों के विकासात्मक कार्यों की समीक्षा की गई। बैठक में शामिल विभाग के पदाधिकारियों ने प्रखंड के अंतर्गत योजनाओं की जानकारी उपस्थित सदस्य प्रखंड पशु चिकित्सा पदाधिकारी सुनील तिवारी ने बताया कि पशुपालन विभाग की और से एम्बुलेंस की व्यवस्था की गई है। अहिल्यापुर पंसस मोहन हाजरा ने कहा कि आंगनबाड़ी पर्यवेक्षिका क्षेत्र का भ्रमण नहीं करती है। उन्होंने कहा कि आंगनबाड़ी केंद्र के चावलों की कालाबाजारी की जा रही है। स्वास्थ्य विभाग के बीपीओ शिवनारायण मंडल ने कहा कि एडल्ट बीसीजी टीका का लक्ष्य इसी माह में पूर्ण कर लिया जाएगा। बीपीएम ने अबुआ स्वास्थ्य सुरक्षा योजना के बारे में जानकारी दी। बैठक में पंसस जामजोरी ने बताया कि विद्यालयों में छात्रों के साईकिल वितरण में छात्रों से 500-500 रुपये का वसूली की जाती है। उन्होंने शिक्षा विभाग से मामले की जांच की मांग किया है। पंसस ने कहा कि भातुपुर में आंगनबाड़ी केन्द्र नहीं खुलता है। बैठक में घाटकुल पंचायत के 5 डीलर पर अनाज वितरण की अनियमितता का आरोप लगाया गया है। बीडीओ ने मामले की जांच का आश्वासन दिया। उप प्रमुख किशोर मुर्मू ने कहा कि बरमसिया 1 पंचायत में अंबुआ आवास योजना के जियो टेक के नाम पर लाभुकों से राशि की उगाही की जा रही है। गांडेय पंसस मधुमाला देवी ने कहा कि ढाकोडीह गांव में सड़क का अभाव है। उक्त गांव में मिट्टी मोरम सड़क का निर्माण होना जरुरी है। गांडेय प्रमुख राजकुमार पाठक ने कहा कि प्रखंड के विभिन्न पंचायतों में अंबुआ आवास योजना में राशि की उगाही की जा रही है।

सामाजिक सहायता केंद्र का खुला कार्यालय

लोगों की समस्याओं का समाधान करने में मदद करेगा केंद्र : सुनील

नवीन मेल संवाददाता। बरकट्ठा प्रखंड क्षेत्र के प्रोजेक्ट गर्ल्स हाई स्कूल बरकट्ठा के समीप खुले सामाजिक सहायता केंद्रीय कार्यालय में युवा समाजसेवी सुनील कुमार ने प्रेस वार्ता किया।इस निमित उन्होने बताया कि जनता की आवाज को मजबूत करने,जनता को जागरूक और इसके माध्यम से सशक्त बनाने, सरकार की जवाबदेही को आकार देने में पत्रकारों की बड़ी सहभागिता होती है। उन्होंने बताया कि आम नागरिक का जो अधिकार है वह मतदान का अधिकार है। चुनाव की प्रक्रिया के समय लोग अपना मतदान करते हैं एवं अपने क्षेत्र के प्रतिनिधि चुनते हैं और उनके द्वारा चुने गए प्रतिनिधि जनता की समस्याओं को सड़क से सदन तक पहुंचाने हेतु आवाज बुलंद करते हैं ' लेकिन अक्सर ऐसा देखा जा रहा है की जब चुनाव आता है तो उस समय मतदाताओं को छोटे-छोटे प्रलोभन, झूठे वादे देकर, उनको बहला फुसलाकर, उनकी असली ताकत मतदान की ताकत को गलत तरीके से मतदान करा कर गलत प्रतिनिधि का चयन कर दिया जाता है ' ऐसी स्थिति में उस क्षेत्र का सर्वांगीण विकास रुक जाती है। इसलिए हमलोगों ने सामाजिक सहायता केंद्र के माध्यम से एवं आप मीडिया बंधुओं के सहयोग से अंतिम व्यक्ति तक हम लोग पहुंच कर उनकी हर सुख-दुख में उनके लिए काम करेंगे ' इसके लिए हम लोगों ने एक टीम गठन किया है और बरकट्ठा विधानसभा क्षेत्र के संबंधित सभी प्रखंडों एवं पंचायत से जुड़े सभी गांवों में सामाजिक सहायता केंद्र के माध्यम से उन्हें जागरूक करने का कार्य, अधिकारों एवं हक दिलाने का कार्य तथा सरकारी योजना से लाभान्वित कराने में सामाजिक सहायता केंद्र मदद करेगी। साथ ही साथ अगर किन्हीं का कुछ समस्या हो तो हमें लिखित रूप से इस कार्यालय में आवेदन दें। हर संभव जल्द से जल्द उनकी समस्या को नियमानुसार मदद किया जाएगा ' युवाओं में बढ़ती बेरोजगारी को देखते हुए केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा चलाए जा रहे रोजगार युक्त योजनाओं से युवाओं को जोड़कर उन्हें रोजगार देना एवं आम जनता के बुनियादी समस्या पर विशेष ध्यान रखा जाएगा ।कहा कि आप सबों से मेरा एक ही अनुरोध होगा कि आप हमसे जुड़े और लोगों को भी जुड़ने के लिए प्रेरित करें।

कार्यालय नगर परिषद् रामगढ़।

नगर परिषद्, रामगढ़ क्षेत्र अन्तर्गत अति–अल्पकालिन आमंत्रण सूचना।
अति अल्पकालिन सूचना संख्या –NIT/RGH/NP/05/2024-25(3rd Call) Re- Tender

1 निविदा निकालने वाले पदाधिकारी : कार्यपालक पदाधिकारी, नगर परिषद् रामगढ़।
2 निविदा वेबसाईट पर प्रकाशन की तिथि : दिनांकः 03.10.2024
3 निविदा प्रपत्र ऑनलाईन भरने की अंतिम तिथि : दिनांकः 13.10.2024 अपराहन 02:00 बजे तक।
4 निविदा प्रपत्र ऑनलाईन भरने का वेबसाईट : केवलई–निविदा(http://jharkhandtenders.gov.in)
5 निविदा खोलने की तिथि व समय एवं स्थान : दिनांकः 14.09.2024 अपराहन् 2.30 बजे तक।
6 मद का नाम : नागरिक सुविधा/शहरी परिवहन
7 हेल्पलाईन नं0 : 9962405690 9110072039

क्र0 सं0	वार्ड नं0	योजना का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रधन की राशि	विपत्र का मूल्य	कार्य करने का समय
1	02	Construction of Drain from old NH-33 DAV Public School Udari Kristain in ward No-02	2198100.00	43962.00	5000	90दिन
2	11	Construction OF PCC Road from H/O Sadruddin Ansari to H/O Aslam Ansari via H/O Dullu in Ward No-11	1439100.00	28782.00	5000	90दिन
3	17	Construction of PCC Road from land of Digamabar MAhto to Chhat Ghat Damodar Nadi in Ward No.17(Part-I)	2218650.00	44373.00	5000	90दिन
4	17	Construction of PCC Road from land of Digamabar MAhto to Chhat Ghat Damodar Nadi in Ward No.17(Part-II)	2218650.00	44373.00	5000	90दिन
5	17	Construction of PCC Road from Land of Bartu Mahto to H/O Mukesh Mahto in ward No-17	2218700.00	44374.00	5000	90दिन
6	18	Construction of Drain Dr. Aeshrarul Haque to H/O Rajesh Urawn in Ward No-18	1952800.00	39056.00	5000	90दिन
7	26	Construction of Drain from Water Tank to Culvert via NH-23 in Ward No-26	2392350.00	47847.00	5000	90दिन
8	31	Construction of Drain from H/O Tikeshwar Mahto to H/O Guddu Mahto via Birbal Mahto in ward No-31	2323100.00	46462.00	5000	90दिन
9	31	Construction of Drain from H/O sapan Mahto to Shiv Mandir in ward No-31	1395200.00	27904.00	5000	90दिन

नोटः–
1. केवल ई–निविदा ही स्वीकार की जाएगी।
2. नगर विकास एंव आवास विभाग के अधीनस्त समुचित श्रेणी या एक श्रेणी उपर निबंधित संवेदको से निविदा आमंत्रित की जाती है।
3. निविदा की शर्ते एवं अन्य जानकारीयॉं http://jharkhandtenders.gov.in पर एवं नगर परिषद कार्यालय के सूचना पट्ट पर कार्य दिवस में 11:00 बजे पूर्वाहन से 04:30 अपराहन तक देखा जा सकता है।
4. जिन किन्ही भी संवेदक (प्रोपराईटशिप अथवा पार्टनरशिप) फर्म पर का कार्य लम्बित होगा (यानि समयावधि के अन्तगर्त पूर्ण नहीं हुआ है) उन्हें कार्य आवंटन में प्राथमिकता नहीं दी जायेगी।
5. जिन संवेदकों को कार्यालय द्वारा नियमानुसार कार्य आवंटित होने के पश्चात संवेदकों के द्वारा एकरारनामा नहीं किया जाता है तो ऐसी परिस्थिति में उनके द्वारा समर्पित की गई अग्रधन की राशि जब्त कर ली जायेगी।
6. जिन किन्ही भी संवेदको का कार्य लम्बित होगा (यानि समयावधि के अन्तगर्त पूर्ण नहीं हुआ है) उन संवेदको को कार्य आवंटन में प्राथमिकता देने के लिए कार्यालय बाध्य नहीं हो सकती है।

PR 337792 District(24-25)D

कार्यपालक पदाधिकारी नगर परिषद्, रामगढ़

संपादकीय

अहिंसक गांधी ने भी बाहुबल से संघर्ष की बात कही थी

महात्मा गांधी ने सत्य के साथ ही नहीं अन्य भी कई प्रयोग किए थे जिसको लेकर विवाद भी है पर गांधी जी ने दमन और अन्याय के चलन के विरुद्ध तीन प्रकार की प्रतिक्रियाओं को रेखांकित किया था। उनका कहना था कि इनके खिलाफ हमारी एक प्रतिक्रिया तो यह हो सकती है कि हम कायर हो जाएं। कायरता का यह तरीका दूसरों की गलती को, उसकी ज्यादतियों को सहन करना या इस सामना करने के बजाय भाग खड़ा होना है। दूसरा विकल्प अन्याय और दमन के खिलाफ खड़ा होना है और अपने बाहुबल से संघर्ष करना है। यह दूसरा तरीका, गांधी जी कहते है, अत्याचार को स्वीकार करने या पीठ दिखाकर मैदान छोड़ देने से बेहतर है। लेकिन वह तीसरा रास्ता सब में बेहतर है। वह सर्वाधिक साहस मांगता है और और संपूर्ण रुप से अहिंसक तरीकों से मुकाबला का आग्रह करता है। गांधी जी ने सत्य और अहिंसा के अपने सिद्धांतों को पुरातन भारत के हिंदूवाद, बौद्ध धर्म और जैन धर्म की सनातनी शिक्षाओं, यहां तक की न्यू टेस्टामेंट, टॉलस्टॉय, रूसो, अर्नाल्ड और थोरो के आधार पर गढ़े थे। वे यहीं तक नहीं रुके, उन्होंने उनके अवदानों को निष्ठा से व्यवहारिक स्वरूप भी दिया। किताबी ज्ञान से संतुष्ट न होते हुए गांधी ने अपने अनुभवों से सीखा। उन्होंने सत्य,अहिंसा और ब्रह्मचर्य के साथ प्रयोग किया और उनसे अपने उपकरण और औजार निर्मित किए, जिनका दमन के प्रति जनसंघर्ष, लोगों को लामबंद करने, प्रतिरोध को धार देने और व्यवस्था के वांछित रूपांतरण के व्यावहारिक लक्ष्यों के लिए उनका इस्तेमाल किया। महात्मा गांधी ने अपने अनुभवों और अनुप्रयोगों के बल पर सार्वभौम सत्य का वरण किया था। अहिंसक असहयोग नैतिकता के बल पर आधारित था जो आंदोलनकारियों के लिए एक आम उपकरण बन गया। गांधी का स्पष्ट मानना था कि अहिंसक प्रतिरोध के पास एक नैतिक बल होता है, जब सत्याग्रही इसे खो देते हैं तो उनका प्रतिरोध हिंसक हो जाता है। इस पाठ को दुनिया भर के आंदोलनकारियों ने ग्रहण किया है।गांधी जी की सबसे बड़ी विशेषता उनका अंतिम आदमी के पक्ष में खड़े होने की प्रतिबद्धता थी। उनका दूसरा आयाम यह था कि वह निरंतर अपने को परिमार्जित करते रहते थे। उन्होंने वही बताया, जिन पर वह विश्वास करते थे और जिन पर वे स्वयं अमल करते थे। इन आचरणों ने उनमें इतना नैतिक बल भर दिया जिससे कि उनके कट्टर विरोधी भी उनको नजरअंदाज करने का साहस नहीं कर पाते थे। वह अंतिम सांस लेने तक कुछ न कुछ सार्थक बदलाव का प्रयास करते रहे थे। यह सब वह ताकत के जोर पर नहीं, किसी हुकुमनामे के जरिए नहीं बल्कि सत्य और अहिंसा के नैतिक बल के आधार पर करते थे।गांधी जी के लिए आध्यात्मिकता, नैतिकता, राजनीति और अर्थशास्त्र अविभाज्य थे। उनकी दृष्टि में राजनीति से धर्म का बनावटी बंटवारा समस्या पैदा करता है। उनका कहना था कि धर्म को कर्मकांड से नहीं समझा जा सकता बल्कि इसे एथिक्स, प्रेम और सेवा, कर्तव्य और उत्तरदायित्व की भावनाओं से ही भली भांति समझा जा सकता है।

> गांधी जी ने सत्य और अहिंसा के अपने सिद्धांतों को पुरातन भारत के हिंदूवाद, बौद्ध धर्म और जैन धर्म की सनातनी शिक्षाओं, यहां तक कि न्यू टेस्टामेंट, टॉलस्टॉय, रूसो, अर्नाल्ड और थोरो के आधार पर गढ़े थे।

नवरात्र का नारी सशक्तिकरण का संदेश

डॉ. सौरभ मालवीय

भारतीय पर्व हमारी सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक हैं। इनसे हमें ज्ञात होता है कि हमारी प्राचीन संस्कृति कितनी विशाल, संपन्न एवं समृद्ध है। यदि नवरात्रि की बात करें तो यह पर्व भी भारतीय संस्कृति की महानता को दशार्ता है। विगत कुछ दशकों से देश में महिला सशक्तीकरण की बात हो रही है। कुछ लोग विदेशों के उदाहरण देते हैं कि वहां की महिलाएं सशक्त हैं तथा उन्हें बहुत से अधिकार प्राप्त हैं। किंतु ये लोग अपने देश के इतिहास पर चिंतन एवं मनन नहीं करते हैं। वास्तव में भारत विश्व का एकमात्र ऐसा देश है, जहां महिलाओं को पुरुषों के समान माना गया है। उदाहरण के लिए भारत में देवियों की पूजा-अर्चना की जाती है। यहां पर उन्हें भी देवताओं के समान ही पूजा जाता है, अपितु देवियों का स्थान देवता से पहले आता है जैसे राधा-कृष्ण, सीता-राम आदि। भगवान शिव के साथ देवी पार्वती की भी पूजा की जाती है। भगवान राम के साथ देवी सीता की पूजा की जाती है। हमारी मान्यता के अनुसार शक्ति की देवी दुर्गा है। धन एवं समृद्धि की देवी लक्ष्मी है तथा ज्ञान की देवी सरस्वती है। कहने का अभिप्राय यह है कि मनुष्य को जीवन में जिन वस्तुओं की आवश्यकता होती है, वह सब उन्हें इन देवियों से ही तो प्राप्त होती हैं। मानव जीवन को अनुशासन में रखने एवं आदर्श जीवन को स्थापित करने के लिए भगवान हमारे विश्वास और श्रद्धा के केंद्र है।

नवरात्रि देवी दुर्गा को समर्पित महत्वपूर्ण पर्व है। नवरात्रि का पर्व वर्ष में चार बार आता है अर्थात चैत्र, आषाढ़, अश्विन, माघ। इनमें से चैत्र एवं आश्विन माह में आने वाली नवरात्रि अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। माघ एवं आषाढ़ माह में आने वाली नवरात्रि को गुप्त नवरात्रि कहा जाता है, क्योंकि इनमें कोई सार्वजनिक उत्सव का आयोजन नहीं किया जाता है। आश्विन माह में आने वाली नवरात्रि को शारदीय नवरात्रि कहा जाता है। इसका आरंभ अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि से होता है। इस दिवस पर शुभ मुहूर्त में कलश की स्थापना की जाती है। नवरात्रि में नौ दिन देवी दुर्गा के नौ रूपों की पूजा-अर्चना की जाती है।

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्।।
पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्।।
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मनाः।।

अर्थात देवी पहली शैलपुत्री, दूसरी ब्रह्मचारिणी, तीसरी चंद्रघंटा, चौथी कूष्मांडा, पांचवी स्कंध माता, छठी कात्यायिनी, सातवीं कालरात्रि, आठवीं महागौरी एवं नौवीं देवी सिद्धिदात्री है।

शैलपुत्री : नवरात्रि के प्रथम दिन देवी दुर्गा के प्रथम स्वरूप मां शैलपुत्री की पूजा-अर्चना की जाती है। मां शैलपुत्री को सफेद वस्तुएं अत्यंत प्रिय हैं,

इसलिए उन्हें सफेद मिष्ठान का भोग लगाया जाता है। यह प्रसाद गाय के शुद्ध घी से बनाया जाता है। सफेद रंग पवित्रता एवं शांति का प्रतीक माना जाता है। जीवन में सर्वाधिक पवित्रता एवं शांति का ही महत्व है। इनके बिना सब व्यर्थ है। देवी की साधना से सुख एवं समृद्धि में वृद्धि होती है।

ब्रह्मचारिणी : नवरात्रि के दूसरे दिन देवी देवी दुर्गा के द्वितीय स्वरूप मां ब्रह्मचारिणी की पूजा-अर्चना की जाती है। मां ब्रह्मचारिणी को शक्कर एवं पंचामृत का भोग लगाया जाता है। शक्कर जीवन में मिठास का प्रतीक है। जिस प्रकार भोजन में मिष्ठान का महत्व है, उसी प्रकार जीवन में मधुर वाणी का महत्व है। मृदु भाषी व्यक्ति सबका मन मोह लेते हैं। देवी की साधना से भाग्य में वृद्धि होती है तथा आयु भी लम्बी होती है।

चंद्रघंटा : नवरात्रि के तीसरे दिन देवी दुर्गा के तृतीय स्वरूप मां चंद्रघंटा की पूजा-अर्चना की जाती है। मां चंद्रघंटा को दुग्ध से बने मिष्ठान एवं खीर का भोग लगाया जाता है। खीर भी दुग्ध से बनाई जाती है। दुग्ध समृद्धि एवं अच्छे स्वास्थ्य का प्रतीक है। देवी की साधना से व्यक्ति बुरी शक्तियों से सुरक्षित रहता है।

कुष्मांडा: नवरात्रि के चौथे दिन देवी दुर्गा के चतुर्थ स्वरूप मां कुष्मांडा की पूजा-अर्चना की जाती है। मां कुष्मांडा को मालपुये का भोग लगाया जाता है। देवी की साधना से मनुष्य की समस्त इच्छाएं पूर्ण होती हैं।

स्कंदमाता: नवरात्रि के पांचवें दिन देवी दुर्गा के पांचवे स्वरूप स्कंदमाता की पूजा-अर्चना की जाती है। स्कंदमाता को फल विशेषकर केला अत्यंत प्रिय है, इसलिए उन्हें केले का भोग लगाया जाता है। देवी की साधना से सुख एवं एश्वर्य में वृद्धि होती है।

कात्यायनी: नवरात्रि के छठे दिन देवी दुर्गा के छठे स्वरूप मां कात्यायनी की पूजा-अर्चना की जाती है। मां कात्यायनी को मीठे पान एवं मधु का भोग लगाया जाता है। देवी की साधना से दुखों का नाश होता है तथा जीवन में सुख का आगमन होता है।

कालरात्रि: नवरात्रि के सातवें दिन देवी दुर्गा के सातवे स्वरूप मां कालरात्रि की पूजा-अर्चना की जाती है। मां कालरात्रि को गुड़ अत्यंत प्रिय है, इसलिए उन्हें गुड़ से बने व्यंजन का भोग लगाया जाता है। देवी की साधना से समस्त नकारात्मक शक्तियों का नाश होता है तथा सकारात्मकता में वृद्धि होती है। जीवन सुखी हो जाता है।

महागौरी : नवरात्रि के आठवें दिन देवी दुर्गा के आठवे स्वरूप मां महागौरी की पूजा-अर्चना की जाती है। मां महागौरी को नारियल अत्यंत प्रिय है, इसलिए उन्हें नारियल का भोग लगाया जाता है अर्थात नारियल अर्पित किया जाता है। देवी की साधना से व्यक्ति के रुके हुए कार्य पूर्ण होते हैं।

सिद्धिदात्री : नवरात्रि के अंतिम दिन देवी दुर्गा के नौवें स्वरूप मां सिद्धिदात्री की पूजा-अर्चना की जाती है। इस दिन कन्या पूजन का विधान है। कन्याओं की पूजा की जाती है। उन्हें भोजन ग्रहण कराया जाता है। इसके पश्चात उनके चरण स्पर्श कर उनसे आशीर्वाद लिया जाता है। कन्याओं को प्रसाद के साथ उपहार भेंट किए जाते हैं। तदुपरांत देवी को काले चने, हलवा पूड़ी एवं खीर का भोग लगाया जाता है। देवी की साधना से व्यक्ति के समस्त पापों का नाश होता है तथा उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

वास्तव में नवरात्रि का पर्व नारी शक्ति का उत्सव है। प्राचीन काल से ही यह पर्व भारतीय संस्कृति में नारी शक्ति का प्रतीक रहा है। कन्या पूजन इस बात को सिद्ध करता है कि भारतीय समाज में कन्या का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। कन्या भ्रूण हत्या तथा नवजात कन्याओं का वध कर देने जैसी बुराइयां हमारे समाज में कब और कैसे सम्मिलित हो गईं, ज्ञात ही नहीं हो पाया। निरंतर घटता लिंगानुपात अत्यंत चिंता का विषय बना हुआ है। विदेशों में भारत की जिन बुराइयों का उल्लेख कुछ लोग बड़े गर्व के साथ करते हैं, वे बुराइयों तो हमारे समाज में कभी नहीं थीं। जिस समय विश्व के अधिकांश देश अशिक्षित एवं असभ्य थे, उस समय हमारा देश शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी था। पुरुष ही नहीं, अपितु महिलाएं भी शिक्षित थीं। वे शास्त्रार्थ करती थीं, अस्त्र-शस्त्र चलाती थीं। देवियों ने कितने ही राक्षसों का अकेले वध किया है।

नारी को ईश्वर ने श्रेष्ठ बनाया है। अनेक मामलों में वह पुरुष से उच्च स्थान पर है। वह जन्मदात्री है। जिस प्रकार एक स्त्री अपने बालकों का पालन-पोषण कर लेती है, उस प्रकार एक पुरुष उनका पालन-पोषण नहीं कर पाता। स्त्री पूरे परिवार का संचालन सुंदर तरीके से करती है। नारी संस्कार की जननी है उसके अंदर ममता, स्नेह, उदारता,आत्मीयता ,प्यार ,दुलार आदि गुण जीवन का हिस्सा है । ईश्वर ने नारी को अत्यंत सबल बनाया है। नारी प्रत्येक क्षेत्र में अपनी योग्यता एवं प्रतिभा का सफल प्रदर्शन कर रही है।

(ये इनके निजी विचार हैं)

अलग बात

अस्पताल के खर्चों में पारदर्शिता जरूरी

विकसित भारत के अस्पतालों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं को बढ़ते कर्ज और वित्तीय संसाधनों की कमी से जूझना पड़ता है, सरकार नियंत्रण खोती जा रही है, पूरे देश के राज्यों में यही धींगामस्ती का आलम है। आप शासित राज्य को पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय की फटकार ने पंजाब सरकार की वित्तीय प्राथमिकताओं में घोर कुप्रबंधन को ही उजागर किया है,पूरे देश में यही ढर्रा है। विडंबना यह है कि शासन-प्रशासन ने पंजाब सहित कई राज्य में स्वास्थ्य संबंधी दायित्व तो पूरे नहीं किए, लेकिन तंत्र के विलासितापूर्ण खर्चे बदस्तूर जारी है। कमजोर वर्ग के मरीजों को राहत देने के मकसद से शुरू की गई आयुष्मान भारत योजना के तहत केंद्र सरकार से मिले तीन सौ पचास करोड़ रुपये प्राप्त करने के बावजूद सरकार अस्पतालों के लिये यह धनराशि जारी करने में विफल रही। जिसके चलते चिकित्सा संस्थानों का राज्य सरकार पर करीब पांच सौ करोड़ धन बकाया रह गया है। यह विडंबना ही है कि शासन की यह लापरवाही ऐसे समय में उजागर हुई है जब पंजाब राज्य के सारे अस्पताल वित्तीय संकट के कारण मरीजों को पर्याप्त चिकित्सा सुविधा देने के लिये संघर्ष कर रहे हैं। कोर्ट के आदेश पर वरिष्ठ स्वास्थ्य अधिकारियों का वेतन रोकने का यह कदम जवाबदेही तय करने की दिशा में एक अनुकरणीय पहल है। यह मामला स्वास्थ्य जैसी आवश्यक सेवा की अनदेखी से जुड़ा है। राजनेताओं के लिये नई कारों, कार्यालयों के नवीकरण का खर्च व महंगे विज्ञापन जैसे गैर आवश्यक खर्च के लिये इस धन के खर्च करने के कारण यह मामला बेहत गंभीर हो गया है। जिसके चलते अदालत ने इस दिशा में सख्त कार्रवाई की जरूरत को रेखांकित किया है। जो हर राज्य सरकार के लिये एक सबक है। यह प्रकरण बताता है कि शासन प्रशासन अपनी प्राथमिकताओं के निर्धारण में कितना संवेदनहीन बन जाता है। वह चिकित्सा सुविधाओं के लिये आवंटित धन के दुरुपयोग से भी गुरेज नहीं करता है। कैसी विडंबना है कि मरीजों को सस्ता व जरूरी उपचार सुनिश्चित करने वाली योजना के लिये आवंटित धन को विलासिता के लिये खर्च करने में गुरेज नहीं किया गया। निश्चय ही यह घटनाक्रम खराब शासन को ही दशार्ता है। वहीं सार्वजनिक कल्याण के लिये प्रशासन की प्रतिबद्धताओं से जुड़ी नैतिक चिंताओं पर भी सवालिया निशान लगाता है। ऐसे ही आर्थिक कुप्रबंधन के चलते पंजाब की वित्तीय परेशानियां लगातार बढ़ते राजकोषीय घाटे के कारण और भी बढ़ गई हैं। जिसका दबाव आवश्यक सार्वजनिक सेवाओं पर पड़ रहा है। राज्य द्वारा धन का गलत तरीके से आवंटन शासन की विफलता को ही दशार्ता है। **(ये इनके निजी विचार हैं)**

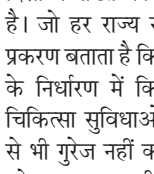

राकेश दुबे

देश की बात

भारत में आतंक को महिमामंडित करतीं इस्लामिक शक्तियां

आतंकवाद एक प्रकार की हिंसात्मक गतिविधि है। अगर कोई व्यक्ति या कोई संगठन अपने आर्थिक, राजनीतिक एवं विचारात्मक लक्ष्यों की प्रतिपूर्ति के लिए देश या देश के नागरिकों की सुरक्षा को निशाना बनाए, तो उसे आतंकवाद कहते हैं। गैर-राज्यकारकों द्वारा किये गए राजनीतिक एवं वैचारिक हिंसा भी आतंकवाद की ही श्रेणी में आती है। आतंकवाद, राजनीतिक कार्रवाई है, जिसमें किसी राष्ट्र के शासन और उसकी जनता को भय और मनोबल से गिराने के लिए असाधारण हिंसक साधनों का प्रयोग किया जाता है। (आतंकवादः क्यूबा कनेक्शन, रोजर डब्ल्यू. फॉनटेन, 1988, पृ. 4)। आतंकवाद की दी गई इस परिभाषा के साथ हम यूएन द्वारा परिभाषित की गई आतंक के अर्थ को भी समझ लेते हैं। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, आतंकवाद कोई भी ऐसा कार्य है जिसका उद्देश्य किसी नागरिक को या सशस्त्र संघर्ष की स्थिति में शत्रुता में सक्रिय भाग नहीं लेने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मृत्यु या गंभीर शारीरिक चोट पहुंचाना हो, जब ऐसे कार्य का उद्देश्य, अपनी प्रकृति या संदर्भ के अनुसार, जनसंख्या को डराना हो या किसी सरकार या अंतरराष्ट्रीय संगठन को कोई कार्य करने या न करने के लिए बाध्य करना हो। संयुक्त राष्ट्र (1999) आतंकवाद के वित्तपोषण के दमन के लिए अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन अनुच्छेद 2 (बी) संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 9 दिसंबर 1999 को संकल्प 54/109। अब आप इन दोनों ही परिभाषाओं के आधार पर 'हिज्बुल्लाह' को रखिए, यह सर्वविदित है कि यूरोपीय संघ ने 22 जुलाई 2013 को हिजबुल्लाह के सैन्य विंग को एक आतंकवादी संगठन के रूप में नामित किया था। 'हिज्बुल्लाह' को संयुक्त राज्य अमेरिका और कई अन्य देशों द्वारा एक आतंकवादी संगठन के रूप में चिन्हित किया गया है। लेबनान पर इजरायली आक्रमण के जवाब में 1982 में गठित हिज्बुल्लाह स्वयं को (अल्लाह की पार्टी) कहता है। हिज्बुल्लाह की अर्धसैनिक शाखा जिहाद परिषद है। यह समूह इजरायल के खिलाफ संघर्ष में फिलिस्तीनी अस्वीकृति समूहों का भी समर्थन करता है और इराक में पश्चिमी हितों पर हमला करने वाले इराकी शिया उग्रवादियों को प्रशिक्षण प्रदान करता है।

डॉ. मयंक चतुर्वेदी

(ये इनके निजी विचार हैं)

फेसबुक वॉल से

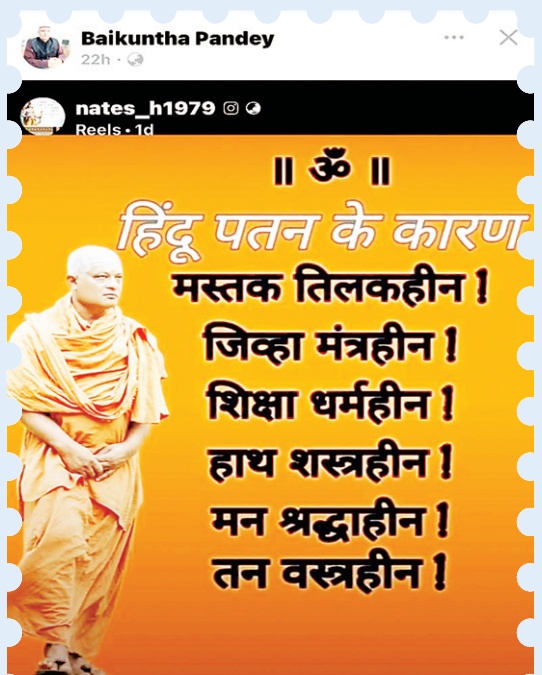

X से

रचना भेजिए

समाचारों के संबंध में शिकायत, सुझाव या इस पेज के लिए आर्टिकल कृपया भेजें article.rnmail@gmail.com कॉल/व्हाट्सएप 82925 53444। **-संपादक**

आज का दोहा

आंखों में पहचान है, बातों में अनजान।
चेहरे पर हैं तल्खियां, होठों पर मुसकान।।
सोमदत्त शर्मा, गाजियाबाद (उ.प्र.)

आपकी बात

महात्मा गांधी की जीवन दृष्टि

गांधीजी का जन्म उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में हुआ था, आधी बीसवीं सदी तक के दौरान वे भारतीय समाज और राजनीति की धुरी बन गए और अब इक्कीसवीं सदी में हम सब उनके मिथक से रूबरू हो रहे हैं। विश्वव्यापी अंग्रेजी साम्राज्य से अहिंसक लड़ाई के साथ उनका स्वाधीन भारत का स्वप्न सत्य हुआ। देश में रचनात्मक बदलाव के लिए वे सबको साथ ले कर चलते रहे। उनकी स्वीकार्यता का दायरा आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक यानी जीवन के सभी क्षेत्रों में निरंतर बढ़ता गया। संयम और आत्म-बल के साथ कर्मवीर गांधी ने जो ठाना उसे पूरा करने के लिए सर्वस्व लगा दिया। समाज के स्तर पर मानव कर्तृत्व की विरल गाथा बना उनका निजी जीवन पीड़ा, संघर्ष और अनिश्चय से भरा था। देश के लिए समर्पण की मिसाल बने गांधीजी अंतिम जन की मानवीय गरिमा की रक्षा के लिए की मोर्चों पर डटे रहे। वे देश के विभाजन और आजादी के साथ शुरू हुई हिंसा से क्षुब्ध और दुखी थे। बंगाल में नोआखाली से लौट दिल्ली में दंगापीड़ितों की सेवा सुश्रूशा में जुट गए। विभाजन की विभीषिका बड़ी दारुण थी और विचलित तथा हताश गांधीजी ने स्वतंत्र भारत में अपने पहले जन्मदिन यानी 2 अक्टूबर 1947 को दुखी हो कर कहा था कि वे अब जीना नहीं चाहते और विधि का विधान यह हुआ कि वह सचमुच उनका आखिरी जन्मदिन सिद्ध हुआ। पांच बार की असफल कोशिशों के बाद 30 जनवरी 1948 को दिल्ली के बिड़ला हाउस में उनकी हत्या हो गई। गौरतलब है कि गांधीजी स्वतंत्र भारत में करीब पांच महीने जीवित रहे थे और इस बीच यह बूढ़ा सेनानी स्वप्न-भंग से गुजर रहा था। अब कोई उनकी सुन नहीं रहा था। ये दिन उनके लिए बड़े तकलीफदेह थे। गांधीजी ने अपने जीवन की कथा को पारदर्शी बनाए रखा। 'सत्य' और 'नैतिकता' से जूझती इस कथा को उन्होंने 'एक खुली किताब' कहा। उनका साहस ही था कि वह कह सके कि 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।' प्रिय-अप्रिय, अच्छे-बुरे हर पहलू को वह सबसे साझा किए। वे सही अर्थों में सत्य के पुजारी थे और जो भी है वह सत्य है इसलिए उसे झूठ के सहारे छिपाना अपराध ही होता। सत्य पर उनका भरोसा बढ़ता गया और वे कथनी और करनी में एका लाने में लागातार जुटे रहे। तभी वह पहनावा, खानपान और मेलमिलाप आदि सब में सरल भारतीय जीवन शैली को अपना सके। वे प्रामाणिकता की कसौटी पर खरे उतरते रहे। विचार को कर्म में तब्दील करने पर जोर देने वाले गांधीजी परिवर्तन चाहने वाले को खुद अपने में बदलाव लाने के लिए कहते हैं। यह खुद उनकी अपनी जिन्दगी की सीख थी। बहुत हद तक प्रयासपूर्वक संयमित जीवन जीते हुए वह जगत की नियमबद्धता में प्रकट हो रहे परमात्मा में आस्था और विश्वास रखते थे। चूँकि नजरिए स्वाभाविक रूप से भिन्न होते हैं विविधता सहज संभाव्य होती है। गैर-जानकारी में लोग अपने से अलग दूसरी दृष्टियों को गलत या हीन ठहराने लगते हैं। गांधीजी अपनी प्रार्थना सभा में सभी प्रमुख धर्मों की प्रार्थनाओं को शामिल करते थे। वे मानते थे सभी एक ही तत्व से बने हैं इसलिए कोई अछूत नहीं और किसी का भी स्वामित्व नहीं। सभी ट्रस्टी हैं इसलिए (अपना हक न जमाते हुए) त्यागपूर्वक भोग करना चाहिए। गांधीजी धैर्य और दृढ़ता के साथ सत्य (ईश्वर), अहिंसा (प्रेम) और अपरिग्रह (जरूरत भर संग्रह) जैसे विचारों को अमली जामा पहनाते रहे और दैनन्दिन जीवन में शामिल करते रहे। इस दृष्टि से उनकी उर्वर मानसिकता और सृजनशीलता असंदिग्ध है। भारत और विदेश में हो रहे अनुभवों को समेटते और पचाते हुए गांधीजी खुले मन से मानवीय चेतना के आत्म-बोध को रचते रहे। वे कई अर्थों में समकालीनों से अलग हट कर गांधीजी ने अपना रास्ता बनाया और उस पर चलने की तैयारी की थी और जोखिम उठाकर भी उस पर चलते रहे। गांधीजी देश के लम्बे स्वतंत्रता-संग्राम में दो दशकों तक केंद्र-बिन्दु रहे। **(ये इनके निजी विचार हैं)**

गिरीश्वर मिश्र

गांधी जयंती (2 अक्टूबर) पर विशेष

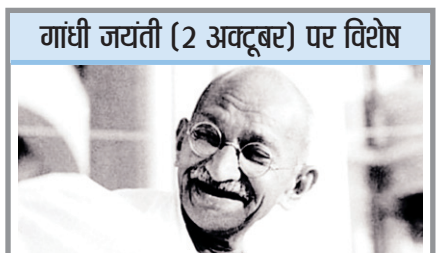

अपने भीतर से सर्वश्रेष्ठ को व्यक्त करना

बोधि वृक्ष

मैं ईश्वर के विचारों को जानना चाहता हूँ बाकी सब तो विवरण हैं। पहला काम जिसे हमें करना है, वह आत्मनिरीक्षण है। अपने आपकी और अपनी आदतों की जाँच करें, और पता लगाएँ कि आपके मार्ग में कौन-सी बाधा है।

मुझमें बदलने की इच्छा-शक्ति है। मैं बदलूँगा! दिन भर इस विचार में बने रहें, और इसे निद्रा के अवचेतन प्रदेश तथा ध्यान के अधिचेतन साम्राज्य में अपने साथ ले जायें।

श्री श्री परमहंस योगानंद

अत्यन्त सरलता से आपको बस इतना ही करना है कि सकारात्मक विचारों को लाकर, जिन विचारों को आप नष्ट करना चाहते हैं उनको सोचना बन्द कर दें। यह स्वर्ग की कुंजी है; यह आपके हाथों में है। बीसवीं शताब्दी के अग्रणीय भौतिकविद् पुनः खोज कर रहे हैं। ब्रिटिश वैज्ञानिक, सर जेम्स जीन्स ने लिखा, विश्व एक मशीन की अपेक्षा एक महान विचार प्रतीत होने लगा है। और आईंस्टाइन ने कहा था, मैं जानना चाहता हूँ कि ईश्वर ने यह संसार कैसे बनाया। मेरी इस या उस घटना में, इस या उस तत्व के वर्णक्रम में रुचि नहीं है। मैं ईश्वर के विचारों को जानना चाहता हूँ बाकी सब तो विवरण हैं। पहला काम जिसे हमें करना है, वह आत्मनिरीक्षण है। अपने आपकी और अपनी आदतों की जाँच करें, और पता लगाएँ कि आपके मार्ग में कौन-सी बाधा है। प्रायः यह निष्क्रियता, या निश्चित, अविभाजित प्रयास एवं ध्यान की कमी होती है। कभी-कभी कुछ ऐसी आदतें होती हैं जिनको आपकी जीवन बगिया से निकालने की आवश्यकता होती है, ताकि सच्ची प्रसन्नता और अधिक दृढ़ता से जड़ें पकड़ सके। प्रगति का एक रहस्य आत्मविश्लेषण है। अन्तर्निरीक्षण एक दर्पण है जिसमें आप अपने मन के उन गुप्त स्थानों में झाँक सकते हैं जो अन्यथा आपसे छिपे रह जाएँगे। **(क्रमशः)**

स्वामी, पारिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एंव मुद्रक हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा 502, मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान, हरमू रोड, रांची से प्रकाशित एवं एस एच प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड (पूर्व में शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड), नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पम्प, रातू, रांची-835222, झारखंड द्वारा मुद्रित। रजिस्ट्रेशन नं: BIHHIN/1999/155, प्रधान संपादक : सुरेश बजाज, संपादक : हर्षवर्द्धन बजाज, कार्यकारी संपादक : सुनील सिंह 'बादल'*, समाचार संपादक : त्रिभुवन कुमार सिन्हा, प्रेस कार्यालय : रांची रोड, रेड़मा, मेदिनीनगर (डालटनगंज) पलामू-822102, फोन नंबर : 06562-796018, रांची कार्यालय : 502बी, पांचवी मंजिल, मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान हरमू रोड, रांची-834001, फोन नंबर : 0651-3553943, ई-मेल : news.rnmail@gmail.com, article.rnmail@gmail.com (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार।)

भाजपा ने कांग्रेस की सरकारों पर लगाया कई जमीन घोटाले का आरोप

कांग्रेस के कुछ नेता 'प्रॉपर्टी डीलर' बन गए हैं : रविशंकर

एजेंसी। नई दिल्ली

भाजपा ने कांग्रेस की सरकारों पर कई जमीन घोटाले करने का आरोप लगाते हुए गांधी परिवार के साथ-साथ पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे पर भी निशाना साधा है। पूर्व केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने मंगलवार को मीडिया से बात करते हुए सवाल पूछा कि आखिर कांग्रेस पार्टी की सरकारों में जमीन डील को लेकर इतना प्रेम क्यों होता है? उन्होंने कहा कि हरियाणा में हुड्डा सरकार के दौरान लैंड डील का मामला सामने आया, कर्नाटक में सिद्धारमैया की मुडा डील चल रही है। अब, कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष खड़गे के परिवार के सिद्धार्थ विहार सोसायटी की चर्चा भी सामने आ गई है। इससे पहले दामाद बाबू की चर्चा भी खूब हो चुकी है। राजस्थान में अशोक गहलोत और हरियाणा में हुड्डा की सरकारों का कितना आशीर्वाद उन्हें मिला था। प्रसाद ने कांग्रेस पार्टी के नेताओं पर बड़ा आरोप लगाते हुए कहा कि आज हम भाजपा की ओर से सवाल उठाना चाहते हैं कि आखिर कांग्रेस पार्टी की सरकारों को लैंड डील से इतना प्यार क्यों है? यह स्पष्ट है कि कांग्रेस सरकार और उसके नेताओं को जमीन डील का बहुत शौक है। कांग्रेस के कुछ नेता 'प्रॉपर्टी डीलर' बन गए हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस जहां-जहां भी सत्ता में आई, वहां-वहां लैंड डील करवाई। कांग्रेस नेता जमीन हड़पने के अभियान में लगे हुए हैं। भाजपा इसकी कड़ी भर्त्सना करती है। उन्होंने कहा कि कर्नाटक में सिद्धारमैया के मुडा डील की ईमानदारी से जांच हो रही है और होनी भी चाहिए। सोनम वांगचुक के मसले पर राहुल गांधी के बयान पर पलटवार करते हुए उन्होंने कहा कि वे पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु की घटना पर चुप क्यों रहते हैं? जयराम रमेश और अन्य कांग्रेस नेताओं के बयान को लेकर पूछे गए सवाल पर पलटवार करते हुए भाजपा नेता ने कहा कि मणिपुर एक संवेदनशील विषय है, हम सबको वहां मिलकर काम करना है, वहां काम (शांति स्थापित करने के लिए) किया जा रहा है। कांग्रेस को इससे बाहर निकलकर आना चाहिए। कांग्रेस यह स्पष्ट करे कि वह आतंकवाद के मसले पर प्रधानमंत्री के स्टैंड के साथ है या नहीं? लेकिन, कांग्रेस इस पर अभी तक चुप है।

खड़गे परिवार को दी गई जमीन में कई संदेहास्पद बातें

कर्नाटक में हुए मुडा घोटाले के बारे में विस्तार से बोलते हुए प्रसाद ने कहा कि अभी इस मामले की आग ठंडी भी नहीं हुई थी कि सिद्धार्थ विहार सोसायटी का मामला सामने आ गया है। इसके बारे में कहा जाता है कि यह कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के परिवार से संबंधित है। खड़गे साहब के परिवार को दी गई जमीन में कई संदेहास्पद बातें हैं, मामला कोर्ट में है और कोर्ट अपना काम करेगा। लेकिन, खड़गे कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं, राज्यसभा में विपक्ष के नेता भी हैं, तो इसका जवाब तो उन्हें और कांग्रेस पार्टी को देना पड़ेगा। खड़गे और राहुल गांधी, प्रधानमंत्री मोदी से बहुत सवाल पूछते हैं, सवाल पूछना उनका हक है। लेकिन, हम यह उम्मीद भी करते हैं कि वे इस जमीन आवंटन मामले में ईमानदारी, पारदर्शिता और प्रामाणिकता के साथ जवाब देंगे। इस बारे में उठ रहे सारे सवालों का जवाब देंगे।

वांगचुक से मिलने पहुंचीं आतिशी, पुलिस ने नहीं दी अनुमति

नई दिल्ली (हि.स.)। दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी मंगलवार को लद्दाख के सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक से मिलने बवाना थाने पहुंचीं। उनका कहना है कि उनको मिलने नहीं दिया गया। लेह (लद्दाख) से दिल्ली तक पदयात्रा कर सोनम वांग्चुक दिल्ली सीमा तक पहुंचे। उनका इरादा राजघाट स्थित गांधी समाधि पर धरना देना था। सोमवार को दिल्ली पुलिस ने उन्हें सिंघु बॉर्डर पर रोक लिया। दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी मंगलवार सुबह उनसे मिलने पहुंची। बाद में उन्होंने थाने के बाहर पत्रकारों को बताया कि मुझे सोनम वांग्चुक से मिलने नहीं दिया। मैं उनसे मिलने इसलिए गई कि वे भी हमारी तरह, दिल्ली की तरह ही लद्दाख के लिए पूर्ण राज्य का दर्जा दिए जाने की मांग कर रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि यह सब दिल्ली के राज्यपाल के इशारे पर किया जा रहा है।

उपराष्ट्रपति ने राजश्री बिड़ला को लाल बहादुर शास्त्री पुरस्कार प्रदान किया

एजेंसी। नई दिल्ली

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने मंगलवार को उपराष्ट्रपति एन्क्लेव में आदित्य बिड़ला सामुदायिक पहल और ग्रामीण विकास केंद्र की अध्यक्ष राजश्री बिड़ला को 25वां लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय उत्कृष्टता पुरस्कार, 2024 प्रदान किया। उपराष्ट्रपति ने इस मौके पर अपने संबोधन में कहा कि राजश्री बिड़ला पिछले तीन दशकों से शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के विभिन्न रूपों में मानवता की सेवा कर रही हैं। उन्होंने कहा कि लाल बहादुर शास्त्री का नाम सुनते ही देशभक्ति की याद आ जाती है। शास्त्री जी जनसेवा की परिभाषा देते हैं। वे आत्म-बलिदान के प्रतीक थे। शास्त्री जी ने आचरण और व्यवहार की मिसाल कायम की, उपदेशों की नहीं। कुछ ऐसे व्यक्तित्व होते हैं, जिन्हें किसी इवेंट मैनेजमेंट या सिस्टमेटिक एक्टिंग की जरूरत नहीं होती। वे हमारी यादों में बसे रहते हैं। वे हमारा मार्गदर्शन करते हैं, हमें प्रेरित करते हैं। जब हम भुखमरी के संकट से जूझ रहे थे, तब पूरा देश उनके साथ खड़ा था। वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने आह्वान करके लोगों की भागीदारी को बढ़ावा दिया। उनका आह्वान महज आह्वान नहीं था, बल्कि तत्कालीन परिदृश्य से उपजा था, अकल्पनीय आयाम का खतरा था। कल्पना कीजिए कि उन्होंने किस परिदृश्य में कार्यभार संभाला होगा। वे अकेले ऐसे व्यक्ति थे, जो इसे संभाल सकते थे। उपराष्ट्रपति ने कहा कि हम इवेंट मैनेजमेंट के ऐसे समय में जी रहे हैं, जहां व्यक्ति को ऐसे मापदंडों के आधार पर सम्मानित किया जाता है, जो हैरान करने वाले होते हैं। सार्वजनिक स्थानों पर लोगों को उस स्तर तक ऊपर पहुंचा दिया जाता है, जिसे पचा पाना मुश्किल होता है। लेकिन, हाल के वर्षों में एक प्रतिमान बदलाव हुआ है। उदाहरण के लिए, पद्म पुरस्कार उन लोगों को दिए जा रहे हैं, जो इसके हकदार हैं। यही वजह है कि इस पुरस्कार की विश्वसनीयता और बढ़ गई है। यह पुरस्कार भी इसी धारा में आता है। उन्होंने कहा, यह क्षण हमेशा मेरी यादों में रहेगा कि मैं मानवता के एक महान व्यक्ति को सम्मानित कर रहा हूं।

फिल्म अभिनेता गोविंदा के पैर में लगी गोली

एजेंसी। मुंबई

फिल्म अभिनेता गोविंदा के पैर में मंगलवार सुबह करीब पांच बजे गोली लग गई। रिवॉल्वर साफ करते समय यह हादसा हुआ।

रिवॉल्वर साफ करते समय हुआ हादसा, अस्पताल में भर्ती

घायल गोविंदा को तत्काल क्रिटिकेयर अस्पताल में भर्ती कराया गया। इस घटना की जांच जुहू पुलिस स्टेशन की टीम कर रही है। पुलिस के अनुसार आज सुबह करीब पांच बजे फिल्म अभिनेता गोविंदा अपनी रिवॉल्वर साफ कर रहे थे। उसी समय गोविंदा की उंगली से रिवॉल्वर का ट्रिगर दब गया, जिससे मिसफायर होकर गोली गोविंदा के पैर में लग गई। तत्काल गोविंदा को अस्पताल में भर्ती करवाया गया, जहां उनके पैर की सर्जरी हुई है। अब वह ठीक बताए जा रहे हैं। गोविंदा को गोली लगने की खबर सुनकर उनके प्रशंसक चिंतित हैं। फैंस उनके जल्द ठीक होने की दुआ कर रहे हैं।

कृषि संबंधी समस्याओं के लिए राज्य सरकारों से करेंगे बात : शिवराज सिंह

एजेंसी। नई दिल्ली

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान मंगलवार को अपने आवास पर किसान संगठनों के प्रतिनिधियों से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने प्रतिनिधियों से कृषि से संबधित समस्याओं पर चर्चा की। उन्होंने आश्वासन दिया कि वे उनकी समस्याओं का केंद्र और राज्य दोनों स्तरों पर समाधान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं और इस संबंध में वे राज्यों से बातचीत करेंगे। किसान प्रतिनिधियों से मुलाकात के बाद शिवराज सिंह चौहान ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि कृषि से संबधित छोटी-छोटी समस्याओं का समय रहते निदान होने पर उत्पादन में 10 से 20 फीसदी तक वृद्धि हो जाती है। किसान संगठनों मिले सुझाव और उनके सामने आने वाली समस्याओं पर चर्चा की गई है। इसके लिए राज्य सरकारों से बात की जाएगी और समस्याओं को हल करने का प्रयास किया जाएगा। शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि किसान संगठनों का कहना है कि सरकारी योजनाओं की जानकारी किसानों तक नहीं पहुंच रही है। सभी किसानों की फसलों का बीमा नहीं हो पा रहा है। जानकारी के अभाव में अन्य सरकारी योजनाओं का लाभ भी किसानों क नहीं मिल रहा है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि किसान संगठनों ने उनसे खेतों में जल जमाव पर भी चिंता जताई है। उनकी चिंता है कि इससे फसलों की उत्पादकता प्रभावित होती है। वे सरकार से खेतों में होनेवाले जल जमाव की समस्या को दूर करने के उपाय चाहते हैं। शिवराज सिंह चौहान ने बताया कि किसान संगठनों की राय है कि अत्यधिक रसायनिक खाद व कीटनाशक के उपयोग से धरती को नुकसान पहुंच रहा है। वे इस दिशा में सरकार से मदद चाहते हैं कि कीटनाशक व रसायनिक खाद का कम से कम उपयोग हो, इसका रास्ता निकाला जाए। इस दिशा में सरकार कृषि विज्ञानिकों से विचार-विमर्श कर सलाह देती रहती है। विभिन्न माध्यमों से किसानों को जागरूक किया जाता रहा है। अब इस समस्या का समाधान करने में तेजी लाई जाएगी। उल्लेखनीय है कि कृषि मंत्री ने प्रत्येक माह के पहले मंगलवार को किसानों के साथ बैठक कर चर्चा करने का निर्णय लिया है।

हरियाणा में एक ही नारा 'भरोसा दिल से, भाजपा फिर से' : मोदी

एजेंसी। नई दिल्ली

प्रधानमंत्री ने हरियाणा के पलवल में किया चुनावी सभा को संबोधित

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को हरियाणा के पलवल में एक चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा के समर्थन की लहर हर गांव में फैल रही है और एक ही नारा गूंज रहा है- भरोसा दिल से, भाजपा फिर से। प्रधानमंत्री मोदी ने पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा कि हरियाणा का ट्रैक रिकॉर्ड लगातार दिल्ली की राजनीतिक भावनाओं को दशार्ता है। दिल्ली में लगातार तीसरी बार भाजपा की सरकार चुनने के बाद, यह स्पष्ट है कि हरियाणा भी इसी राह पर चलने के लिए तैयार है, जिससे यहां भी भाजपा सरकार का तीसरा कार्यकाल तय है। प्रधानमंत्री मोदी ने हरियाणा की भावना को याद करते हुए कहा कि यह एक ऐसी भूमि है, जिसने दुनिया को भगवद गीता की शिक्षा दी है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हरियाणा ने हमेशा कड़ी मेहनत का मूल्य सिखाया है और लोगों से समर्पण के साथ काम करने का आग्रह किया। उन्होंने कांग्रेस पार्टी की कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि कांग्रेस का फॉर्मूला है- ना काम करो और ना दूसरों को काम करने दो। कांग्रेस की राजनीति केवल झूठे वादों तक सीमित रहती है, जबकि भाजपा की राजनीति मेहनत और परिणामों पर टिकी है। प्रधानमंत्री ने कांग्रेस के भ्रष्टाचार की हदें उजागर करते हुए कहा कि जब 1 रुपया भेजा जाता था, तो गरीबों तक सिर्फ 15 पैसे ही पहुंचते थे।

राजनाथ ने वायु वीर विजेता कार रैली को किया रवाना

दुनिया के सबसे ऊंचे वायु सेना स्टेशनों में से एक थोइस में होगा समापन

एजेंसी। नई दिल्ली

भारतीय वायु सेना की 92वीं वर्षगांठ पर रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने मंगलवार को राष्ट्रीय युद्ध स्मारक से वायु वीर विजेता कार रैली को गर्मजोशी से रवाना किया। इसके साथ ही महिलाओं सहित 50 से अधिक वायु योद्धा लद्दाख के थोइस के लिए रवाना हो गए हैं। यह सभी अरुणाचल प्रदेश के तवांग तक एक अभियान पर निकलेंगे, जो नौ राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों (यूटी) से होकर कुल सात हजार किलोमीटर की दूरी तय करेंगे। कार रैली के विभिन्न चरणों में पूर्व वायु सेना प्रमुख भी जगह-जगह शामिल होंगे। इस अवसर पर रक्षा मंत्री ने कठिन परिस्थितियों में वीरता, समर्पण और देशभक्ति के साथ मातृभूमि की सेवा करने वाले वायु योद्धाओं की सराहना की। उन्होंने कहा कि भारतीय वायु सेना ने देश और उसके लोगों की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। यह देश के दुश्मनों को उनके क्षेत्र में अंदर तक घुसकर मुंहतोड़ जवाब देने में सक्षम है। केंद्र सरकार भारतीय वायु सेना को सबसे उन्नत विमानों, प्लेटफॉर्मों से लैस करने और 'आत्मनिर्भर भारत' पहल के माध्यम से उन्हें और अधिक सक्षम बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। रक्षा मंत्री ने कहा कि कार रैली के दौरान वायु योद्धा विभिन्न राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों के स्कूलों और कॉलेजों में युवाओं के साथ बातचीत करेंगे। राजनाथ सिंह ने कठिन और विविध इलाकों से होकर गुजरने वाली इस रैली का हिस्सा बनने वाले वायु योद्धाओं को अपनी शुभकामनाएं दीं। औपचारिक ध्वजारोहण 8 अक्टूबर को थोइस में होगा, जो समुद्र तल से 3,068 मीटर की ऊंचाई पर दुनिया के सबसे ऊंचे वायु सेना स्टेशनों में से एक है। 29 अक्टूबर को तवांग में रैली के समापन से पहले वायु योद्धा लेह, कारगिल, श्रीनगर, जम्मू, चंडीगढ़, देहरादून, आगरा, लखनऊ, गोरखपुर, दरभंगा, बागडोगरा, हासीमारा, गुवाहाटी, तेजपुर और दिरांग में रुकेंगे।

आज का राशिफल

मेष : मन प्रसन्न बना रहेगा। अचल संपत्ति की खरीद अथवा कृषि उद्यम में रुचि पैदा होगी। परिवार के साथ मनोरांजनिक स्थल की यात्रा होगी। आपसी प्रेम-भाव में बढ़ोतरी होगी। भविष्य की योजनाओं पर विचार-विमर्श होगा। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। सभी का सहयोग मिलेगा।

वृष : दिन-भर का माहौल आडंबरपूर्ण और व्ययकारी होगा। वरिष्ठ लोगों से कहासुनी के कारण तनाव पैदा हो सकता है। संयमित भाषा का इस्तेमाल करें। कुछ कार्यक्रम बदलने होंगे। आवेग में आकर किये गए कार्यों का मलाल, अवसाद रहेगा। उतावलेपन से बचें। प्रेमभाव बढ़ेगा।

मिथुन : घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। मनोरथ सिद्धि का योग है। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। सभा-सोसायटी में सम्मान मिलेगा। पद-प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे।

कर्क : सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। प्रेमभाव बढ़ेगा। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। स्त्री-संतान पक्ष का सहयोग मिलेगा।

सिंह : कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। स्वविवेक से कार्य करें। दुर्लभ स्वप्न साकार होंगे।

कन्या : आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं। कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते हैं। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। स्त्री पक्ष का सहयोग मिलेगा।

तुला : व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। शत्रुभय, चिंता, संताप को कष्ट अपव्यय के कारण बनेंगे। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। आय-व्यय समान रहेगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। मेल-मिलाप से कोशिश सफल होगी।

वृश्चिक : कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सवेरे ही निपटा लें, क्योंकि आगे कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा।

धनु : यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। अपने काम को प्राथमिकता से करें चिंतनीय वातावरण से मुक्ति मिलेगी।

मकर : मेहमानों का आगमन होगा। राजकीय कार्यों से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। नैतिक दायरे में रहें। मेहमानों का आगमन होगा। पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। विद्यार्थियों को लाभ। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। वाहन चालन में सावधानी बरतें। आय के अच्छे योग बनेंगे। सफलता मिलेगी।

कुंभ : परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा। सफलता मिलेगी।

मीन : अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। मित्रों से सावधान रहें तो ज्यादा उत्तम है। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। इच्छित कार्य सफल होंगे। सुख-आनंद कारक समय है।

नैनीताल के आसमान में दिखा दुर्लभ खगोलीय नजारा

नैनीताल। नैनीताल के आसमान में एक रोमांचक और दुर्लभ खगोलीय नजारा रिकॉर्ड किया गया है। यहां धूमकेतु सी/2023 ए-3 सुचिनशान एवं एटलस यानी एस्ट्रोइड टेरेस्ट्रियल एंड इंमैक्ट लास्ट अलर्ट सिस्टम को नैनीताल के आकाश से गुजरते हुए देखा गया। एक एस्ट्रो फोटोग्राफर ने इसे अपने कैमरे में कैद करने में भी सफलता पाई है। इस धूमकेतु पर एरीज के वैज्ञानिक भी नजर रखे हैं। वैज्ञानिक के अनुसार इसे 12-13 अक्टूबर को भी बिना किसी उपकरण के आंखों से देखा जा सकता है। बताया गया है कि धूमकेतु सी/2023 ए-3 सुचिनशान एवं एटलस को जनवरी 2023 में जिजियांग वेधशाला, चीन, एटलस, हवाई ने खोजा था। विशेषज्ञों ने बताया था कि यह धूमकेतु सूर्य के काफी नजदीक से गुजरने वाला है और यह वर्ष के सबसे चमकीले खगोलीय पिंडों में से एक हो सकता है। इसकी चमक लगातार बढ़ रही है और इस माह के दौरान सर्वाधिक करीब से नग्न आंखों से यानी बिना किसी उपकरण के भी उत्तरी गोलार्ध के आकाश में सूर्योदय से पहले और सूर्यास्त के बाद पश्चिम दिशा में देखा जा सकेगा।

केदारनाथ धाम दर्शन को पहुंचे प्रधानमंत्री के भाई पंकज मोदी

केदारनाथ धाम। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के छोटे भाई पंकज मोदी मंगलवार को भगवान केदारनाथ के दर्शन के लिए धाम पहुंचे। केदारनाथ का जलाभिषेक कर उन्होंने जनकल्याण की कामना की। बद्रीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी) मुख्य कार्याधिकारी विजय प्रसाद थपलियाल ने हेलीपैड पर उनकी अगवानी की और तीर्थ पुरोहितों सहित मंदिर समिति ने हैलीपेड पर पंकज मोदी का स्वागत किया। इसके पश्चात पंकज मोदी सीधे केदारनाथ मंदिर पहुंचे। भगवान केदारनाथ का जलाभिषेक किया और रूद्राभिषेक पूजा संपन्न की।

सुपरस्टार रजनीकांत की तबीयत अचानक बिगड़ी, अस्पताल में भर्ती

एजेंसी। मुंबई

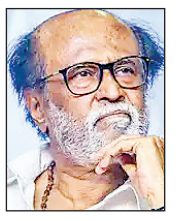

सुपरस्टार रजनीकांत की हालत अचानक बिगड़ने पर उन्हें चेन्नई के अपोलो अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पेट दर्द की शिकायत के बाद रजनीकांत को सोमवार रात अस्पताल में भर्ती कराया गया। रिपोर्ट्स के मुताबिक, आधी रात को रजनीकांत ने पेट दर्द की शिकायत की। 73 वर्षीय रजनीकांत की हालत अब स्थिर है और कुछ मेडिकल टेस्ट के बाद उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी जाएगी। रजनीकांत की पत्नी लता ने उनकी सेहत पर अपडेट दिया है। हालांकि, उन्होंने ज्यादा जानकारी नहीं दी है। उन्होंने कहा कि फिलहाल सबकुछ ठीक है। रजनीकांत के अस्पताल में भर्ती होने की खबर के बाद बड़ी संख्या में उनके प्रशंसक सोशल मीडिया पर रजनीकांत के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना कर रहे हैं।

अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर लगे सहायक उपकरण वितरण शिविर

नई दिल्ली। केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ वीरेंद्र कुमार ने मंगलवार को अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के मौके पर देश भर के 51 स्थानों पर लगाए गए सहायक उपकरण वितरण शिविर का उद्घाटन किया। नई दिल्ली स्थित डॉ अंबेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रीय वयोश्री योजना के अंतर्गत शिविरों में वरिष्ठ नागरिकों को दैनिक दिनचर्या में सहायक उपकरण प्रदान किए गए। इस कार्यक्रम में राज्य मंत्री बीएल वर्मा भी मौजूद रहे।

सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा की पहली महिला महानिदेशक बनीं आरती सरीन

एजेंसी। नई दिल्ली

शल्य चिकित्सक वाइस एडमिरल आरती सरीन, सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा (डीजीएएफएमएस) की पहली महिला महानिदेशक बनी हैं। वाइस एडमिरल आरती सरीन ने 1 अक्टूबर 2024 को सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा की महानिदेशक का पदभार संभाला। वह यह पदभार संभालने वाली पहली महिला अधिकारी हैं। सुप्रीम कोर्ट द्वारा मेडिकल प्रोफेशनल्स के लिए सुरक्षित कार्य स्थितियों और प्रोटोकॉल तैयार करने के लिए हाल ही में आरती सरीन को राष्ट्रीय टास्क फोर्स के सदस्य के रूप में भी नियुक्त किया गया है। वाइस एडमिरल आरती सरीन को भारतीय सशस्त्र बलों की तीनों शाखाओं में सेवाएं देने का दुर्लभ गौरव प्राप्त है। उन्हें भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट से कैप्टन तक, भारतीय नौसेना में सर्जन लेफ्टिनेंट से सर्जन वाइस एडमिरल तक तथा भारतीय वायु सेना में एयर मार्शल के रूप में कार्य करने का अनुभव है। 46वें डीजीएएफएमएस के रूप में पदभार संभालने से पहले, वाइस एडमिरल आरती सरीन ने डीजी मेडिकल सर्विसेज (नौसेना), डीजी मेडिकल सर्विसेज (वायु) और पुणे स्थित सशस्त्र बल चिकित्सा महाविद्यालय के निदेशक और कमांडेंट के पदों पर कार्य किया है। रक्षा मंत्रालय के मुताबिक वाइस एडमिरल आरती सरीन, एएफएमसी, पुणे की पूर्व छात्रा हैं। उन्होंने दिसंबर 1985 में सशस्त्र बल चिकित्सा सेवाओं में कार्यभार संभाला था। वह एएफएमसी, पुणे से रेडियो डायग्नोसिस में एमडी हैं। मुंबई के टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल से रेडिएशन ऑन्कोलॉजी में डिप्लोमेट नेशनल बोर्ड होने के साथ ही उन्होंने पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय से गामा नाइफ सर्जरी में प्रशिक्षण भी प्राप्त किया है। अपने 38 वर्षों के कार्यकाल में वाइस एडमिरल आरती सरीन, ने प्रोफेसर और प्रमुख, रेडिएशन ऑन्कोलॉजी, आर्मी हॉस्पिटल में काम किया है। वह कमांड हॉस्पिटल पुणे में कमांडिंग ऑफिसर रह चुकी हैं। उन्होंने दक्षिणी और पश्चिमी नौसेना कमान में कमांड मेडिकल ऑफिसर के पदों पर कार्य किया है। वाइस एडमिरल आरती सरीन को वर्ष 2024 में अति विशिष्ट सेवा पदक से सम्मानित किया गया था। इससे पहले उन्हें वर्ष 2021 में विशिष्ट सेवा पदक से सम्मानित किया जा चुका है। उन्हें विशिष्ट सेवा के लिए चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ प्रशस्ति (2017), चीफ ऑफ नेवल स्टाफ प्रशस्ति (2001) और जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ प्रशस्ति (2013) से भी सम्मानित किया गया है।

सुकन्या समृद्धि योजना के नियमों में हुआ है बड़ा बदलाव

नई दिल्ली। सितंबर खत्म हो गया है और अक्टूबर का आगाज हो गया। ऐसे में नए महीने की शुरुआत होते ही सुकन्या समृद्धि योजना में बड़ा बदलाव हुआ है। नए नियम के मुताबिक, सुकन्या समृद्धि योजना के खातों का संचालन बेटी के कानूनी अभिभावक या उसके माता-पिता ही कर सकते हैं। सुकन्या समृद्धि योजना की शुरुआत पीएम मोदी ने साल 2015 में की थी। पीएम मोदी ने बेटियों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए इस योजना को शुरू करने का निर्णय लिया था, ताकि माता-पिता को कम उम्र से ही अपनी बेटी के लिए बचत शुरू करने को प्रोत्साहित किया जा सके। एक बेटी के नाम पर केवल एक ही सुकन्या समृद्धि खाता खोला जा सकता है। इस योजना में महज 250 रुपये से अकाउंट को ओपन कराया जा सकता है। सरकार की ओर से इस योजना में लगभग आठ फीसद से अधिक ब्याज मिलता है। इस खाते को बेटी के जन्म के समय या फिर 10 साल की उम्र तक ही खोला जा सकता है।अगर आपको सुकन्या समृद्धि योजना में खाता खुलवाना हो, तो आप अपने घर के पास स्थित डाकघर या इस योजना के तहत पंजीकृत बैंक के कार्यालय जा सकते हैं।

उत्तर बिहार में हाहाकार अररिया में दो की मौत

एजेंसी। पटना

नेपाल की बारिश से उत्तर बिहार में आई बाढ़ रोज नए क्षेत्रों में प्रवेश कर रही है। पश्चिम चंपारण-पूर्वी चंपारण, शिवहर, सीतामढ़ी के बाद यह अब मुजफ्फरपुर और दरभंगा के नए इलाकों में फैलने लगा है, जिससे बाढ़ क्षेत्र में रहने वाले लोगों के लिए मुसीबत खड़ी हो गई है। अररिया जिले में मंगलवार को बाढ़ के पानी से दो शवों को निकाला गया है। अररिया में बाढ़ के पानी में डूबने से दो की मौत हो गई है। अररिया में बहने वाली नदियों के जलस्तर में इजाफा के कारण निचले इलाकों में फैले पानी के कारण उत्पन्न बाढ़ की समस्या के बीच मंगलवार को एक किशोरी समेत एक अन्य युवक के शव मिले हैं। दोनों मामले दो अलग-अलग थाना क्षेत्रों रानीगंज और जोकीहाट के हैं। जोकीहाट थाना क्षेत्र के धनपुरा के पास बलुआ धार में डूबने से हबीबा नाम की किशोरी की मौत हो गई। दूसरा मामला, रानीगंज थाना क्षेत्र के कोशकापुर उत्तर पंचायत का है। यहां वार्ड संख्या एक नित्यानंद ऋषिदेव टोला के रहने वाले 40 वर्षीय सिकेंद्र ऋषिदेव खेत मवेशी लाने के क्रम में गहरे पानी में डूब गया।

नीतीश और चिराग ने बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का किया दौरा

नेपाल के तराई क्षेत्र में हुई भारी बारिश ने उत्तर बिहार के 12 जिलों का हाल बेहाल कर रखा है। बीते 28 सितंबर को कोसी बराज (सुपौल जिला) और गंडक बराज (पश्चिम चंपारण) जिले से 11 लाख क्यूसेक पानी डिस्चार्ज होने के बाद उत्तर बिहार के करीब सभी जिले बाढ़ की चपेट में हैं। बाढ़ की विभिषिका को देखते हुए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने मंगलवार को बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया। सहरसा में बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का भ्रमण करने पहुंचे चिराग ने कहा कि प्रत्येक वर्ष आने वाली इस त्रासदी से निबटने के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। चिराग पासवान यहां सड़क मार्ग से नवहट्टा स्थित ई-2 घाट पहुंचे, जहां से नाव के जरिए बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का मुआयना करते हुए केदली गांव पहुंचे।

गांधीजी ने देश को अंग्रजी हुकूमत से मुक्त कराने को किया था **संघर्ष**

सुभाष चंद्र बोस ने महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता कहकर संबोधित किया था

अहिंसा की वह राह जिस पर चलते हुए गांधीजी ने निभाई

आजादी में बड़ी भूमिका

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जन्म गुजरात के पोरबंदर में 2 अक्टूबर 1869 को हुआ था। इनके पिता का नाम करमचंद गांधी और माता का नाम पुतलीबाई था। ब्रिटिश हुकूमत में इनके पिता पोरबंदर और राजकोट के दीवान थे। महात्मा गांधी का असली नाम मोहनदास करमचंद गांधी था और यह अपने तीन भाइयों में सबसे छोटे थे। गांधी जी का सीधा-सरल जीवन इनकी मां से प्रेरित था। गांधी जी का पालन-पोषण वैष्णव मत को मानने वाले परिवार में हुआ, और उनके जीवन पर भारतीय जैन धर्म का गहरा प्रभाव पड़ा, जिसके कारण वह सत्य और अहिंसा में अटूट विश्वास करते थे और आजीवन उसका अनुसरण भी किया। 2 अक्टूबर को देश भर में गांधी जयंती मनायी जाती है। इस साल महात्मा गांधी की 155वां जयंती मनाया जाएगा. गांधी जी ने देश को अंग्रजी हुकूमत से आजादी दिलाने में काफी बलिदान दिए और संघर्ष किया. अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है. इन सारी बातों को कोई कभी भी नहीं भूल सकता. हमेशा अहिंसा की राह पर चलते हुए आजादी की लड़ाई लड़ी. भारतवर्ष को ब्रिटिश राज से आजाद कराया.

अंतिम यात्रा...

30 जनवरी 1948 को, उनके उपर बम फेंके जाने के दस दिन बाद, गांधी को जब वे बिरला भवन में एक प्रार्थना सभा को संबोधित करने मंच पर जा रहे थे, गोली मार दी गई। गांधी जी गिर गये और उनके होठों से 'हे राम! हे राम!' शब्द निकले। 1919 से 1948 में उनकी मृत्यु तक, वे भारत के केंद्र में रहे और उस महान ऐतिहासिक नाटक के मुख्य नायक रहे जिसकी परिणति उनके देश की आजादी के रुप में हुई। उन्होंने भारत के राजनैतिक परिदृश्य का पूरा चरित्र बदल दिया। जो कभी अछूत माने जाते थे उनके लिए भी उन्होंने जो किया वो कम महत्व का नहीं था। उन्होंने लाखों लोगों को जाति अत्याचार और सामाजिक अपमान के बंधनों से मुक्त कर दिया। उनके व्यक्तित्व के नैतिक प्रभाव और अहिंसा की तकनीक की तुलना नहीं की जा सकती। और ना ही इसकी कीमत किसी देश या पीढ़ी तक सीमित है। यह मानवता के लिए उनका अविनाशी उपहार है।

गांधी जी की शिक्षा-दीक्षा : गांधी जी की प्रारम्भिक शिक्षा पोरबंदर में हुई थी। पोरबंदर से उन्होंने मिडिल स्कूल तक की शिक्षा प्राप्त की, इसके बाद इनके पिता का राजकोट ट्रांसफर हो जाने की वजह से उन्होंने राजकोट से अपनी बची हुई शिक्षा पूरी की। साल 1887 में राजकोट हाई स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा पास की और आगे की पढ़ाई के लिये भावनगर के सामलदास कॉलेज में प्रवेश प्राप्त किया, लेकिन घर से दूर रहने के कारण वह अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाएं और अस्वस्थ होकर पोरबंदर वापस लौट गए। 4 सितम्बर 1888 को इंग्लैण्ड के लिये रवाना हुए। गांधीजी ने लंदन में लंदन वेजीटेरियन सोसायटी की सदस्यता ग्रहण की और इसके कार्यकारी सदस्य बन गये। गांधी जी लंदन वेजीटेरियन सोसाइटी के सम्मेलनों में भाग लेने लगे और पत्रिका में लेख लिखने लगे। यहां 3 सालों (1888-1891) तक रहकर अपनी बैरिस्टरी की पढ़ाई पूरी की और सन 1891 में वापस भारत आ गए।

गांधी जी का वैवाहिक जीवन

गांधी जी का विवाह सन 1883 में मात्र 13 वर्ष की आयु में कस्तूरबा से हुआ था। लोग उन्हें प्यार से 'बा' कहकर पुकारते थे। कस्तूरबा गांधी के पिता एक धनी व्यवसायी थे । शादी से पहले तक कस्तूरबा पढ़ना-लिखना नहीं जानती थीं। गांधी जी ने उन्हें लिखना-पढ़ना सिखाया। एक आदर्श पत्नी की तरह बा ने गांधी जी का हर एक काम में साथ दिया। साल 1885 में गांधी जी की पहली संतान ने जन्म लिया, लेकिन कुछ समय बाद ही निधन हो गया था।

गांधी जी बने राष्ट्रपिता

4 जून 1944 को सिंगापुर में एक रेडियो मैसेज देते हुए नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने महात्मा गांधी को देश का पिता (राष्ट्रपिता) कहकर संबोधित किया था। आगे चलकर भारत सरकार ने इस नाम को मान्यता दी। हालांकि गांधी जी को बापू इससे बहुत पहले से कहा जाता था। इतिहासकारों के अनुसार, 1917 में चंपारण सत्याग्रह के दौरान एक किसान ने उन्हें बापू (पिता) कहकर संबोधित किया था।

दक्षिण अफ्रीका (1893-1914) में नागरिक अधिकार आंदोलन

दक्षिण अफ्रीका में गान्धी को भारतीयों पर भेदभाव का सामना करना पड़ा। आरम्भ में उन्हें प्रथम श्रेणी कोच की वैध टिकट होने के बाद तीसरी श्रेणी के डिब्बे में जाने से इन्कार करने के लिए ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया था। इतना ही नहीं पायदान पर शेष यात्रा करते हुए एक यूरोपियन यात्री के अन्दर आने पर चालक की मार भी झेलनी पड़ी। उन्होंने अपनी इस यात्रा में अन्य भी कई कठिनाइयों का सामना किया। अफ्रीका में कई होटलों को उनके लिए वर्जित कर दिया गया। इसी तरह ही बहुत सी घटनाओं में से एक यह भी थी जिसमें अदालत के न्यायाधीश ने उन्हें अपनी पगड़ी उतारने का आदेश दिया था जिसे उन्होंने नहीं माना। ये सारी घटनाएँ गान्धी के जीवन में एक मोड़ बन गईं और विद्यमान सामाजिक अन्याय के प्रति जागरुकता का कारण बनीं तथा सामाजिक सक्रियता की व्याख्या करने में मददगार सिद्ध हुईं। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों पर हो रहे अन्याय को देखते हुए गान्धी ने अंग्रेजी साम्राज्य के अन्तर्गत अपने देशवासियों के सम्मान तथा देश में स्वयं अपनी स्थिति के लिए प्रश्न उठाये।

गांधीजी कस्तूरबा को प्यार से बा कहकर पुकारा करते थे

वर्ष की आयु पूर्ण करते ही उनका विवाह 14 वर्ष की कस्तूर बाई मकनजी से कर दिया गया। पत्नी का पहला नाम छोटा करके कस्तूरबा कर दिया गया और उसे लोग प्यार से बा कहते थे। यह विवाह उनके माता पिता द्वारा तय किया गया व्यवस्थित बाल विवाह था जो उस समय उस क्षेत्र में प्रचलित था। परन्तु उस क्षेत्र में यही रीति थी कि किशोर दुल्हन को अपने माता पिता के घर और अपने पति से अलग अधिक समय तक रहना पड़ता था। 1885 में जब गान्धी जी 15 वर्ष के थे तब इनकी पहली सन्तान ने जन्म लिया। किन्तु वह केवल कुछ दिन ही जीवित रही। और इसी वर्ष उनके पिता करमचन्द गांधी भी चल बसे। मोहनदास और कस्तूरबा के चार सन्तान हुईं जो सभी पुत्र थे। हरीलाल गान्धी 1888 में, मणिलाल गान्धी 1892 में, रामदास गान्धी 1897 में और देवदास गांधी 1900 में जन्मे। पोरबंदर से उन्होंने मिडिल और राजकोट से हाई स्कूल किया। दोनों परीक्षाओं में शैक्षणिक स्तर वह एक साधारण छात्र रहे।

21 जुलाई, 1906 को गांधी जी ने भारतीय जनमत इंडियन ओपिनिय में लिखा कि 2 भारतीयनिवासियों के विरुद्ध चलाए गए ऑपरेशन के संबंध में प्रयोग द्वारा नेटाल सरकार के कहने पर एक कोर का गठन किया गया है।

गांधीजी की चंपारण सत्याग्रह आंदोलन में थी अहम भूमिका

गांधी की पहली बड़ी उपलब्धि 1918 में चम्पारन सत्याग्रह और खेड़ा सत्याग्रह में मिली हालांकि अपने निर्वाह के लिए जरूरी खाद्य फसलों की बजाए नील नकद पैसा देने वाली खाद्य फसलों की खेती वाले आंदोलन भी महत्वपूर्ण रहे। जमींदारों (अधिकांश अंग्रेज) की ताकत से दमन हुए भारतीयों को नाममात्र भरपाई भत्ता दिया गया जिससे वे अत्यधिक गरीबी से घिर गए। गांवों को बुरी तरह गंदा और अस्वास्थ्यकर और शराब, अस्पृश्यता और पर्दा से बांध दिया गया। अब एक विनाशकारी अकाल के कारण शाही कोष की भरपाई के लिए अंग्रेजों ने दमनकारी कर लगा दिए जिनका बोझ दिन प्रतिदिन बढता ही गया। यह स्थिति निराशजनक थी। खेड़ा, गुजरात में भी यही समस्या थी।

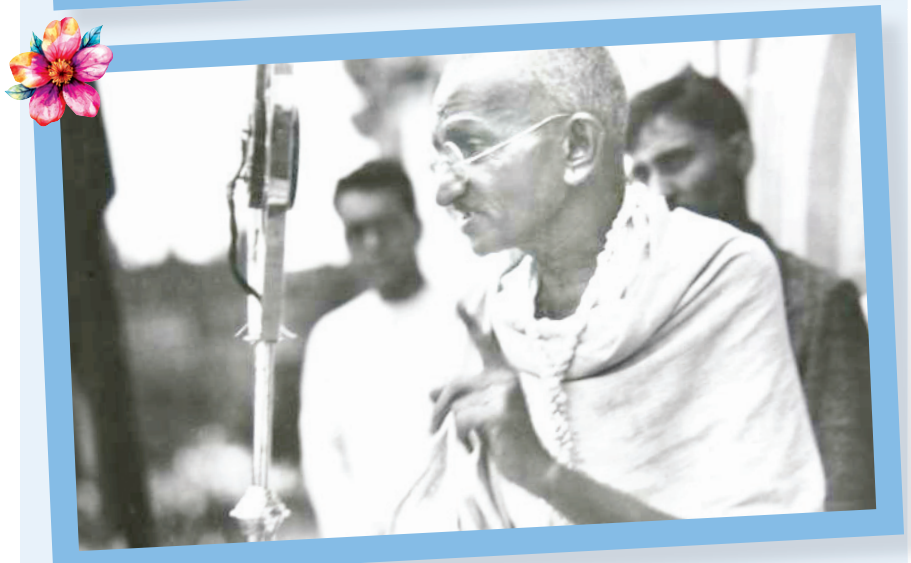

महात्मा गांधी शाकाहारी भोजन को देते थे बढ़ावा

अपने 19वें जन्मदिन से लगभग एक महीने पहले ही 4 सितम्बर 1888 को गांधी यूनिवर्सिटी कॉलेज लन्दन में कानून की पढाई करने और बैरिस्टर बनने के लिये इंग्लैंड चले गये। भारत छोड़ते समय जैन भिक्षु बेचारजी के समक्ष हिन्दुओं को मांस, शराब तथा संकीर्ण विचारधारा को त्यागने के लिए अपनी अपनी माता जी को दिए गये एक वचन ने उनके शाही राजधानी लंदन में बिताये गये समय को काफी प्रभावित किया। हालांकि गांधी जी ने अंग्रेजी रीति रिवाजों का अनुभव भी किया जैसे उदाहरण के तौर पर नृत्य कक्षाओं में जाने आदि का। फिर भी वह अपनी मकान मालकिन द्वारा मांस एवं पत्ता गोभी को हजम.नहीं कर सके। उन्होंने कुछ शाकाहारी भोजनालयों की ओर इशारा किया। अपनी माता की इच्छाओं के बारे में जो कुछ उन्होंने पढा था उसे सीधे अपनाने की बजाय उन्होंने बौद्धिकता से शाकाहारी भोजन का अपना भोजन स्वीकार किया। उन्होंने शाकाहारी समाज की सदस्यता ग्रहण की और इसकी कार्यकारी समिति के लिये उनका चयन भी हो गया जहाँ उन्होंने एक स्थानीय अध्याय की नींव रखी। बाद में उन्होने संस्थाएँ गठित करने में महत्वपूर्ण अनुभव का परिचय देते हुए इसे श्रेय दिया। वे जिन शाकाहारी लोगों से मिले उनमें से कुछ थियोसोफिकल सोसायटी के सदस्य भी थे। इस सोसाइटी की स्थापना 1875 में विश्व बन्धुत्व को प्रबल करने के लिये की गयी थी और इसे बौद्ध धर्म एवं सनातन धर्म के साहित्य के अध्ययन के लिये समर्पित किया गया था।

उन्हों लोगों ने गांधी जी को श्रीमद्भगवद्गीता पढ़ने के लिये प्रेरित किया। हिन्दू, ईसाई, बौद्ध, इस्लाम और अन्य धर्मों .के बारे में पढ़ने से पहले गांधी ने धर्म में विशेष रुचि नहीं दिखायी। इंग्लैंड और वेल्स बार एसोसिएशन में वापस बुलावे पर वे भारत लौट आये किन्तु बम्बई में वकालत करने में उन्हें कोई खास सफलता नहीं मिली। बाद में एक हाई स्कूल शिक्षक के रूप में अंशकालिक नौकरी का प्रार्थना पत्र अस्वीकार कर दिये जाने पर उन्होंने जरूरतमन्दों के लिये मुकदमे की अर्जियाँ लिखने के लिये राजकोट को ही अपना स्थायी मुकाम बना लिया। परन्तु एक अंग्रेज अधिकारी की मूर्खता के कारण उन्हें यह कारोबार भी छोड़ना पड़ा। अपनी आत्मकथा में उन्होंने इस घटना का वर्णन अपने बड़े भाई की ओर से परोपकार की असफल कोशिश के रूप में किया है। यही वह कारण था जिस वजह से उन्होंने सन् 189* में एक भारतीय फर्म से नेटाल दक्षिण अफ्रीका में, जो उन दिनों ब्रिटिश साम्राज्य का भाग होता था, एक वर्ष के करार पर वकालत का कारोवार स्वीकार कर लिया।

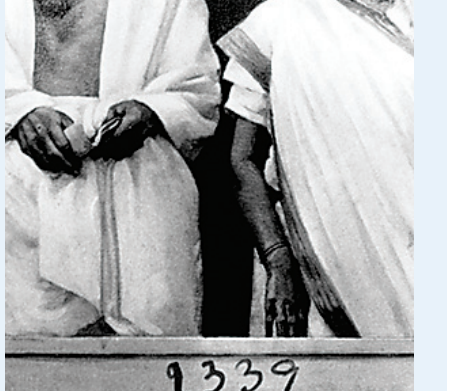

12 फरवरी वर्ष 1948 में महात्मा गांधी के अस्थि कलश जिन 12 तटों पर विसर्जित किए गए थे, त्रिमोहिनी संगम भी उनमें से एक है।

1921 दिसंबर में गांधीजी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कार्यकारी अधिकारी नियुक्त हुए थे।

महालया आज

महालया अमावस्या पर पूजा : विधि की बात करें तो सुबह जल्दी उठकर स्नान कर लें। इसके बाद दक्षिण दिशा में पितरों को जल अर्पित करें। इसके बाद घर पर सात्विक भोजन बनाकर पितरों के नाम का भोजन निकालकर दक्षिण दिशा में रख दें। फिर ब्राह्मण, गरीब, गाय, कुत्ता और कौए के लिए भी भोजन खिलाएं। मान्यता है कि इससे पितरों की आत्मा को शांति मिलती है. शाम के समय दक्षिण दिशा में दीया भी जलाएं।

जरूर करें ये पाठ

आप माता रानी की कृपा के लिए महालया के विशेष दिन पर दुर्गा सप्तशती श्लोक का पाठ कर सकते हैं। इससे आपको जीवन में बेहतर परिणाम देखने को मिल सकते हैं।

15 दिनों के पितृ पक्ष के बाद धरती पर देवी के आगमन के साथ देवी पक्ष प्रारंभ होता है। इसी संधी काल में देवी के आगमन का आह्वान मंत्र को महालया कहा जाता है। प्रत्येक वर्ष अश्विन माह कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि के ब्रह्म मुहुर्त में महालया का वाचन होता है। महालया के दिन सुबह पितरों का श्राद्ध, तर्पण व पिंडदान करके उनको श्रद्धापूर्वक विदा किया जाता है और शाम को देवी भगवती की विधिवत पूजा की जाती है। महालया महा+आलय शब्द से मिलकर बना है। इसका मतलब है महान आलय या देवी का आवास। महालया के दिन मां पार्वती अपने मायके आने के लिए कैलाश पर्वत से विदा लेती हैं। इसलिए महालया के दिन मां की अगवानी में वंदना की जाती है और स्वागत के लिए खास प्रार्थना की जाती है। 1931 में पहली बार महिषासुरमर्दिनी नाटक कलकत्ता रेडियो स्टेशन से प्रसारित किया गया था। इसी नाटक में बीरेंद्र कृष्ण भद्र के स्वर में इसे पहली बार महालया का अखिल भारतीय स्तर पर प्रसारण हुआ। नाटक के लेखक वाणी कुमार थे और पंकज कुमार मल्लिक ने इसे संगीतबद्ध किया था। आज भी हम महालया सुनते हैं, वैसे तो कालांतर में इसे कई कलाकारों ने इसे आवाज दिया लेकिन अब भी सबसे ज्यादा बीरेंद्र कृष्ण भद्र के गाए महालया को मां के भक्त पसंद करते हैं।

जागो तुमी जागो, जागो दुर्गा जागो दस पहर धारिणी

महालया के साथ शुरू होती है मां के नौ रूपों की पूजा...

हिंदू धर्म में नवरात्रि के 9 दिनों में मां दुर्गा के नौ अलग-अलग स्वरूपों की पूजा-आराधना का बड़ा महत्व है। शारदीय नवरात्रि से ही त्योहारों की शुरूआत होती है। महालया के अगले दिन से ही नवरात्रि की शुरूआत होती है। इस साल 02 अक्टूबर को महालया है। धार्मिक मान्यता है कि महालया पर्व से ही देवी भगवती कैलाश पर्वत से अपनी यात्राएं शुरू करती है। मान्यता है कि मां दुर्गा, गणेश, कार्तिकेय, लक्ष्मी और सरस्वती के साथ अपने पंसदीदा वाहन पर सवार होकर धरती लोक पर आती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, महालया के दिन मां दुर्गा धरती लोक पर आती हैं। इस दिन देवी भगवती जोश-उत्साह और विधि-विधान से पूजा-अर्चना के साथ उनका भव्य स्वागत किया जाता है। नवरात्रि के दौरान मां दुर्गा की पूजा-आराधना से सभी कष्ट दूर होते हैं और जीवन में सुख-समृद्धि और खुशहाली आती है। यदि महालया देवी दुर्गा मनुष्यों के बीच नहीं आतीं तो नवरात्रि के नौ दिनों तक देवी मां के विभिन्न रूपों की पूजा संभव नहीं हो पाती। इस प्रकार महालया, नवरात्रि के उत्सवों को शुरू करने का एक तरीका है। नवरात्रि में देवी दुर्गा की पूजा करने से सभी पापों से मुक्ति मिलती है और सुख, समृद्धि और शक्ति की प्राप्ति होती है।

दुर्गा सप्तशती श्लोक

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।।
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तो: स्वस्थै: स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिर्द्य दु:ख भयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।
सर्वमङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यंम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते।।
शरणागत दीनार्तपरित्राण परायणे
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तु ते।।
सर्वस्वरुपे सवेर्शे सर्वशक्ति समन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तु ते।।
रोगानशेषानपंहसि तुष्टारुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता हि आश्रयतां प्रयान्ति।।
सर्वबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यम् अस्मद् वैरि विनाशनम्।।

शारदीय नवरात्र 2024 कैलेंडर

महालया-(2 अक्टूबर, सोमवार) मां दुर्गा का आगमन
पहला दिन- (3 अक्टूबर, मंगलवार) मां शैलपुत्री की पूजा
दूसरा दिन- (4 अक्टूबर, बुधवार) मां ब्रह्मचारिणी की पूजा
तीसरा दिन- (5 अक्टूबर गुरुवार) मां चंद्रघंटा की पूजा
चौथा दिन- (6 अक्टूबर शुक्रवार) मां कूष्मांडा की पूजा
पांचवा दिन-(7 अक्टूबर, शनिवार) मां स्कंदमाता की पूजा
छठा दिन- (8 अक्टूबर, रविवार) मां कात्यायनी की पूजा
सातवां दिन- (9 अक्टूबर सोमवार) मां कालरात्रि की पूजा
आठवां दिन-10 अक्टूबर मंगलवार मां महागौरी की पूजा
नौवां दिन- (11 अक्टूबर बुधवार) मां सिद्धिदात्री की पूजा
दसवां दिन-12 अक्टूबर गुरुवार विजयादशमी या दशहरा

महिषासुर को हराने के लिए हुई प्रकट हुई थीं मां दुर्गा

माना जाता है कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर ने राक्षस राज महिषासुर को हराने के लिए मां दुर्गा की रचना की थी। राक्षस राजा को एक वरदान मिला था, इसलिए उसे कोई भी देवता या मनुष्य नहीं मार सकता। ऐसे में जब देवता राक्षस राजा से हार गए, तो उन्होंने आदि शक्ति से मदद मांगी और मां दुर्गा ने राक्षस राजा महिषासुर को हरा दिया। बताया जाता है कि लड़ाई के दौरान, देवी को लड़ने के लिए देवताओं द्वारा कई हथियार दिए गए थे। इसलिए, मां दुर्गा को शक्ति की देवी कहा जाता है। दुर्गा पूजा के नौ दिनों में लोग मां दुर्गा के नौ रूपों की पूजा की जाती है। माता रानी का पहला रूप मां शैलपुत्री, दूसरा रूप मां बह्मचारिणी, तीसरा रूप मां चंद्रघंटा, चौथा रूप मां कूष्मांडा, पांचवां रूप मां स्कंदमाता, छठा रूप मां कात्यायनी, सातवां रूप मां कालरात्रि, आठवां रूप मां महागौरी, नौवां रूप मां सिद्धिदात्री है। कई तस्वीरों और प्रतिमाओं में माता दुर्गा को 10 भुजाओं के साथ देखा जाता है।

महालया से शुरु हो जाती है शक्ति की पूजा

सनातन धर्म में दुर्गा पूजा का उत्सव बहुत धूमधाम के साथ मनाया जाता है। इसका शास्त्रों में बहुत ही महत्व है। महालया सर्व पितृ अमावस्या के दिन मनाई जाती है। इस दिन को महालया अमावस्या के नाम से भी जाना जाता है। महालया के दिन से ही बंगाल में दुर्गा पूजा का उत्साह देखने को मिलता है। महालया के दिन ब्रह्माण भोजन कराया जाता है और दान किये जाते हैं। मां दुर्गा की उत्पति ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर ने राक्षस राजा महिषासुर को हराने के लिए किया था। तब से ही नवरात्रि के समय में मां दुर्गा की पूजा की जाती है।

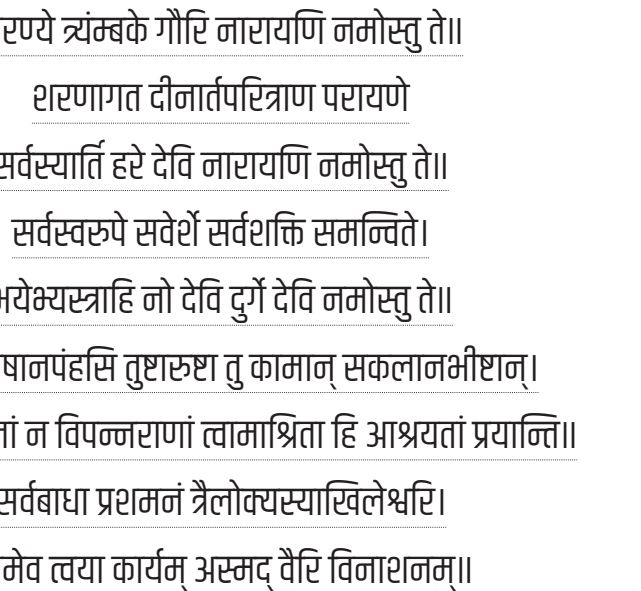

भारत ने बांग्लादेश को 7 विकेट से हराया

दो मैचों की श्रृंखला में किया क्लीन स्विप

कानपुर, (हि.स.)। भारत ने यहां ग्रीन पार्क में खेले जा दूसरे टेस्ट मैच में लगभग ढाई दिन बारिश के कारण रद्द होने के बावजूद बांग्लादेश को 7 विकेट से हराकर दो मैचों की टेस्ट श्रृंखला 2-0 अपने नाम किया।

इस मैच में टॉस जीतकर भारतीय टीम ने बांग्लादेश की पहली पारी 233 रन पर समेट दी और उसके बाद तेजी से खेलते हुए अपनी पहली पारी 9 विकेट पर 285 रन बनाकर घोषित की और पहली पारी के आधार पर 52 रनों की बढ़त हासिल की। दूसरी पारी में बांग्लादेश की टीम 146 रन पर सिमट गई थी, जिसके बाद भारत को केवल 95 रनों का लक्ष्य मिला। 95 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी भारतीय टीम ने 17.2 ओवर में 3 विकेट के नुकसान पर 98 रन बनाकर मैच जीत लिया। दूसरी पारी में भारत के लिए सलामी बल्लेबाज यशस्वी जयसवाल ने शानदार अर्धशतक लगाते हुए 51 रन बनाए। यशस्वी के अलावा विराट कोहली ने 29 रनों की नाबाद पारी खेली। कोहली के साथ ऋषभ पंत भी 4 रन बनाकर नाबाद लौटे। कप्तान रोहित शर्मा ने 8 और शुंभमन गिल ने 6 रन बनाए।

बांग्लादेश की पहली पारी 233 रन पर सिमटी

इससे पहले बांग्लादेश की पहली पारी 233 रन पर सिमट गई थी। मोमिनुल हक ने नाबाद शतकीय पारी खेलते हुए 107 रन बनाए। मोमिनुल के अलावा शादमान इस्लाम ने 24, कप्तान नजमुल हसन शांतों ने 31 और मेहदी हसन मिराज ने 20 रन बनाए। भारत के लिए जसप्रीत बुमराह ने 3, रविचंद्रन अश्विन, मोहम्मद सिराज और आकाश दीप ने 2-2 व रवींद्र जडेजा ने 1 विकेट लिया।

दूसरी पारी में बांग्लादेशी बल्लेबाजों ने टेके घुटने

बांग्लादेश की दूसरी पारी की शुरूआत खराब रही भारतीय ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने जाकिर हसन को एलबीडब्ल्यू आउट कर भारत को पहली सफलता दिलाई। जाकिर ने 10 रन बनाए। अश्विन ने बांग्लादेश का दूसरा विकेट भी झटका। उन्होंने हसन महमूद बोल्ड कर पवेलियन भेजा। हसन ने चार रन बनाए। बांग्लादेश का तीसरा विकेट पहली पारी के शतकवीर मोमिनुल हक के रूप में गिरा। हक को अश्विन ने 36 रनों के कुल योग पर पवेलियन भेजा। हक ने 2 रन बनाए। इसके बाद बांग्लादेश के विकेट नियमित अंतराल पर गिरते रहे और पूरी टीम 146 रनों पर सिमट गई। दूसरी पारी में बांग्लादेश के लिए केवल शादमान इस्लाम और मुश्फिकुर रहीम ही कुछ टिक कर खेल सके। शादमान ने शानदार अर्धशतक लगाते हुए 50 रन बनाए, जबकि मुश्फिकुर ने 37 रन बनाए।

भारत ने अपनी पहली पारी 9 विकेट पर 285 रन बनाकर की घोषित

इससे पहले भारतीय टीम ने अपनी पहली पारी में ताबड़तोड़ शुरूआत की। कप्तान रोहित शर्मा ने यशस्वी जायसवाल के साथ मिलकर शुरूआती तीन ओवर में ही 50 रन का आकड़ा पार कर लिया। चौथे ओवर में 55 के स्कोर पर भारतीय टीम का पहला विकेट गिरा। कप्तान रोहित 11 गेंद में एक चौका और तीन छक्कों की मदद से 23 रन बनाकर आउट हुए। इसके बाद यशस्वी जायसवाल ने भी तेजी से बल्लेबाजी करते हुए 31 गेंद में अर्धशतक जड़ दिया। यशस्वी 51 गेंदों पर ताबड़तोड़ 72 रनों की पारी खेलकर आउट हुए। चौथे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत आए। उन्होंने शुभमन गिल के साथ पारी को आगे बढ़ाया। भारतीय टीम को 141 के स्कोर पर तीसरा झटका लगा। शुभमन 36 गेंद में चार चौके और एक छक्के की मदद से 39 रन बनाकर आउट हुए। इसके बाद 159 के स्कोर पर चौथा विकेट गिरा। ऋषभ कोई कमाल नहीं कर सके और नौ रन बना कर आउट हुए।

कानपुर में टीम इंडिया की ऐतिहासिक जीत, जय शाह ने भी की सराहना

टी20 विश्व कप को लेकर थोड़ी नर्वस हूं : सोफी मोलिनेक्स

दुबई,(आईएएनएस)। महिला टी20 विश्व कप काउंटडाउन शुरू हो चुका है। टूर्नामेंट की सबसे मजबूत और खतरनाक टीम ऑस्ट्रेलिया एक बार फिर अपना दबदबा कायम करना चाहेगी। वहीं, स्टार ऑलराउंडर सोफी मोलिनेक्स राष्ट्रीय टीम में वापसी के बाद यूएई में होने वाले मेगा इवेंट को लेकर थोड़ी नर्वस हैं।

दो बार की विश्व कप विजेता ने 2021 और 2024 के बीच पैर और घुटने की गंभीर चोटों के कारण दो साल से अधिक समय तक टीम से बाहर बिताया।

वह ऑस्ट्रेलिया के लिए वनडे विश्व कप 2022, राष्ट्रमंडल खेल और टी20 विश्व कप 2023 से चूक गईं। अब टीम में वापसी के बाद यह ऑलराउंडर कोई भी भूमिका निभाने के लिए तैयार है लेकिन, यह उनके लिए इतना आसान नहीं होगा। क्रिकेट डॉट कॉम डॉट एयू ने मोलिनेक्स के हवाले से कहा, मैं पिछले कुछ वर्षों से विश्व कप के लिए नहीं खेली हूं। इसलिए इस समय मैं थोड़ा नर्वस महसूस कर रही हूं, लेकिन यह टी20 विश्व कप है और मुझे अपना बेस्ट देना होगा।

26 वर्षीय खिलाड़ी इस साल की शुरूआत में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ ऑस्ट्रेलियाई टीम में लौटी। मार्च में बांग्लादेश के खिलाफ टी20 सीरीज में उन्हें प्लेयर ऑफ द सीरीज का पुरस्कार मिला। हालांकि, चोट के कारण उनकी विश्व कप की तैयारियां बाधित हुईं, लेकिन उन्होंने न्यूजीलैंड के खिलाफ हाल ही में टी20 सीरीज में शानदार वापसी की। उन्होंने कहा, ईमानदारी से कहूं तो मैं इस टीम में किसी भी भूमिका का आनंद लेती हूं। (पावर प्ले और डेथ ओवर) काफी महत्वपूर्ण हैं और मुझे लगता है कि उन परिस्थितियों में एक गेंदबाज के रूप में आप हमेशा अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाएंगे लेकिन, ऐसी चुनौतियों से लड़ना और कमबैक करने में सक्षम होना ही एक अच्छे खिलाड़ी की पहचान है।

अंडर -19 टेस्ट में सबसे तेज शतक लगाने वाले दूसरे बल्लेबाज बने 13 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी

नई दिल्ली। चेन्नई में भारत और ऑस्ट्रेलिया अंडर 19 टीमों के बीच चल रहे युवा टेस्ट मैच में, वैभव सूर्यवंशी ने मंगलवार को भारत के लिए अंडर -19 टेस्ट में सबसे तेज शतक दर्ज किया। भारत के लिए पहली पारी में बल्लेबाजी करते हुए, 13 वर्षीय खिलाड़ी ने केवल 58 गेंदों पर अपना शतक पूरा किया। उनकी पारी में 14 चौके और चार छक्के शामिल थे। वह 104 रन रन बनाकर रन आउट हुए। कुल मिलाकर, यह अंडर -19 टेस्ट में दूसरा सबसे तेज शतक है, इंग्लैंड के मोइन अली अभी भी रिकॉर्ड धारक हैं। मोईन ने यह रिकॉर्ड 2005 में बनाया था, जब उन्होंने 56 गेंदों पर शतक जड़ा था। वैभव पिछले साल तब सुर्खियों में आए थे जब वह 12 साल की उम्र में बिहार के लिए खेलते हुए रणजी ट्रॉफी के इतिहास में सबसे कम उम्र में डेब्यू करने वाले खिलाड़ी बन गए थे और उन्होंने सचिन तेंदुलकर और युवराज सिंह के रिकॉर्ड को तोड़ दिया था। उन्होंने अब तक दो प्रथम श्रेणी मैच खेले हैं।

महिला टी20 रैंकिंग में ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर जॉर्जिया वेयरहैम ने किया सुधार

नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया महिला क्रिकेट टीम की ऑलराउंडर जॉर्जिया वेयरहैम की आईसीसी महिला टी-20 अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में बड़ा सुधार हुआ है। वेयरहैम ने हाल ही में घरेलू धरती पर न्यूजीलैंड के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया की तीन मैचों की टी20 श्रृंखला के अंतिम मैच में अपने प्रभावशाली प्रदर्शन के दम पर सभी तीन रैंकिंग श्रेणियों में बड़ी बढ़त हासिल की है। आईसीसी महिला टी20 विश्व कप से पहले यह उनकी बड़ी उपलब्धि है। 25 वर्षीय खिलाड़ी ने ब्रिस्बेन में कीवी टीम के खिलाफ तीसरे टी20 मैच में प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार जीता था। उन्हें तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए भेजा गया था और उन्होंने सिर्फ 16 गेंदों पर 26 रन बनाए थे। इसके अलावा उन्होंने 21 रन देकर 2 विकेट भी चटकाए थे। ऑस्ट्रेलिया ने पांच विकेट से जीत दर्ज कर यह श्रृंखला 3-0 से अपने नाम की थी।

बांग्लादेश के मुख्य कोच ने बताई भारत से हार की वजह

कानपुर। बांग्लादेश के मुख्य कोच चंडिका हथुरुसिंघे ने मंगलवार को स्वीकार किया कि उनकी टीम भारत की ह्यपहले नहीं देखी गई' आक्रामक बल्लेबाजी के तूफानी में उड़ गई जिसके कारण मौसम से प्रभावित दूसरे टेस्ट में अंततः नतीजा निकला। शुरूआती तीन दिन में लगातार बारिश के कारण आठ सत्र का नहीं हो पाया और ऐसा लग रहा था कि मुकाबला नीरस ड्रॉ की ओर बढ़ रहा है। भारत ने हालांकि बांग्लादेश को पहली पारी में 233 रन पर आउट करने के बाद सिर्फ 34.4 ओवर में नौ विकेट पर 285 रन बनाकर पारी घोषित की और 52 रन की बढ़त हासिल की। भारत के इस रवैये ने नतीजे की उम्मीद जगाई और फिर दूसरी पारी में बांग्लादेश को 146 रन पर ढेर करने के बाद मेजबान टीम ने 17.2 ओवर में 95 रन के लक्ष्य को हासिल कर लिया।

हम जोखिम लेने के लिए तैयार थे : रोहित

कानपुर,(आईएएनएस)। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने बांग्लादेश के खिलाफ कानपुर में दूसरा टेस्ट सात विकेट से जीतने और सीरीज को 2-0 से क्लीन स्वीप करने के बाद मंगलवार को कहा कि टीम जीत के लिए कोई भी जोखिम उठाने को तैयार थी।

रोहित ने मैच के बाद कहा,"हम सभी आगे बढ़ते रहते हैं। जाहिर है कि किसी न किसी स्तर पर हमें अलग-अलग लोगों के साथ काम करना शुरू करना पड़ा। जब राहुल भाई ने कहा कि वह यहां नहीं रह सकते - हमने शानदार समय बिताया लेकिन जीवन आगे बढ़ता रहता है। हम सभी को आगे बढ़ना है।"

कप्तान ने कहा,"कोच गौतम गंभीर, मैंने उनके साथ खेला है और जानता हूं कि वह किस तरह की मानसिकता के साथ आते हैं और खिलाड़ियों को खेलने की अनुमति देते हैं। शुरूआती दिन लेकिन यह एक अच्छी शुरूआत रही है। हमें इस बारे में बहुत सोचना था कि खेल को कैसे आगे बढ़ाया जा सकता है। एक बार जब हमने ढाई दिन खो दिए, जब हम चौथे दिन आए तो हम उन्हें जितनी जल्दी हो सके आउट करना चाहते थे और देखना चाहते थे कि हम बल्ले से क्या कर सकते हैं।"

रोहित ने कहा,"सब कुछ इस बात पर निर्भर करता था कि वे कितने रन बनाते हैं। जब वे 230 रन पर आउट हो गए, तो यह हमारे द्वारा बनाए गए रनों के बारे में नहीं था, बल्कि उन ओवरों के बारे में था जिन्हें हम उन्हें फेंकना चाहते थे। इसका मतलब था कि हमें रन रेट बढ़ाने की कोशिश करनी थी और जितना संभव हो सके उतने रन बनाने थे।"

उन्होंने कहा," पिच में गेंदबाजों के लिए बहुत कुछ नहीं था। उस पिच पर खेल को बेहतर बनाना गेंदबाजों का शानदार प्रयास था। और फिर बल्लेबाजों ने इस मानसिकता के साथ जल्दी से जल्दी रन बनाने की सोची। यह एक जोखिम था जिसे हम लेने के लिए तैयार थे क्योंकि जब आप इस तरह से बल्लेबाजी करने की कोशिश करते हैं, तो आप कम स्कोर पर आउट हो सकते हैं। लेकिन हम इसके लिए तैयार थे, भले ही हम 100-150 रन पर आउट हो जाएं।"

भारत ने बांग्लादेश को 233 रन पर समेटने के बाद अपनी पहले पारी में टी20 अंदाज में बल्लेबाजी करते हुए 34.3 ओवर में नौ विकेट पर 285 रन बनाकर पारी घोषित कर दी।

ब्राजीलियाई सीरी ए क्लब फ्लेमेंगो ने मुख्य कोच टिटे से नाता तोड़ा

रियो डी जनेरियो(हि.स.)। ब्राजील के पूर्व मुख्य कोच टिटे को ब्राजीलियाई सीरी ए क्लब फ्लेमेंगो ने सोमवार को बर्खास्त कर दिया। क्लब ने एक बयान में कहा कि 63 वर्षीय खिलाड़ी की जगह साल के अंत तक पूर्व एटलेटिको मैड्रिड, चेल्सी और फ्लेमेंगो के डिफेंडर फिलिप लुइस लेंगे। यह घोषणा ब्राजील की सीरी ए चैंपियनशिप में फ्लेमेंगो की एथलेटिको पैरानेंस पर 1-0 की घरेलू जीत के एक दिन से भी कम समय बाद आई। पिछले गुरुवार को, फ्लेमेंगो को कोपा लिबटाडोरेस - दक्षिण अमेरिका की शीर्ष क्लब प्रतियोगिता - से क्वार्टर फाइनल चरण में उरुग्वे के पेनारोल द्वारा बाहर कर दिया गया था। फ्लेमेंगो वर्तमान में 20-टीम ब्राजीलियाई सीरी ए स्टैंडिंग में चौथे स्थान पर है, और सीजन में 10 गेम शेष रहते हुए शीर्ष पर चल रहे बोटाफोगो से नौ अंक पीछे है।

दिग्गज बास्केटबॉल खिलाड़ी डिकेम्बे मुटोम्बो का 58 वर्ष की आयु में निधन

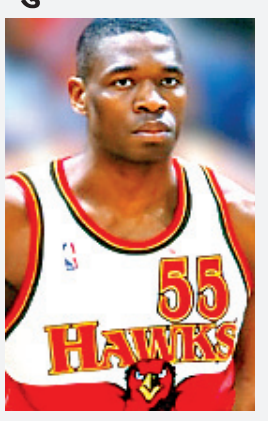

किंशासा, (हि.स.)। एनबीए के वैश्विक राजदूत और नाइस्मिथ बास्केटबॉल हॉल ऑफ फेमर डिकेम्बे मुटोम्बो, जिनका जन्म डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो (डीआरसी) में हुआ था, का सोमवार को 58 साल की उम्र में मस्तिष्क कैंसर से निधन हो गया। एनबीए ने सोमवार को उक्त घोषणा की। एनबीए कमिश्नर एडम सिल्वर ने एक बयान में कहा, डिकेम्बे मुटोम्बो जीवन से भी बड़े थे। कोर्ट पर, वह एनबीए में सबसे महान शॉट अवरोधक और रक्षात्मक खिलाड़ियों में से एक थे। मैदान से बाहर, उन्होंने दूसरों की मदद करने में अपना दिल और आत्मा लगा दी। मुटोम्बो को बास्केटबॉल के सबसे सम्मानित रक्षात्मक खिलाड़ियों और रिबाउंडर्स में से एक माना जाता है। उन्हें चार बार एनबीए का वर्ष का रक्षात्मक खिलाड़ी नामित किया गया, यह रिकॉर्ड उन्होंने बेन वालेस के साथ साझा किया है। मुटोम्बो 3,298 ब्लॉक और 12,359 रिबाउंड जमा करने और आठ ऑल-स्टार प्रदर्शन करने के बाद 2009 में सेवानिवृत्त हो गए। उस वर्ष बाद में, उन्हें तत्कालीन आयुक्त डेविड स्टर्न द्वारा एनबीए के लिए वैश्विक राजदूत के रूप में नियुक्त किया गया था। 2015 में, मुटोम्बो को नाइस्मिथ मेमोरियल बास्केटबॉल हॉल ऑफ फेम में शामिल किया गया था। ह्यूस्टन रॉकेट्स के पूर्व स्टार को दुनिया भर में उनके मानवीय कार्योंके लिए खेल से परे भी बहुत सम्मान दिया गया था। मुटोम्बो ने धर्मार्थ कार्यों में लाखों डॉलर का निवेश किया है, जिसमें हजारों लोगों के लिए स्वास्थ्य देखभाल की पहुंच में सुधार के लिए डीआरसी में एक अस्पताल का निर्माण भी शामिल है।

व्यापार/लाइफ व साइंस

विशाल मेगा मार्ट और हुंडई मोटर समेत 5 कंपनियों के आईपीओ को सेबी की मंजूरी

नई दिल्ली, (हि.स.)। मार्केट रेगुलेटर सिक्योरिटी एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया (सेबी) ने हुंडई मोटर इंडिया समय पांच कंपनियों को आईपीओ लाने के लिए हरी झंडी दे दी है। इन कंपनियों में फूड डिलीवरी कंपनी स्विगी, विशाल मेगा मार्ट, एक्मे सोलर होल्डिंग्स और ममता मशीनरी के नाम भी शामिल हैं।

सेबी से मिली जानकारी के मुताबिक हुंडई मोटर इंडिया और स्विगी को मार्केट रेगुलेटर ने 24 सितंबर को ऑब्जरवेशन लेटर इशू किया है, जबकि विशाल मेगा मार्ट को 25 सितंबर को ऑब्जरवेशन लेटर जारी हुआ है। इसी तरह ममता मशीनरी और एक्मे सोलर होल्डिंग्स को 27 सितंबर को ऑब्जरवेशन लेटर दिया गया है। ऑब्जरवेशन लेटर इशू होने के बाद कंपनी को अगले 1 साल की अवधि में अपना आईपीओ लॉन्च करने की अनुमति मिल जाती है।

हुंडई मोटर इंडिया के आईपीओ का निवेशकों को लंबे समय से इंतजार हैं। देश की इस दूसरी सबसे बड़ी कार निमार्ता कंपनी का आईपीओ अभी तक का सबसे बड़ा आईपीओ हो सकता है। कंपनी ने 14 जून को सेबी के पास ड्राफ्ट पेपर जमा कराया था। इस आईपीओ के तहत 14.21 करोड़ इक्विटी शेयर की बिक्री सिर्फ ऑफर फॉर सेल ऑफ (ओएफएस) के जरिए की जाएगी। बताया जा रहा है कि कंपनी का लगभग 3 अरब डॉलर का ये आईपीओ इसी महीने लॉन्च हो सकता है।

इसी तरह विशाल मेगा मार्ट ने 29 जुलाई को सेबी के पास ड्राफ्ट पेपर जमा कराया था। केदारा कैपिटल और पार्टनर्स ग्रुप के निवेश वाली ये कंपनी फैशन से जुड़ी हाइपरमार्केट चेन है। कंपनी अपने आईपीओ के जरिए बाजार से करीब एक अरब डॉलर की राशि जुटाना चाहती है। इस आईपीओ का कामकाज देखने के लिए कोटक महिंद्रा कैपिटल, जेपी मॉर्गन, मॉर्गन स्टेनली, आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज और जेफरीज को लीड मैनेजर नियुक्त किया गया है।

सेबी से जिन कंपनियों को आईपीओ लाने के लिए हरी झंडी मिली है, उनमें देश की दूसरी सबसे बड़ी फूड डिलीवरी कंपनी स्विगी का नाम भी शामिल है। कंपनी ने सेबी के पास 7 अप्रैल को आईपीओ के लिए अपना ड्राफ्ट पेपर दाखिल किया था। इसके बाद 26 सितंबर को कंपनी ने दोबारा अपडेटेड ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस दाखिल किया। इन दस्तावेजों के मुताबिक कंपनी 3,750 करोड़ रुपये के फ्रेश इक्विटी शेयर जारी करेगी। इसके साथ ही मौजूद शेयर होल्डर्स द्वारा 18.52 करोड़ इक्विटी शेयरों की बिक्री ऑफर फॉर सेल के जरिए की जाएगी।

आरबीआई की सख्ती से गोल्ड लोन ग्रोथ पर असर पड़ने की आशंका

एजेंसी। नई दिल्ली

गोल्ड लोन देने की प्रक्रिया में गड़बड़ी पाए जाने के बाद भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) सख्त हो गया है। हालांकि केंद्रीय बैंक की इस सख्ती का देश की टॉप ब्रोकरेज कंपनियों ने स्वागत जरूर किया है लेकिन इसके साथ ही गोल्ड लोन के ग्रोथ पर असर पड़ने की आशंका भी जताई है। एक दिन पहले ही आरबीआई ने एक सर्कुलर जारी करके कर्ज देने वाली एंटिटीज को अपनी पॉलिसी और पोर्टफोलियो की समीक्षा करने तथा तुरंत एक्शन लेने का निर्देश दिया था। इस सर्कुलर में कंपनियों को 3 महीने में पर्याप्त सुधार करने की चेतावनी दी गई है। आरबीआई की सख्ती के बाद ब्रोकरेज फर्म मॉर्गन स्टेनली ने एक विज्ञप्ति जारी करके कहा है कि इस सख्ती के कारण गोल्ड लोन की ग्रोथ घट सकती है। गोल्ड लोन देने वाली बड़ी कंपनियों को इससे काफी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। मॉर्गन स्टेनली ने कहा है कि आरबीआई की ये सख्ती गोल्ड लोन मार्केट की बेहतरी के लिए जरूरी तो है लेकिन इससे तत्काल कंपनियों के सामने परेशानियां खड़ी हो सकती हैं। विज्ञप्ति में ये भी कहा गया है कि केंद्रीय बैंक ने गोल्ड लोन कंपनियों को गड़बड़ी दूर करने के लिए 3 महीने का समय दिया है। इस तीन महीने की अवधि में अगर कंपनियां जरूरी सुधार कर लेती हैं तो आरबीआई का रेगुलेटरी एक्शन टल सकता है। इसी तरह जेफरीज ने भी आरबीआई की सख्ती को जरूरी बताते हुए इसका स्वागत किया है। हालांकि जेफरीज ने भी इस सख्ती की वजह से आने वाले दिनों में गोल्ड लोन के ग्रोथ पर असर पड़ने की आशंका जताई है। उल्लेखनीय की भारतीय रिजर्व बैंक ने सोने के बदले कर्ज देने वाली एंटिटीज के कामकाज में कई गड़बड़ियां पाए जाने के बाद सख्त रुख अपनाते हुए सर्कुलर जारी किया है।

दिन भर उतार चढ़ाव का सामना करने के बाद लाल निशान में बंद हुआ बाजार

एजेंसी। नई दिल्ली

पूरे दिन उतार-चढ़ाव का सामना करने के बाद घरेलू शेयर बाजार आज मामूली गिरावट के साथ बंद हुआ। आज के कारोबार की शुरूआत भी कमजोरी के साथ हुई थी। दिन के कारोबार में खरीदारी के जोर से शेयर बाजार कुछ देर के लिए हरे निशान में भी आया लेकिन बाद में बिकवाली का दबाव बन जाने की वजह से सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांकों ने लाल निशान में गोता लगा दिया। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.04 प्रतिशत और निफ्टी 0.05 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुए। आज दिन भर के कारोबार के दौरान मेटल, मीडिया और आईटी इंडेक्स में सबसे अधिक खरीदारी होती रही। इसी तरह ऑटोमोबाइल, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स, हेल्थ केयर और टेक इंडेक्स भी बढ़त के साथ बंद हुए। पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज, बैंकिंग, कैपिटल गुड्स, एफएमसीजी और ऑयल एंड गैस सेक्टर के शेयरों में बिकवाली होती रही। ब्रॉडर मार्केट में भी आज आमतौर पर मजबूती बनी रही, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.27 प्रतिशत की तेजी के साथ बंद हुआ।

अक्टूबर के पहले दिन सस्ता हुआ सोना, चांदी में कोई बदलाव नहीं

नई दिल्ली,अक्टूबर (हि.स.)। अक्टूबर के पहले दिन ही मंगलवार को घरेलू सराफा बाजार में गिरावट नजर आ रही है। इसके कारण आज सोना 150 से 160 रुपये प्रति 10 ग्राम तक सस्ता हो गया है। इस कमजोरी के कारण देश के ज्यादातर सराफा बाजारों में 24 कैरेट सोना 77,380 रुपये से लेकर 77,230 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना आज 70,940 रुपये से लेकर 70,790 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी की कीमत में आज कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली सराफा बाजार में ये चमकीली धातु आज भी 94,900 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार कर रही है। देश की राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 77,380 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 70,940 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है।

एयर इंडिया एक्सप्रेस और एआईएक्स कनेक्ट का विलय पूरा हुआ : डीजीसीए

नई दिल्ली। एयरलाइंस कंपनी एआईएक्स कनेक्ट का एयर इंडिया एक्सप्रेस के साथ विलय पूरा हो गया है। डीजीसीए ने विलय के लिए अपेक्षित विनियामक अनुमोदन प्रदान कर दिया है।

ये दोनों विमानन कंपनियां टाटा समूह का हिस्सा हैं। नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने मंगलवार को जारी बयान में यह जानकारी दी है। डीजीसीए ने एक बयान में कहा कि एक अक्टूबर, 2024 से एआईएक्स कनेक्ट के सभी विमान को एआईएक्स के एयर ऑपरेटर सर्टिफिकेट (एओसी) पर स्थानांतरित कर दिया गया है। इससे यह सुनिश्चित होगा कि संयुक्त इकाई का एयरलाइन परिचालन बिना किसी व्यवधान के जारी रहेगा, ताकि यात्रियों को सुरक्षित और सुचारू अनुभव मिल सके।

मुख्य मार्ग के किनारे खड़े सूखे पेड़ दे रहे दुर्घटना को आमंत्रण

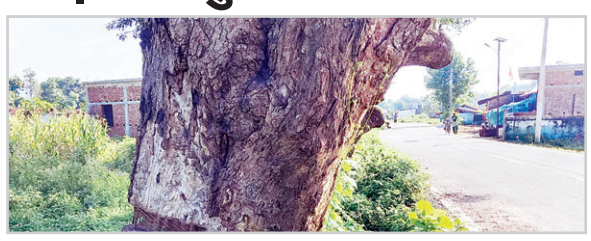

नवीन मेल संवाददाता

बड़गड़। बड़गड़ थाना क्षेत्र के बड़गड़-टेहड़ी मुख्य मार्ग पर गोठानी गांव के पास कई महीनों से खड़ा दो आम का सूखा पेड़ किसी बड़ी दुर्घटना को दावत दे रहा है। लेकिन प्रशासन व वन विभाग द्वारा पेड़ को हटाने का अभी तक कोई प्रयास नहीं किया गया है। ग्रामीणों ने बताया कि कुछ महीने पहले वन विभाग के कर्मी द्वारा एक आम के पेड़ को आधा काटकर छोड़ दिया गया है जिससे पेड़ गिरने का खतरा बढ़ गया है। इस व्यस्त मार्ग पर स्कूल के छात्र-छात्राओं सहित लोगों व वाहनों का आवाजाही निरंतर जारी रहता है। सूखे पेड़ की डालियां व शाखाएं कब किसी राह चलते वहन या किसी राहगीर पर टूटकर गिर पड़ेगी कहा नहीं जा सकता। ऐसे में मुख्य मार्ग में चलने वाले राहगीरों, वहां के ग्रामीणों के जीवन पर खतरे के बादल मंडरा रहे है। थाना क्षेत्र के कई जगहों पर अन्य पेड़ भी इसी तरह सूखकर खड़े है और दुर्घटना को दावत दे रहे है। क्षेत्र के प्रबुद्धजनों ने जिला प्रशासन व वन विभाग के उच्चाधिकारियों से दुर्घटना को दावत दे रहे गोठनी गांव के पास बड़गड़ - टेंहड़ी मुख्य मार्ग के किनारे खड़े सूखे आम के पेड़ों को तत्काल हटवाने की मांग की है।

सड़क किनारे खोदे गए गड्ढे से हादसे का खतरा

नगर पंचायत प्रशासन की लापरवाही पर स्थानीय निवासियों में आक्रोश

नवीन मेल संवाददाता

हुसैनाबाद। हुसैनाबाद अनुमंडल कार्यालय के गेट के समीप नगर पंचायत क्षेत्र के अंतर्गत पानी निकासी के लिए सड़क के किनारे खोदे गए गड्ढे से क्षेत्र में गंभीर हादसे की आशंका बनी हुई है। नगर पंचायत प्रशासन द्वारा इस नाले को खुला छोड़ दिया गया है, जिससे दुर्घटना होने का खतरा बढ़ गया है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि नाले को खुला रखने के बावजूद नगर प्रशासन ने वहां पर कोई सुरक्षा इंतजाम नहीं किए हैं। न तो किसी प्रकार की रुकावट का प्रबंध किया गया है और न ही कोई चेतावनी संकेतक लगाया गया है। इसका परिणाम यह है कि विशेष रूप से रात के समय, जब दृश्यता कम होती है, बाइक सवार और अन्य

वाहन चालक अनजाने में इस नाले में गिर सकते हैं, जिससे गंभीर दुर्घटनाएं हो सकती हैं। उक्त गड्ढे के कारण यदि किसी दिन कोई अप्रिय घटना घटित हो जाती है, तो इसके लिए जिम्मेदार कौन होगा? यह सवाल क्षेत्रवासियों के मन में गहराई से उभर रहा है। नगर प्रशासन की इस लापरवाही से क्षेत्र के लोग आक्रोशित हैं और मांग कर रहे हैं कि इस नाले को जल्द से जल्द सुरक्षित ढंग से बंद किया जाए, ताकि कोई अप्रिय घटना न हो। गत 15 अगस्त 2024 के पूर्व से ही पानी निकासी हेतु उक्त गड्ढा खोदा गया था।स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भी कई वाहन चालक इस नाले में गिरने से बाल-बाल बचे थे।जब सोशल मीडिया में इससे संबंधित खबर वायरल हुआ तो नगर प्रशासन ने उक्त स्थल के पास कुछ दिनों के लिए बैरिकेडिंग किया था,जिसे अब हटा लिया गया है। इस कारण पुनः अब किसी हादसे का खतरा बढ़ गया है। नगर प्रशासन को इस गंभीर मुद्दे पर ध्यान देने और उचित कार्रवाई करने की आवश्यकता है, अन्यथा जनता की सुरक्षा को खतरे में डालने के लिए प्रशासन को जिम्मेदार ठहराया जाएगा। स्थानीय नागरिकों ने नगर पंचायत प्रशासन से अनुरोध किया है कि वह अविलंब इस समस्या का समाधान करे, ताकि किसी भी प्रकार की दुर्घटना से बचा जा सके। लोगों का कहना है कि सड़क सुरक्षा के नाम पर हेलमेट की चेकिंग करने वालों को मुख्य सड़क के पास का गड्ढा नजर नहीं आ रहा है जो सुरक्षा के लिहाज से खतरनाक है।

न्यूज बॉक्स

घुरकी में विधायक भानु प्रताप शाही ने किया दो रोड का शिलान्यास

धुरकी। प्रखंड के शिवरी व कुम्बा कला गांव के चिपरिचित मांग पी डब्लु डी रोड से शिवरी होते हुए मिरचैया तक मजबुती करण व कदवा से कुम्बा कला पथ मजबुती करण आर ई ओ प्रमंडल गढ़वा द्वारा 10.23 करोड़ रु की लागत से बननेवाले रोड का शिलान्यास किया गया। विधायक भानु प्रताप शाही ने मंगलवार को गांव के वृद्ध आदिवासी के हाथों नारियल की फोड़कर शिलापट्ट का अनावरण कराया। उन्होंने कहा कि शिवरी गांव में 19 साल के बाद यह सड़क बनाने का काम किया है तो सिर्फ भानु प्रताप साही किया है। बच्चों का भविष्य उज्जवल करने के लिए उन्होंने उच्च विद्यालय दिया है। गांव की महिलाओं व बेटी बहन का प्रसव गांव में हो, इसके लिए स्वास्थ्य केंद्र बनवाया है। वही भानु प्रताप शाही ने कहा कि पूर्व विधायक के द्वारा एक भाव भी दिखा दिया जाए तो हम जाने उन्होंने यह भी कहा कि अब पूर्व विधायक तुम तडाक पर भी आ गए हैं कार्यक्रम को एससी मोर्चा के जिलाध्यक्ष लक्ष्मण राम, इन्द्रमणी जैसवाल,शालीग्राम गुप्ता सहित अन्य ने भी संबोधित किया। उपस्थित लोग मौके पर शशि कमलापुरी, चांददेव बैठा, संतोष जैसवाल, भगतदयान्द यादव, उपेंद्र चंद्रवंशी, तेजु कोरवा, रामप्रवेश यादव सहित काफी संख्या में लोग उपस्थित थे।

एक नजर

नवविवाहिता ने की खुदकुशी, पति हिरासत में

चतरा (हि.स.)। जिले के चिटुआ गांव में एक नव विवाहिता ने फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली है। महिला की मां गामा देवी निवासी कटकमसांडी, बोरोगड़ा ने पत्थलगडा थाना को आवेदन देकर आवेदन देकर कार्रवाई करने की मांग की है। पुलिस ने महिला के पति को हिरासत में ले लिया है। आवेदने में कहा गया है कि सोनी कुमारी की शादी विगत फरवरी माह में चिटुआ के सोमा मुंडा के साथ हुई थी। उस समय से ही पति सोमा मुंडा, उसकी मां और भाभी उसे बराबर प्रताड़ित करती थी। ससुराल वाले उसे बराबर आत्महत्या के लिए उकसाते थे।

पुलिस ने अवैध शराब भट्टी को किया ध्वस्त

हरिहरगंज। पलामू एसपी के निर्देशानुसार शराब माफियाओं के खिलाफ हरिहरगंज थाना पुलिस ने रविवार को छापेमारी अभियान चलाया। बिहार की सीमा से सटे थाना क्षेत्र के सुदूरवर्ती कूलहिया गांव के बाहर चल रहे अवैध देशी महुआ शराब भट्ठी की सूचना पर पुलिस ने छापेमारी की। जहां पुलिस ने अवैध शराब भट्ठी को ध्वस्त किया। पुलिस निरीक्षक सह थाना प्रभारी चंदन कुमार के नेतृत्व में छापामारी दल ने जमीन में गाड़कर 7 ड्राम में रखे गये करीब 4 क्विंटल जावा महुआ के साथ ही निर्मित शराब को नष्ट कर दिया गया। हालांकि पुलिस को आते देख जंगल और पहाड़ी इलाके का लाभ लेकर धंधेबाज भागने में सफल रहे। इस संबंध में थाना प्रभारी ने बताया कि पुलिस अवैध शराब के धंधे से जुड़े व्यक्ति की संलिप्तता की पता कर रही है। छापेमारी दल में एसआई सतीश कुमार गुप्ता, बिगेश राय, धनंजय गोप, राकेश कुमार सिंह सहित सशस्त्र बल शामिल थे।

लौह अयस्क पत्थर लदा ट्रक पलटा, बचे चालक व उपचालक

चंदवा। चंदवा-चांपी-लोहरदगा मार्ग पर डेढ़टंगवा घाटी में मंगलवार की सुबह लौह अयस्क पत्थर लदा एक ट्रक अनियंत्रित होकर दुर्घटनाग्रस्त हो गयी। दुर्घटना के बाद ट्रक बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया जिसके कारण लौह पत्थर सड़क किनारे बिखर गया। हालांकि इस दुर्घटना में चालक व उप चालक की जान बाल-बाल बच गयी वहीं सामने से आ रहा एक बाइक सवार भी चपेट में आते-आते बच गया। जानकारी के अनुसार उक्त ट्रक राउरकेला से लौह पत्थर लेकर मध्य प्रदेश जा रही थी। इसी दौरान डेढ़टंगवा घाटी के तीखे ढलान में सड़क के बीचों-बीच खड़ी ब्रेक डाउन ट्रक से बचने के प्रयास में ट्रक का संतुलन बिगड़ गया और सामने से आ रही बाइक को बचाने के प्रयास में ट्रक पलट गयी।

मनकेरी गांव में युवाओं की जन पंचायत का सफल आयोजन

नवीन मेल संवाददाता

लातेहार। लातेहार प्रखंड के तरवाडीह पंचायत के अंतर्गत मनकेरी गांव में युवाओं की जन पंचायत का सफल आयोजन किया गया। इस महत्वपूर्ण बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में आजसू पार्टी के जिलाध्यक्ष अमित पाण्डेय और मनिका विधानसभा के युवा नेता सुभाष सिंह शामिल हुए। पंचायत में युवाओं की विभिन्न समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की गई।इस जन पंचायत का मुख्य उद्देश्य युवाओं की समस्याओं को समझना और उन्हें समाधान दिलाने के लिए ठोस कदम उठाना था। बैठक के दौरान युवाओं ने शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सुविधाएं, और खेल-कूद से संबंधित समस्याओं पर अपनी बातें रखीं।मुख्य अतिथि अमित पाण्डेय ने युवाओं की आवाज को गंभीरता से सुना और उन्हें भरोसा दिलाया कि पार्टी उनकी समस्याओं को सुलझाने के लिए हरसंभव प्रयास करेगी। उन्होंने कहा कि युवा देश का भविष्य हैं और उन्हें सशक्त बनाना सबसे बड़ी प्राथमिकता होनी चाहिए। मनिका विधानसभा के युवा नेता सुभाष सिंह ने भी इस अवसर पर कहा कि विधानसभा का नेतृत्व अब युवाओं को सौंपने का समय आ गया है। उन्होंने युवाओं को राजनीति में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। जन पंचायत में युवाओं ने एकजुट होकर अपने क्षेत्र के विकास के लिए काम करने का संकल्प लिया।

दुर्गा पूजा मनाने को लेकर की गई शांति समिति की बैठक

नवीन मेल संवाददाता

बारियातू। थाना परिसर मे मंगलवार को शांतिपूर्ण तरीके से दुर्गा पूजा मनाने को लेकर बीडीओ सह सीओ नंद कुमार राम के अध्यक्षता मे शांति समिति की बैठक किया गया। बैठक मे सभी दुर्गा पूजा समिति अध्यक्ष से कार्यक्रम की जानकारी लिया गया। साथ ही कलश स्थापना, कार्यक्रम सहित विसर्जन को लेकर सभी समितियों से बारी-बारी वार्ता की गई। टोटी हेसला पूजा समिति द्वारा बताया की पिछले सात वर्षों से एकादशी के दिन दोपहर मे मेला का आयोजन किया जाता है साथ ही मूर्ति विसर्जन भी करते हैं। वहीं थाना प्रभारी राजा दिलावर ने गोनिया, गड़गोमा, बालूभाँग, भाटचतरा सहित अन्य पूजा समिति से पूजा पंडाल और कार्यक्रम को लेकर लोगों से विचार लिया। उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए सीओ सह बीडीओ राम ने कहा की दुर्गा पूजा सहोर्दय वातावरण के साथ मनाए। पूजा पंडाल मे

सीसीटीवी कैमरा लगाना अनिवार्य है। पूजा स्थल मे बनाए गए पूजा पंडाल मे विजली वायरिंग की जाँच करने और सॉट सर्किट से अग्नि से बचाव के लिए विभिन्न तरह का सुझाव दिया । पूजा मे कानूनी तरीके से डीजे प्रतिबन्ध रहेगा। पूजा पंडाल मे आने जाने के लिए अलग-अलग महिला पुरुष का रास्ता बनाए ताकि लोगों को परेशानी न हो। थाना प्रभारी दिलावर ने कहा की शोशल मिडिया के माध्यम से क्षेत्र मे धार्मिक रूप से भार्मक मैसेज या आस्था के प्रति खिलवाड़ करने वाले पर पुलिस की पैनी नजर रहेगी। साथ ही कहा की अवैध रूप महुआ दारू बेचने वाले स्थल पर छापामारी किया जायेगा। सड़क दुर्घटना को नियंत्रण रखने के उदेश्य से दो अक्टूबर बुधवार से हेलमेट चेकिंग किया जायेगा। मौके पर जिला परिषद सदस्य रमेश राम, बीससूत्री अध्यक्ष राजेंद्र गंझु, कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष रीगन कुमार,मुखिया केदार गंझु, पंसस राजेश राम, समाज सेवी, कयूम, संजय सिंह, तुला गंझु, धीरज राणा, डब्लू सिंह, अनुप कुमार सोनी, शिव शंकर ठाकुर, अफजल अंसारी, पंकज सिंह, मो शालीम, लाल आशीष नाथ शाहदेव, सफीक, ईश्वरी प्रसाद सहित काफी संख्या मे ग्रामीण मौजूद थे।

स्वास्थ्य विभाग की छापेमारी के बाद भी अवैध मेडिकल व पैथोलॉजी दुकानें चालू

मेडिकल व पैथोलॉजी केंद्रों के खिलाफ मिलीभगत का आरोप

चिकित्सा प्रभारी ने कहा

डॉ. दिनेश कुमार ने बताया कि उन्होंने सभी दुकानदारों से कागजात और रजिस्ट्रेशन की मांग की थी, लेकिन कोई दस्तावेज प्रस्तुत नहीं किए गए। उन्होंने कहा कि उच्च अधिकारियों के दबाव के कारण आगे की कार्रवाई में देरी हो रही है।

नवीन मेल संवाददाता

भवनाथपुर। स्थानीय स्वास्थ्य प्रशासन द्वारा भवनाथपुर में अवैध रूप से संचालित मेडिकल दुकानों और पैथोलॉजी जांच केंद्रों पर की गई छापेमारी के बावजूद ये दुकानें दोबारा से चालू हो गई हैं। सीएचसी प्रभारी डॉ. दिनेश कुमार की निगरानी में 10 सितंबर को आधा दर्जन से अधिक मेडिकल दुकानों और पैथोलॉजी केंद्रों की जांच की गई, जिसमें अधिकांश दुकानदारों के पास कागजात और रजिस्ट्रेशन नहीं थे। कार्रवाई के तहत दुकानों को बंद करने का आदेश दिया गया, लेकिन कुछ ही घंटों बाद ये दुकानें फिर से खुल गईं। क्षेत्रीय लोग स्वास्थ्य विभाग और दुकानदारों की मिलीभगत का आरोप लगा रहे हैं। छापेमारी के दौरान कई दुकानदार शटर गिराकर भाग गए थे, जबकि एक संचालक फर्जी कागजात के आधार पर दुकान चलाने के आरोप में पुलिस के हवाले किया गया था। इसके बावजूद अवैध मेडिकल और पैथोलॉजी केंद्र निर्बाध रूप से संचालित हो रहे हैं, जिससे विभागीय कार्रवाई पर सवाल उठ रहे हैं। सीएचसी प्रभारी डॉ. दिनेश कुमार के अनुसार, भवनाथपुर में केवल एक पैथोलॉजी केंद्र के पास वैध रजिस्ट्रेशन है। बिना रजिस्ट्रेशन के जांच केंद्र चलाने पर 50 हजार से 5 लाख रुपये तक का जुमार्ना लगाने का प्रावधान है, लेकिन विभागीय लापरवाही के चलते अवैध पैथोलॉजी केंद्रों की संख्या में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। आम लोगों में यह चर्चा है कि यदि विभाग को कार्रवाई नहीं करनी थी, तो छापेमारी की औपचारिकता क्यों निभाई गई।

सबकी योजना, सबका विकास अभियान के तहत ग्रामसभा आज

नवीन मेल संवाददाता

खरौंधी। खरौंधी प्रखंड अंतर्गत मझिगावां पंचायत सचिवालय में 2 अक्टूबर गांधी जयंती के अवसर पर ₹सबकी योजना, सबका विकास₹ अभियान के तहत विशेष ग्राम सभा का आयोजन किया जाएगा। इस ग्राम सभा का उद्देश्य पंचायत स्तर पर विकास योजनाओं को सशक्त और समावेशी बनाना है, जिससे सभी समुदायों को लाभ मिल सके। पंचायत की मुखिया बिंदा देवी ने बुधवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस विशेष ग्राम सभा में गांव की बुनियादी आवश्यकताओं जैसे सड़क, पानी, बिजली, स्वास्थ्य और शिक्षा से जुड़े मुद्दों पर चर्चा होगी। साथ ही, आने वाले समय में विकास योजनाओं की रूपरेखा तैयार की जाएगी।मुखिया बिंदा देवी ने ग्रामीणों से अपील की है कि वे इस ग्राम सभा में बढ़-चढ़कर हिस्सा लें और अपने सुझाव व समस्याओं को रखें ताकि पंचायत के विकास में उनकी सक्रिय भागीदारी हो सके। विशेष ग्राम सभा में विभिन्न विभागों के अधिकारी भी मौजूद रहेंगे, जो ग्रामीणों की समस्याओं का समाधान करेंगे और सरकारी योजनाओं की जानकारी देंगे। सबकी योजना, सबका विकास अभियान का लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों में समग्र विकास सुनिश्चित करना और सभी को योजनाओं का लाभ पहुंचाना है।

बीडीओ ने लिया प्रभार

केतार। मंगलवार को बीडीओ सावित्री कुमारी ने प्रभारी बीडीओ विकास कुमार सिंह से प्रभार ग्रहण किया। बीडीओ सावित्री कुमारी पिछले दो माह से अवकाश पर थी। अवकाश से लौटते ही उन्होंने बीडीओ का प्रभार लिया। इस मौके पर प्रभारी बीडीओ विकास कुमार सिंह ने कहा की दो माह का कार्यकाल काफी सुखद रहा।

डीडीसी ने मनरेगा की नई योजना के कार्यान्वयन पर लगाई रोक

पूर्व से लंबित योजनाओं को अविलंब भौतिक रूप से बंद करने का दिया निर्देश

नवीन मेल संवाददाता

डंडाई। प्रखंड क्षेत्र में संचालित होने वाले मनरेगा की मेड बंदी योजना के कार्यानवयन पर डीडीसी पशुपति नाथ मिश्रा के द्वारा रोक लगा दिया गया है। पत्रांक 44 दिनांक 28/9 /2024 को बीडियो के नामे जारी पत्र में उनके द्वारा कहा गया है कि जब तक पुरानी सभी योजनाओं को अंतिम रूप देकर बंद नहीं कर लिया जाता है तब तक दूसरा कोई भी मनरेगा की योजना संचालित नही करेंगे । लिखे चिट्ठी में उन्होंने कहा है कि जिलेभर में कुल 18169 मनरेगा की योजनाएं पूर्व से संचालित है जो उसके पोर्टल पर देखा जा रहा है। औसतन सभी प्रखंडों में उसका आंकड़ा लगभग 800 योजना के करीब हो जाता है। जिले का कोई भी प्रखंड ऐसा नहीं

है जहां पर मनरेगा की योजना पूर्व से संचालित नहीं है। ऐसे में नया योजना लेने का कोई प्रश्न ही नहीं उठाता है। डीडीसी ने सभी कमपुटर आपरेटर, पंचायत सचिव ,मुखिया, रोजगार सेवक कनीए अभियंता, सहायक अभियंता एवं बीपीओ के साथ दैनिक रूप से समीक्षा पर्यवेक्षण करते हुए पूर्व से लंबित योजनाओं को नियमानुसार एम आई एस से बंद करने का शख्त निर्देश दिया है । वहीं उन्होंने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा है कि यदि पूर्व से लंबित योजना रहने के बावजूद नई योजना प्रारंभ की जाती है तो प्रखंड स्तर पर बीडियो, बीपीओ और पंचायत स्तर पर पंचायत सचिव व रोजगार सेवक के खिलाफ जाचोप्रांत नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। मालूम हो कि प्रखंड क्षेत्र में इन दीनों बड़े पैमाने पर मनरेगा के मेड बंदी योजना का कार्यनवयन को लेकर विशेष तैयारी चल रही थी । यहां तक कि उक्त योजना को किसी-किसी पंचायतो में मनरेगा के पोर्टल पर ऑनलाइन भी कर दिया गया है। लेकिन डीडीसी का उस बाबत पत्र जारी होते ही उस पर विराम लगा गया गया है। साथ ही अक्टूबर माह का आरंभ होते ही मेड़बंदी योजना पर पूर्ण रुप से विराम लग गया है।

समाजसेवी बब्बन सिंह ने ली कांग्रेस की सदस्यता

बालूमाथ। लातेहार जिला के चर्चित समाजसेवी बब्बन सिंह ने मंगलवार को कांग्रेस पार्टी का सदस्यता ग्रहण की। बता दें कि कांग्रेस पार्टी के लातेहार जिला अध्यक्ष मुनेश्वर उरांव के पहल पर रांची स्थित कांग्रेस पार्टी कार्यालय में कांग्रेस विधायक दल के नेता सह वित्त मंत्री झारखंड सरकार रामेश्वर उरांव एवं पूर्व सांसद सुबोध कांत सहाय ने बब्बन सिंह को विधिवत पार्टी का सदस्यता ग्रहण कराया। श्री बबन ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा की मैं पार्टी के नीति सिद्धांत को पालन करूंगा एवं पार्टी के कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर लातेहार जिले में संगठन को और भी मजबूती प्रदान करूंगा। इधर कांग्रेस जिला अध्यक्ष मुनेश्वर उरांव ने बब्बन सिंह को पार्टी में स्वागत करते हुए कहा कि श्री सिंह का पार्टी में आने से पार्टी को और भी मजबूती मिली है निश्चित तौर पर कांग्रेस पार्टी लातेहार जिला में इतिहास रचने का कार्य करेगी।

पेज एक के शेष

योजनाओं को घर-घर...

मेरे मंत्री रहते आपसभी जलसहिया दीदियों की नियुक्ति हुई थी। आपकी समस्याओं को मुझसे ज्यादा कोई नहीं समझ सकता है। आज राज्य में आप सभी के उम्मीद और आकांक्षाओं की सरकार है। निश्चित रूप से आपकी कई अपेक्षाओं को पूरा करने में हमारी सरकार सफल भी रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आप सभी दीदी-बहनों को फिर से एक ताकतवर कड़ी बनाने का हमारा उद्देश्य है। हमारी सरकार संवेदनशील सरकार है। हमारी सरकार विशुद्ध रूप से इस राज्य के मूलवासियों-आदिवासियों की सरकार है। मैंने पहले भी कहा था और आज भी कह रहा हूं हमारी सरकार रांची हेडक्वार्टर से नहीं, बल्कि गांव से चलने वाली सरकार है। यही कारण है कि आप सभी की आवाज मेरे कानों तक पहुंचती है।

स्वच्छ पेयजल उपलब्ध...

ऐसी स्थिति में देश मजबूत कैसे हो सकता है। आज भी इस देश में 80 करोड़ लोग सरकार द्वारा दिए जा रहे अनाज पर आश्रित है। इस स्थिति को बदलने की जरूरत है, तभी विकसित भारत का सपना पूरा हो सकेगा।इस मौके पर मुख्यमंत्री ने मोबाइल क्रय के लिए चेक प्रारूप का वितरण, पेयजल एवं स्वच्छता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए जलसहियाओं, मुखिया एवं एसएचजी के बीच प्रशस्ति पत्र का वितरण किया। महिला स्वयं सहायता समूहों को दिए 12 हजार करोड़ : मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के कहा कि अलग-अलग तरह से हमारी सरकार ने महिला स्वयं सहायता समूहों को अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए, उन्हें स्वावलंबी बनाने के लिए कार्य योजना बनाई है। राज्य में महिला स्वयं सहायता समूहों की दीदियों को अधिक से अधिक रोजगार से जोड़ा जा सके, इस निमित्त निरंतर प्रयास किया गया है। साथ ही, कहा कि पिछले 19 वर्षों में सेल्फ हेल्प ग्रुप की महिलाओं को पूर्व की सरकारों द्वारा मात्र 600 से 700 करोड़ रुपये का फंड उपलब्ध कराया गया था। हमारी सरकार ने विगत 4 वर्षों में महिला स्वयं सहायता समूहों के सर्वांगीण विकास के लिए 12 हजार करोड़ रुपये का फंड उपलब्ध कराया है।

हेमंत सोरेन ने...

मुख्यमंत्री ने हाल में खनन एवं रॉयल्टी के मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट के नौ जजों की फुल बेंच की ओर से सुनाए गए फैसले का हवाला देते हुए कहा है कि सर्वोच्च न्यायालय ने राज्य के पक्ष में फैसला दिया है। न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि खनन और रॉयल्टी शुल्क वसूलने का अधिकार राज्य को है। उन्होंने कहा है कि इस बकाया का भुगतान नहीं होने से झारखंड राज्य को अपूरणीय क्षति हो रही है। शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला एवं बाल विकास, स्वच्छ पेयजल और अंतिम छोर तक कनेक्टिविटी जैसी विभिन्न सामाजिक योजनाएं फंड की कमी के कारण जमीन पर उतारने में दिक्कत आ रही है। उन्होंने पीएम से अपील की है कि वह इस मामले में हस्तक्षेप करें और कोयला कंपनियों को बकाया राशि का भुगतान करने का निर्देश दें।

हजारीबाग में कई...

बता दें कि प्रधानमंत्री मोदी 17 दिनों में दूसरी बार झारखंड दौरे पर आ रहे हैं, जबकि हजारीबाग में तीसरी बार आ रहे हैं। इधर, प्रधानमंत्री मोदी के हजारीबाग आगमन पर पुलिस ने सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए हैं। संदिग्ध लोगों पर नजर रखने के लिए एक खास तरह की तकनीक का भी इस्तेमाल हो रहा है। ड्रोन से भी निगरानी रखी जा रही है। प्रधानमंत्री मोदी के आगमन को लेकर हजारीबाग शहर में सभी मुख्य जगहों पर सीसीटीवी लगाए गए हैं। अग्निशमन विभाग की छह दमकल गाड़ियों को तैनात किया गया है।

भाजपा उम्मीदवारों की...

भाजपा फिलहाल नौ सीट देने को तैयार है। लेकिन, आजसू 9 से 10 सीट की मांग कर रही है। संभावना है कि भाजपा नौ से अधिक सीट आजसू को नहीं देगी। जिन सीटों पर विवाद है, उनका हल जल्द निकाल लिया जाएगा। तमाड़, मांडू और बड़कागांव सीट पर आजसू की दावेदारी के कारण मामला फंसा हुआ है। इस महीने के अंत तक सीटों का बंटवारा भी एनडीए में हो जाएगा।

सरकार विष कन्या...

लाडली बहिन योजना शुरू होने के साथ ही उन्हें सब्सिडी के लिए आवंटित निधि इस काम के लिए इस्तेमाल करनी पड़ेगी। महायुति सरकार की महत्वाकांक्षी मुख्यमंत्री माझी लाडली बहिन योजना के तहत 21 से 62 वर्ष की आयु की उन विवाहित, तलाकशुदा और निराश्रित महिलाओं को हर महीने 1,500 रुपये की आर्थिक मदद दी जा रही है, जिनकी पारिवारिक आय सालाना 2.5 लाख रुपये से ज्यादा नहीं है। आगामी विधानसभा चुनाव से पहले लाई गई इस योजना से हर साल सरकारी खजाने पर 46,000 करोड़ रुपये का बोझ पड़ने की संभावना है। लाडली बहिन पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता की टिप्पणियों पर निशाना साधते हुए विपक्षी राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एसपी) और शिवसेना (यूबीटी) ने कहा कि अगर सरकार में शामिल लोग ही कह रहे हैं कि राज्य की अर्थव्यवस्था संकट में है, तो यह चिंता का विषय है। वहीं, शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) सांसद संजय राउत ने सोमवार को पत्रकारों से कहा, गडकरी ने बहुत सही बयान दिया है। ऐसे समय में अगर धन का दुरुपयोग और कुप्रबंधन होता है, जब खजाने में धन की कमी है और सरकार अन्य योजनाओं को निर्लंबित कर रही है, तो क्या केंद्र सरकार की कोई जिम्मेदारी (राज्य की योजना के संबंध में) बनती है? एनसीपी (शरद चंद्र पवार) की लोकसभा सदस्य सुप्रिया सुले ने भी राज्य की वित्तीय स्थिति पर चिंता जताई। इससे पहले भाजपा विधायक टेकचंद सावरकर ने पिछले हफ्ते लाडली बहिन योजना को नवंबर में होने वाले चुनावों में महिलाओं के वोट हासिल करने के लिए एक जुगाड़ कहा था। उपमुख्यमंत्री और भाजपा नेता देवेंद्र फडणवीस ने गडकरी की टिप्पणियों पर कहा कि उनका बातें कहने और अपने विचार रखने का एक अलग अंदाज है।

KASHYAP'S DENTAL CLINIC

Dr. Vaibhav Kashyap

Oral & Dental Surgeon, C.c. Endodontist & Implantologist Certified Orthodontist, MIDA

" Smiles & More"

छात्र-छात्राओं के लिए 50% की छूट

Facilities

- आरसीटी
- पायरिया का ईलाज
- टेढ़े-मेढ़े दाँतों का ईलाज
- स्माईल डिजाइन
- इनविजिवल क्लिप
- दंत रोपण
- फिक्स दाँत लगाना
- अत्याधुनिक मशीन और तकनीक के द्वारा ईलाज

CHAMBER

SKYLINE - 4006, 4th Floor, Kadru, Opp. Dr. Lal's Hospital, Ranchi
Contact No. : 9199533383, 7903835453
Time : 9 am to 2 pm & 4 pm to 8 pm
Sunday : 9 am to 2 pm
E-mail : vaibhav.kashyap2011@gmail.com

पश्चिमी प्रतिबंधों का मुकाबला करने को रूस के साथ मजबूत रिश्ते जरूरी : ईरान

तेहरान (आईएएनएस)। ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन ने पश्चिम के 'क्रूर' प्रतिबंधों का मुकाबला करने के लिए रूस के साथ द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत बनाने पर जोर दिया। सोमवार को उनके कार्यालय की वेबसाइट पर प्रकाशित एक बयान के मुताबिक, पेजेशकियन ने तेहरान में रूसी प्रधानमंत्री मिखाइल मिशुस्टिन के साथ बैठक में यह टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि ईरान और रूस के बीच राजनयिक प्रतिनिधिमंडलों के आदान-प्रदान से द्विपक्षीय बातचीत और संबंधों को बढ़ाने में मदद मिलेगी। रूसी प्रधानमंत्री ने ईरान के साथ ऊर्जा, उद्योग, परिवहन, कृषि, स्वास्थ्य और संस्कृति के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने की मॉस्को की इच्छा व्यक्त की। मिशुस्टिन ने पिछले कुछ महीनों में द्विपक्षीय ट्रेड एक्सचेंज में 'बहुत अच्छी' वृद्धि की सराहना की।

जापान की संसद ने शिगेरू इशिबा को चुना प्रधानमंत्री

टोक्यो (आईएएनएस)। जापान के प्रधानमंत्री फूमियो किशिदा ने मंगलवार को अपने मंत्रिमंडल के साथ इस्तीफा दे दिया। स्थानीय मीडिया के अनुसार, इसके साथ ही राजनीतिक घोटालों और बढ़ती महंगाई से प्रभावित उनके तीन साल के कार्यकाल का अंत हो गया। इस बीच, जापान की सत्तारूढ़ लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (एलडीपी) के नेता 67 वर्षीय शिगेरू इशिबा को मंगलवार को संसदीय मतदान में देश का अगला प्रधानमंत्री चुन लिया। वे फूमियो किशिदा की जगह लेंगे। जापानी संसद के निचले और ऊपरी दोनों सदनों ने इशिबा का समर्थन किया।

सूर्य ग्रहण आज, भारत में यह ग्रहण दृश्य नहीं होगा

भोपाल (हि.स.)। देशभर में 03 अक्टूबर से शारदीय नवरात्रि का पर्व शुरू हो जाएगा। इससे पहले बुधवार (02 अक्टूबर) को भारतीय समयानुसार रात्रि में लगभग 9 बजकर 13 मिनट से सूर्यग्रहण की घटना होने जा रही है। रात्रि में यह खगोलीय घटना होने के कारण इस ग्रहण को भारत में तो नहीं देखा जा सकेगा। लेकिन, अर्जेंटीना एवं चिली में इसे एन्यूलर या वलयाकार ग्रहण के रूप में देखा जा सकेगा। वहीं फिजी, उरुग्वे, ब्राजील पेरू आदि देशों में पार्शियल या आंशिक सूर्यग्रहण के रूप में देखा जा सकेगा। यह ग्रहण रात्रि 3 बजकर 17 मिनट पर समाप्त हो जाएगा।

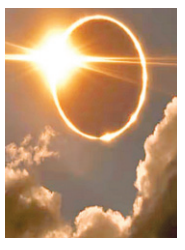

चीन सीमा पर भारत किसी भी आकस्मिक हालात से निपटने का तैयार

एलएसी पर स्थिति स्थिर, पर सामान्य नहीं : जनरल द्विवेदी

एजेंसी

नई दिल्ली (आईएएनएस)। भारतीय सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी के मुताबिक चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर स्थिति स्थिर, लेकिन सामान्य नहीं है। दिल्ली कैंट में मंगलवार को चाणक्य रक्षा संवाद में बोलते हुए, जनरल द्विवेदी ने यह बात कही। डिफेंस डायलॉग के दौरान उन्होंने कहा कि वर्तमान स्थिति संवेदनशील बनी हुई है। इसके साथ ही सेना प्रमुख ने यह भी बताया कि भारत किसी भी आकस्मिक स्थिति के लिए तैयार है।

गौरतलब है कि मई 2020 में भारत चीन सीमा पर सैन्य गतिरोध शुरू हुआ था। जनरल द्विवेदी ने बताया कि भारत का लक्ष्य मई 2020 में शुरू हुए सैन्य गतिरोध से पहले की स्थिति को बहाल करना है। इसमें लैंड ऑक्यूपेशन, बफर जोन और पेट्रोलिंग की स्थितियों को पहले की स्थिति में बहाल करना है। जनरल द्विवेदी ने कहा कि जब तक उस स्थिति की बहाली नहीं हो जाती, वहां स्थिति संवेदनशील बनी रहेगी। सीमा पर चीन के संदर्भ में जनरल द्विवेदी ने कहा, स्थिति स्थिर है, लेकिन सामान्य नहीं है और संवेदनशील है। अगर ऐसा है तो हम क्या चाहते हैं, हम चाहते हैं कि अप्रैल 2020 से पहले की स्थिति बहाल हो। इसलिए जब तक वह स्थिति बहाल नहीं हो जाती, जहां तक हमारा सवाल है, स्थिति संवेदनशील रहेगी और हम (सेना) किसी भी प्रकार की आकस्मिक स्थिति का सामना करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

जनरल द्विवेदी ने कहा कि दोनों देशों के बीच चल रही कूटनीतिक वार्ता के बावजूद, किसी भी समझौते का क्रियान्वयन जमीन पर सैन्य कमांडरों पर निर्भर करता है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि कूटनीतिक वार्ता से सकारात्मक संकेत मिले हैं। बावजूद इसके अभी तक सेनाओं की पूरी तरह से वापसी नहीं हो सकी है।

सेना प्रमुख ने कहा

भारत का लक्ष्य है वर्ष 2020 के सैन्य गतिरोध से पहले की स्थिति को बहाल करना

कूटनीतिक वार्ता से मिले सकारात्मक संकेत, पर नहीं हो पाई है सेनाओं की पूरी वापसी

अब राज्य सरकारों को भी संसाधन जोड़ने का अधिकार है

चीन के साथ सीमा मुद्दे पर चर्चा करते हुए सेना प्रमुख ने कहा कि जबतक अप्रैल 2020 से पहले की स्थिति बहाल नहीं हो जाती, तब तक स्थिति संवेदनशील बनी रहेगी और हम पूरी तरह से परिचालन के लिए तैयार हैं। वहीं, चीन द्वारा आधुनिक सीमावर्ती गांव बसाए जाने की भी खबर है। आर्मी चीफ ने भारतीय सीमावर्ती गांवों के विषय में कहा कि हमारे देश में इस तरह के मॉडल विलेज बनते आ रहे हैं। अब राज्य सरकारों को भी संसाधन जोड़ने का अधिकार है। अब सेना, राज्य सरकारें और केंद्र सरकार की निगरानी सब एक साथ जारी है, इसलिए अब जो नए मॉडल विलेज बन रहे हैं, वे और भी बेहतर होंगे। जम्मू-कश्मीर पर आर्मी चीफ ने कहा कि आर्टिकल 370 हटने के बाद अब वहां स्कूली बच्चों को मालूम हैं कि उन्हें कौन सा झंडा ड्रॉ करना है। भारतीय सेना प्रमुख का कहना है कि उन्हें लगता है कि हम शांति और समृद्धि की तरफ अग्रसर हैं।

साइबर हमले राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

एजेंसी

नई दिल्ली (हि.स.)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने मंगलवार को कहा कि साइबर हमले राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा बनकर उभरे हैं। उन्होंने सभी से इस मुद्दे की गंभीरता को समझने और इसे दूर करने के लिए ठोस कदम उठाने का आग्रह किया। राष्ट्रपति मुर्मू मंगलवार को राष्ट्रपति भवन में 64वें राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय पाठ्यक्रम के संकाय और पाठ्यक्रम सदस्यों को संबोधित कर रही थीं। इस अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा कि गतिशील वैश्विक भू-राजनीतिक वातावरण कई चुनौतियां पेश करता है। हाल के दिनों में जिस तेज गति से घटनाएं सामने आई हैं, उसका शायद एक दशक पहले अनुमान नहीं लगाया जा सकता था। इस प्रकार सभी अधिकारी, चाहे वे सिविल सेवाओं के हों या रक्षा सेवाओं के, उन्हें उन चुनौतियों और कमजोरियों के बारे में पता होना चाहिए, जिनका वे सामना करते हैं

और उन शक्तियों के बारे में पता होना चाहिए, जो ऐसी चुनौतियों से निपटने में मदद कर सकती हैं। एक ताकत जो उनके पास होनी चाहिए और जिसके बिना काम नहीं चल सकता, वह है अपने संगठनों, देशों और मानवता की भलाई के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में सक्षम होना। नवाचार एक और कारक है, जो उन्हें भविष्य के लिए तैयार रखेगा।

राष्ट्रपति ने कहा कि आज हमारी सुरक्षा चिंताएं क्षेत्रीय अखंडता के संरक्षण से आगे बढ़कर राष्ट्रीय कल्याण के अन्य क्षेत्रों, जैसे आर्थिक, पर्यावरणीय, ऊर्जा सुरक्षा और साइबर सुरक्षा मुद्दों को भी शामिल करती हैं। इन चिंताओं को दूर करने के लिए गहन शोध की आवश्यकता है और एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है। राष्ट्रपति ने कहा कि साइबर हमले राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा बनकर उभरे हैं। साइबर हमलों से निपटने और उनका मुकाबला करने के लिए उच्च-स्तरीय तकनीकी हस्तक्षेप के साथ-साथ मजबूत डिजिटल बुनियादी ढांचे के साथ-साथ एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित और विशेष मानव संसाधन की आवश्यकता होती है। यह उन क्षेत्रों में से एक है, जहां सिविल सेवाओं और सशस्त्र बलों को एक साथ मिलकर एक सुरक्षित राष्ट्रव्यापी प्रणाली बनाने में सक्षम होना चाहिए, जो ऐसे हमलों को विफल कर सके। उन्होंने कहा कि तकनीकी विकास ने देशों के लिए डिजिटल बुनियादी ढांचे को स्थापित करना और उसका उपयोग करना अनिवार्य बना दिया है।

मोदी और जमैका के पीएम के बीच द्विपक्षीय वार्ता, व्यापार-निवेश पर चर्चा

एजेंसी

नई दिल्ली (हि.स.)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और जमैका के प्रधानमंत्री एंड्रयू होलनेस के बीच मंगलवार को नई दिल्ली के हैदराबाद हाउस में द्विपक्षीय वार्ता हुई। इस दौरान दोनों नेताओं ने संबंधों को अधिक मजबूत करने और व्यापार, निवेश, नवीकरणीय ऊर्जा, डिजिटल परिवर्तन, विकास साझेदारी, शिक्षा, क्षमता निर्माण और लोगों से लोगों से संपर्कों में सहयोग बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और जमैका के प्रधानमंत्री एंड्रयू होलनेस के बीच मंगलवार को प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता के बाद दोनों नेताओं ने संयुक्त पत्रकार सम्मेलन को संबोधित किया। इस दौरान दोनों नेताओं की उपस्थिति में भारत और जमैका के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) का आदान-प्रदान किया गया। प्रधानमंत्री मोदी ने इस अवसर पर कहा कि भारत और जमैका के

संबंध साझा इतिहास, लोकतांत्रिक मूल्यों और लोगों के बीच संबंधों की मजबूती पर टिके हुए हैं। दोनों देशों को चार सी कल्चर (संस्कृति), क्रिकेट, कॉमनवेल्थ (राष्ट्रमंडल) और कैरिकॉम (कैरेबियन समुदाय) जोड़ता है। प्रधानमंत्री ने घोषणा की कि जमैका उच्चायोग के सामने सड़क का नाम जमैका मार्ग रखा जाएगा। उन्होंने कहा कि यह सड़क भावी पीढ़ियों के लिए हमारी गहरी मित्रता और हमारे सहयोग का मार्ग प्रशस्त करेगी। जमैका की विकास यात्रा में भारत को विश्वसनीय और प्रतिबद्ध विकास बताते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि डिजिटल सार्वजनिक ढांचा, लघु उद्योग, जैव ईंधन, नवाचार, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि जैसे क्षेत्र में जैसे क्षेत्रों में भारत अपना अनुभव जमैका के साथ साझा करने के लिए तैयार हैं। रक्षा के क्षेत्र में भारत द्वारा जमैका की सेना की ट्रेनिंग और क्षमता निर्माण पर दोनों देश आगे बढ़ेंगे। भारत और जमैका के बीच व्यापार और निवेश बढ़ रहा है। आईटीईसी और आईसीसीआर छात्रवृत्ति के माध्यम से भारत जमैका के लोगों के कौशल, विकास और क्षमता निर्माण में योगदान दिया है।

एजुकेशन/करियर

फ्री पढ़ाई का प्लेटफार्म है स्वयं प्रभा

स्वयम प्रभा का उद्घाटन 07 जुलाई, 2017 को हुआ था। स्वयम प्रभा डीटीएच चैनलों का एक समूह है, जो सप्ताह में 7 दिन, 24 घंटे गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण करने के लिए समर्पित है। यह जीसैट -15 उपग्रह का उपयोग कर संचालित होता है। स्वयम प्रभा कम से कम (4) घंटे के लिए दैनिक नई सामग्री होस्ट करती है। यह एक दिन में 5 बार दोहराया जाता है, जिससे छात्र अपनी सुविधा का समय चुन सकते हैं। चैनल बीआईएसएजी (भास्कराचार्य इंस्टीट्यूट ऑफ स्पेस एप्लिकेशन और भू-सूचना विज्ञान), गांधीनगर से अपलिंक किए गए हैं । एनपीटीईएल, आईआईटी, यूजीसी, सीईसी, इग्नू, एनसीईआरटी और एनआईओएस द्वारा सामग्री प्रदान की जाती है। इनफ्लिबनेट सेंटर वेब पोर्टल का रखरखाव करता है।

स्कूली शिक्षा के लिए

नमूना सामग्री

- दूरदर्शन की डीटीएच सेवा फ्री डिश के सब्सक्राइबर इन शैक्षिक चैनलों को उसी सेट टॉप बॉक्स और टीवी का उपयोग करके देख सकते हैं। किसी अतिरिक्त निवेश की आवश्यकता नहीं है।
- वेब पोर्टल swayamprabha.gov.in पर टेलीकास्ट किए गए वीडियो का एक संग्रह भी है, जिसे कभी भी ऑनलाइन एक्सेस किया जा सकता है। छात्र वेबसाइट पर वर्तमान और आगामी कार्यक्रमों की सूची और समय सारणी के बारे में जानकारी पा सकते हैं।
- इनफ्लिबनेट केन्द्र ने भी स्वयम प्रभा ऐप विकसित की है। छात्र इसे प्ले स्टोर से डाउनलोड कर सकते हैं। सभी वर्तमान और आगामी कार्यक्रमों की सूची और समय सारणी ऐप पर देखी जा सकती है।

कक्षा 1 से 10 तक : कक्षा 1 से 10 के लिए, स्वयम प्रभा डीटीएच टीवी चैनल पर प्रतिदिन 9.00 बजे से 11.00 बजे तक दो घंटे के टेलीकास्ट शेड्यूल रिकॉर्डेड और लाइव प्रोग्राम के साथ ही 04.00 से 06.00 के बीच दो घंटे पुनःप्रसारण की योजना बनाई गई है।

कक्षा 11 और 12 : कक्षा 11 और 12 के लिए स्वयम प्रभा डीटीएच टीवी चैनल पर प्रतिदिन 9.00 बजे से 12.00 बजे तक तीन घंटे का टेलीकास्ट शेड्यूल रिकॉर्डेड और लाइव प्रोग्राम)के साथ ही तीन घंटे 04.00 से 07.00 तक के पुनः प्रसारण की योजना हर दिन छह घंटे टेलीकास्ट करने की बनाई गई है।

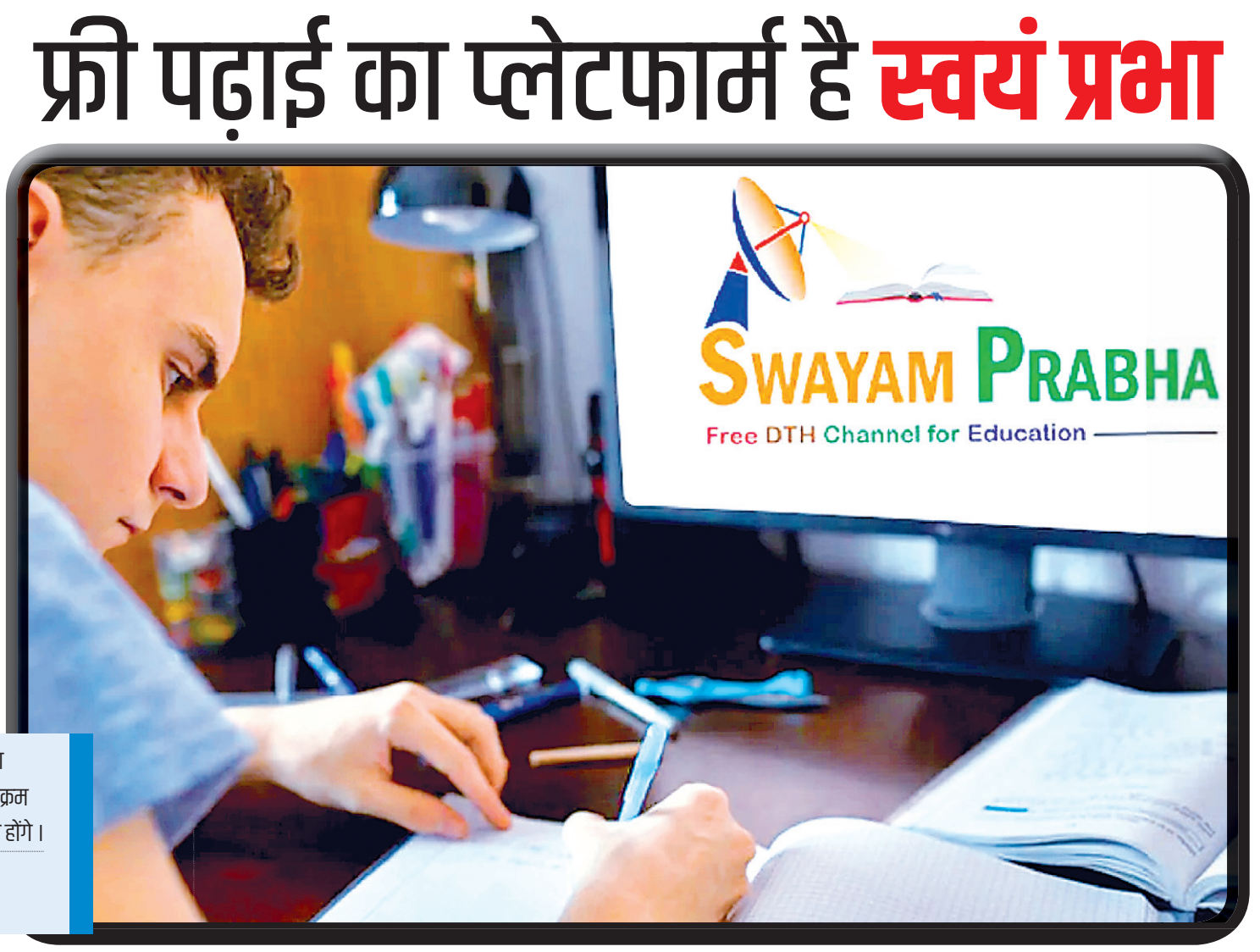

- यह प्रत्येक बच्चे को स्लॉट्स को सुविधाजनक रूप से चुनने और शैक्षिक कार्यक्रमों का सार्थक उपयोग करने और सीखने की सुविधा प्रदान करेगा। साप्ताहिक प्रसारण कार्यक्रम सीआईईटी-एनसीईआरटी वेबसाइट के साथ ही स्वयम प्रभा वेबसाइट पर भी उपलब्ध होंगे ।
- चैनल 22 भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित पर आईआईटी पाल व्याख्यान के लिए एकीकृत किया जाएगा।

12 डीटीएच टीवी चैनल शामिल हैं

1. स्वयं प्रभा — चैनल 23 - कक्षा-1
2. स्वयं प्रभा — चैनल 24 - कक्षा-2
3. स्वयं प्रभा — चैनल 25 - कक्षा-3
4. स्वयं प्रभा — चैनल 26 - कक्षा-4
5. स्वयं प्रभा — चैनल 27 - कक्षा-5
6. स्वयं प्रभा — चैनल 28 - कक्षा-6
7. स्वयं प्रभा — चैनल 29 - कक्षा-7
8. स्वयं प्रभा — चैनल 30 - कक्षा -8
9. स्वयं प्रभा — चैनल 31 - कक्षा-9
10. स्वयं प्रभा — चैनल 32 - कक्षा-10
11. स्वयं प्रभा — चैनल 33 - कक्षा-11